वर्ष 24, अंक 266, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

# अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज गुरूवार 3 अप्रैल 2025 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

# वक्फ बिल किसी की संपत्ति छीनने का कानून नहीं,-रिजिजू

## जहां नमाज पढ़ी जाती है, वहां कोई दखल नहीं

**नई दिल्ली**
किरेन रिजिजू ने कहा कि संप्रग सरकार ने वक्फ कानून में बदलावों के जरिये इसे अन्य कानूनों से ऊपर कर दिया था, इसलिए नये संशोधनों की आवश्यकता पड़ी। विपक्ष के शोरगुल के बीच रीजीजू ने साफ तौर पर कहा कि सरकार किसी भी धार्मिक संस्था में हस्तक्षेप नहीं करने जा रही। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने लोकसभा में वक्फ विधेयक को चर्चा और पारित कराने के लिए रखते हुए कहा कि सरकार, संसद की संयुक्त समिति को वक्फ विधेयक पर हितधारकों, विशेषज्ञों से कई ज्ञापन और सुझाव मिले। उन्होंने कहा कि इस संसद भवन पर भी वक्फ का दावा किया जा रहा था, संप्रग सरकार ने तो काफी संपत्ति गैर-अधिसूचित करके दिल्ली वक्फ बोर्ड को दे दी। रीजीजू ने लोकसभा में विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि आपने उन मुद्दों पर लोगों को गुमराह करने की कोशिश की जो वक्फ विधेयक का हिस्सा नहीं हैं।

धार्मिक संस्था में हस्तक्षेप नहीं

किरेन रिजिजू ने कहा कि संप्रग सरकार ने वक्फ कानून में बदलावों के जरिये इसे अन्य कानूनों से ऊपर कर दिया था, इसलिए नये संशोधनों की आवश्यकता पड़ी। विपक्ष के शोरगुल के बीच रीजीजू ने साफ तौर पर कहा कि सरकार किसी भी धार्मिक संस्था में हस्तक्षेप नहीं करने जा रही। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि जहां नमाज पढ़ी जाती है, वहां कोई दखल नहीं। अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि किसी की बात कोई बुरा-गुमा ना समझेगा। जमीन का दर्द कभी आसमान नहीं समझेगा। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद ही नहीं, बल्कि पूरा यकीन है कि जो लोग इस बिल का विरोध कर रहे हैं, उनके दिल में भी बदलाव आएगा। सभी लोग सकारात्मक सोच के साथ इस बिल का समर्थन करेंगे।

संसद भवन पर भी हो गया था दावा

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दिल्ली में 1970 से चल रहा एक मामला सीजीओ कॉम्प्लेक्स और संसद भवन सहित कई संपत्तियों से जुड़ा हुआ था। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने इन पर वक्फ संपत्ति होने का दावा किया था। मामला अदालत में था, लेकिन उस समय यूपीए सरकार ने 123 संपत्तियों को डीनोटिफाई करके वक्फ बोर्ड को सौंप दिया था। अगर हमने आज यह संशोधन नहीं किया होता, तो हम जिस संसद भवन में बैठे हैं, उस पर भी वक्फ संपत्ति होने का दावा किया जा सकता था। अगर पीएम मोदी सरकार सत्ता में नहीं आती, तो कई संपत्तियां डीनोटिफाई हो जातीं। यह धारा कैसे स्वीकार्य हो सकती है? उन्होंने कहा कि 2013 में, 2014 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले, कुछ ऐसे कदम उठाए गए जो आपके मन में सवाल खड़े करेंगे। 2013 में, सिखों, हिंदुओं, पारसियों और अन्य लोगों को वक्फ बनाने की अनुमति देने के लिए अधिनियम में बदलाव किया गया। सभी जानते हैं कि वक्फ मुसलमानों के लिए अल्लाह के नाम पर वक्फ बनाने के लिए है। यह बदलाव 2013 में कांग्रेस ने किया था। कांग्रेस ने बोर्ड को खास बनाया, शिया बोर्ड में सिर्फ.शिया। एक धारा जोड़ी गई कि वक्फ का प्रभाव हर दूसरे कानून पर हावी होगा। यह धारा कैसे स्वीकार्य हो सकती है? उन्होंने कहा कि वक्फ बोर्ड की भूमिका मुतवल्लियों और वक्फ मामलों को संभालने वालों द्वारा वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन की निगरानी करना है। यह पूरी तरह से शासन और पर्यवेक्षण के लिए एक प्रावधान है। वक्फ बोर्ड किसी भी तरह से वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन नहीं करता है।

## CAA, तीन तलाक, UCC और अब वक्फ बिल... मुस्लिम समाज से जुड़े वो फैसले जहां तीव्र विरोध के बावजूद अडिग रही मोदी सरकार

## अल्पसंख्यकों को अलग-थलग करने की कोशिश- गौरव गोगोई

**गोगोई** ने कहा कि आज उनकी (सरकार की) नजर एक समुदाय विशेष की जमीन पर है। कल उनकी नजर समाज के अन्य अल्पसंख्यकों की जमीन पर होगी। उन्होंने कहा कि वे (सरकार) भ्रम फैलाना चाहते हैं कि मौजूदा कानून महिलाओं के खिलाफ है, कि वर्तमान में महिलाओं को कोई भूमिका नहीं मिलती है। लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई ने वक्फ संशोधन विधेयक पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि क्या अल्पसंख्यक मंत्रालय ने ये बिल बनाया है, या किसी और विभाग ने बनाया है? ये बिल कहाँ से आया? आज देश में अल्पसंख्यकों की हालत ऐसी हो गई है कि आज सरकार को उनके धर्म का सर्टिफिकेट देना पड़ेगा। क्या वो दूसरे धर्मों से सर्टिफिकेट मांगेंगे कि आपने पाँच साल पूरे किए हैं या नहीं? इस बिल में ऐसा क्यों पूछा जा रहा है? सरकार धर्म के इस मामले में क्यों दखल दे रही है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि यह अल्पसंख्यकों को अलग-थलग करने की कोशिश है।

लगाया बड़ा आरोप

गोगोई ने कहा कि आज उनकी (सरकार की) नजर एक समुदाय विशेष की जमीन पर है। कल उनकी नजर समाज के अन्य अल्पसंख्यकों की जमीन पर होगी। उन्होंने कहा कि वे (सरकार) भ्रम फैलाना चाहते हैं कि मौजूदा कानून महिलाओं के खिलाफ है, कि वर्तमान में महिलाओं को कोई भूमिका नहीं मिलती है। विधवाओं की सुरक्षा हो या महिलाओं को अधिक सहायता देना हो, ये सभी प्रावधान कानून में पहले से ही हैं।

## 'योगी जी 30 की गिनती में उलझे हुए हैं, जैसे तीस मार खां हैं'- अखिलेश

**वक्फ** संशोधन विधेयक को लेकर लोकसभा में बुधवार (2 अप्रैल, 2025) को काफी गहमागहमी देखने को मिली. वक्फ बिल पर चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने बीजेपी और खासकर यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ पर जमकर हमला बोला.

लोकसभा में अखिलेश यादव ने वक्फ बिल को बीजेपी की एक और नाकामी बताया. वक्फ बिल पर चर्चा के दौरान प्रयागराज महाकुंभ को लेकर यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ पर तीखे हमले किए. अखिलेश यादव ने कहा, 'उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भी कहा कि महाकुंभ में कारोबार होगा. वो तीस की गिनती में ही उलझे हुए हैं जैसे तीस मार खां हों, जब उनसे पूछा गया कि प्रयागराज महाकुंभ में हुई भगदड़ में कितनी मौतें हुई तो वो बोले 30.

'कुंभ क्या हमारे लिए कारोबार की जगह है'

उन्होंने कहा, 'महाकुंभ में हुए कारोबार को लेकर जब सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि 30 गुना 10,000 करोड़. सोचिए कुंभ क्या हमारे लिए कारोबार की जगह है'. अखिलेश यादव ने आगे कहा, 'हमारे वाणिज्य मंत्री कह रहे हैं कि जमीन चाहे रेलवे की हो क्या डिफेंस की हो, वो भारत की जमीन है. मैं भी स्वीकार करता हूं कि ये जमीन भारत की ही है'. उन्होंने सवाल पूछते हुए कहा कि क्या डिफेंस की जमीन नहीं बेची जा रही है? अध्यक्ष महोदय, क्या रेलवे की जमीन नहीं बेची जा रही हैं?'

## मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड हो जाएगा खत्म?

### वक्फ बिल पेश होते ही मुसलमानों ने बताया क्या करेंगे देश का हाल

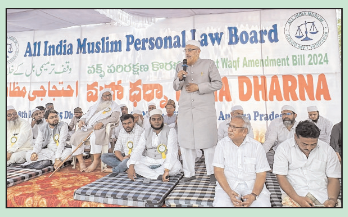


वक्फ और सरकार के बीच जो भी विवादित जमीन है चाहे वो राज्य की सरकार हो या केंद्र की मोदी सरकार वो संपत्ति छिन जाएगी। डर इस बात का है कि जिस तरह से सरकार तुष्टीकरण के लिए मुस्लिम सुधार से जुड़े कानूनों की होती अनदेखी से इतर अब नए लॉ बना रही है।

संसद जहां से देश को बहुत कुछ हासिल होता है। जहां कानून बनाए जाते हैं। लेकिन कुछ ग्रुप्स होते हैं जो सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश करते हैं। अपने जनप्रतिनिधि के माध्यम से संख्या के आधार पर कौन से कानून बनेंगे, किस कानून में संधोखन किए जाएंगे और कौन से कानून खत्म किए जाएंगे। लेकिन इन ग्रुप्स या धड़ों को अब समझ नहीं आ रहा है कि उनका टाइम अब चला गया है। इससे पहले जब कांग्रेस की सरकार रही तो वक्फ बोर्ड एक्ट, प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट जैसे कानूनों को लाया गया। यूसीसी को नहीं लाया जा सका क्योंकि मुस्लिम संगठनों का सरकार पर दबाव बना रहा। देश में ज्यादातर समय तक शासन करने वाली कांग्रेस इस दबाव को झेलती रही। इतिहास में शाह बानो प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट के फैसलो को पलटने जैसे कदम भी देखने को मिले हैं। तीन तलाक पर बैन लगाने के लिए इतने सालों से चर्चा होती रही। लेकिन कभी भी किसी भी राजनीतिक दल की इसमें सुधार की कोई कोशिश की ही नहीं गई। अब स्थितियां बदल चुकी है। लेकिन मुस्लिम संगठन इस बात को समझ नहीं पा रहे हैं। इस बार सबसे ज्यादा हाय-तौबा ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तरफ से किया जा रहा है। वक्फ बिल के आने से उन्हें डर सता रहा है। वक्फ और सरकार के बीच जो भी विवादित जमीन है चाहे वो राज्य की सरकार हो या केंद्र की मोदी सरकार वो संपत्ति छिन जाएगी। डर इस बात का है कि जिस तरह से सरकार तुष्टीकरण के लिए मुस्लिम सुधार से जुड़े कानूनों की होती अनदेखी से इतर अब नए लॉ बना रही है। वक्फ संशोधन विधेयक लोकसभा में पेश किया गया है। यूसीसी अलग अलग राज्यों में पारित कराया जा रहा है। फिर इसके संसद में आने की चर्चा भी तेज हो चली है। ऐसे में जब यूसीसी लागू हो जाएगा तो पर्सनल लॉ का क्या ही अर्थ रह जाएगा। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की जरूरत भला क्या रह जाएगी। सड़क पर इस वक्त सबसे ज्यादा प्रदर्शन करने वालों में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ही नजर आ रहा है।

आलम तो ये हो गया कि जिस वक्त लोकसभा में संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू वक्फ संशोधन बिल पेश कर रहे थे तो ठीक उसी वक्त ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड धमकी दे रहा था। किरेन रिजिजू ने कहा कि वक्फ बोर्ड के पास लाखों एकड़ की जमीन है। देश के गरीब मुसलमानों के लिए इसका इस्तेमाल क्यों न किया जा रहा है। किरेन रिजिजू ने बताया कि वक्फ बोर्ड आज देशभर में 8 लाख 70 हजार संपत्तियों को नियंत्रित करता है। इनकी अनुमानित कीमत 1 लाख 20 हजार करोड़ रुपए है। दुनिया में सबसे ज्यादा वक्फ संपत्ति भारत में है।

## राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बिगड़ी तबीयत, इलाज के लिए ले जाया जाएगा दिल्ली

**बिहार**
**सूत्रों** के अनुसार, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री को आगे की जांच और उपचार के लिए जल्द ही दिल्ली एम्स जाने की उम्मीद है। यादव पिछले दो दिनों से अस्वस्थ थे, लेकिन बुधवार सुबह उनकी हालत और गंभीर हो गई। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की तबीयत ब्लड शुगर बढ़ने के कारण बिगड़ गई है। जानकारी के अनुसार, यह समस्या उनके नियमित रूटीन चेक-अप के दौरान पता चली, जहां मेडिकल

रिपोर्ट में ब्लड शुगर के स्तर में चिंताजनक वृद्धि देखी गई। सूत्रों के अनुसार, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री को आगे की जांच और उपचार के लिए जल्द ही दिल्ली एम्स जाने की उम्मीद है। यादव पिछले दो दिनों से अस्वस्थ थे, लेकिन बुधवार सुबह उनकी हालत और गंभीर हो गई।

हुआ था किडनी ट्रांसप्लांट

उनका स्वास्थ्य उनके परिवार और समर्थकों के लिए चिंता का विषय रहा है, खासकर उनके लंबे मेडिकल इतिहास को देखते हुए। पिछले साल सितंबर में यादव ने मुंबई में एंजियोप्लास्टी करवाई थी, जो हृदय संबंधी समस्याओं को दूर करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इससे पहले, 2022 में सिंगापुर में उनका किडनी ट्रांसप्लांट हुआ था, जहां उनकी छोटी बेटी रोहिणी आचार्य ने उन्हें किडनी दान की थी।

## कपिल मिश्रा के खिलाफ दिल्ली विधानसभा में आप का प्रदर्शन

**नई दिल्ली**
**पूर्व** सीएम और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि भाजपा सरकार के मंत्री कपिल मिश्रा को पूरे देश ने दंगा भड़काते हुए देखा था। उनका भाषण टीवी कैमरों में कैद है। लेकिन भाजपा सरकार ने उन्हें कानून मंत्री बनाया है। कपिल मिश्रा को मंत्री रहने का कोई अधिकार नहीं है।

दिल्ली के मंत्री कपिल मिश्रा के इस्तीफे की मांग को लेकर दिल्ली विधानसभा में आम आदमी पार्टी ने विरोध प्रदर्शन किया। इसके साथ गी आप ने मांग की कि अब दिल्ली पुलिस कपिल मिश्रा को गिरफ़्तार करे। पूर्व सीएम और नेता प्रतिपक्ष

### उठाई इस्तीफे की मांग

आतिशी ने कहा कि भाजपा सरकार के मंत्री कपिल मिश्रा को पूरे देश ने दंगा भड़काते हुए देखा था। उनका भाषण टीवी कैमरों में कैद है। लेकिन भाजपा सरकार ने उन्हें कानून मंत्री बनाया है। कपिल मिश्रा को मंत्री रहने का कोई अधिकार नहीं है। आम आदमी पार्टी का विधायक दल इस मुद्दे को विधानसभा में उठाएगा।

जांच के आदेश

दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को दिल्ली पुलिस को 2020 के उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों में कथित संलिप्तता को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता कपिल मिश्रा के खिलाफ आगे की जांच करने का आदेश दिया। यह मामला यमुना विहार निवासी मोहम्मद इलियास द्वारा अगस्त 2024 में दायर एक याचिका से संबंधित है, जिसमें दयालपुर पुलिस स्टेशन के तत्कालीन स्टेशन हाउस ऑफिसर (एसएचओ) मिश्रा और तीन भाजपा नेताओं मुस्तफाबाद विधायक मोहन सिंह बिष्ट और पूर्व विधायक जगदीश प्रधान और सतपाल सांसद सहित पांच अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की गई थी।

मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने क्या कहा

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट वैभव चौरसिया ने फैसला सुनाते हुए कहा कि पहली घटना के संबंध में आगे की जांच शुरू की जाए क्योंकि शिकायतकर्ता ने संज्ञेय अपराध का खुलासा किया है। कपिल मिश्रा के खिलाफ हम आगे की जांच का निर्देश दे रहे हैं ।

## एनएचएआई ने देशभर में हाइवे और एक्सप्रेसवे के टोल में की बढ़ोतरी

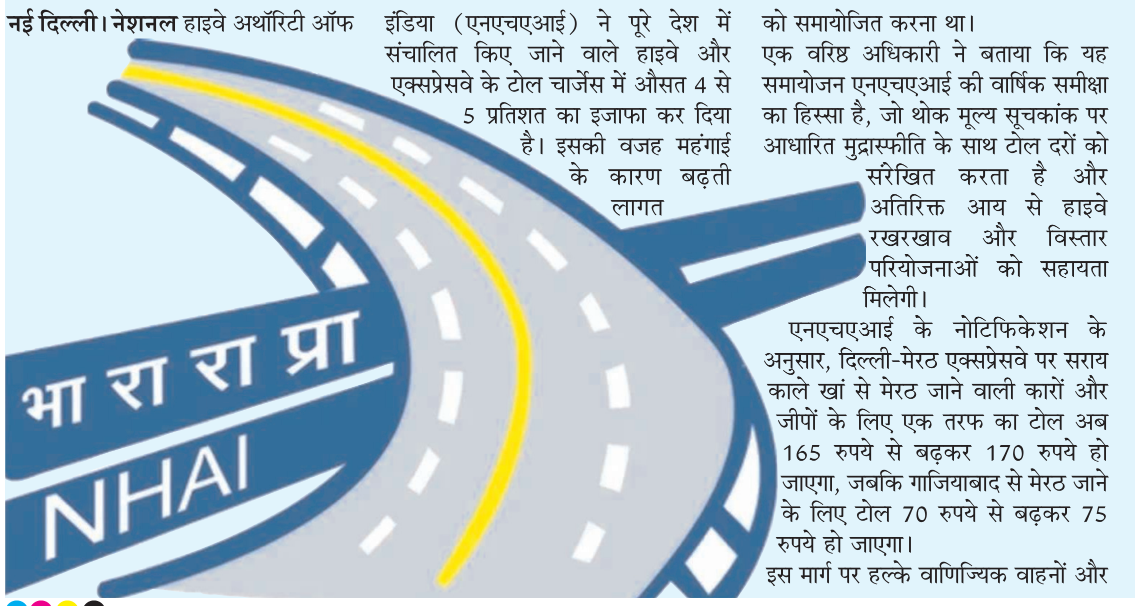


**नई दिल्ली। नेशनल** हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने पूरे देश में संचालित किए जाने वाले हाइवे और एक्सप्रेसवे के टोल चार्जेस में औसत 4 से 5 प्रतिशत का इजाफा कर दिया है। इसकी वजह महंगाई के कारण बढ़ती लागत को समायोजित करना था।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह समायोजन एनएचएआई की वार्षिक समीक्षा का हिस्सा है, जो थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति के साथ टोल दरों को संरेखित करता है और अतिरिक्त आय से हाइवे रखरखाव और विस्तार परियोजनाओं को सहायता मिलेगी।

एनएचएआई के नोटिफिकेशन के अनुसार, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर सराय काले खां से मेरठ जाने वाली कारों और जीपों के लिए एक तरफ का टोल अब 165 रुपये से बढ़कर 170 रुपये हो जाएगा, जबकि गाजियाबाद से मेरठ जाने के लिए टोल 70 रुपये से बढ़कर 75 रुपये हो जाएगा।

इस मार्ग पर हल्के वाणिज्यिक वाहनों और बसों को प्रति ट्रिप 275 रुपये देने होंगे, जबकि ट्रकों को 580 रुपये देने होंगे। एनएच-9 पर छिजारसी टोल प्लाजा पर कारों के लिए टोल 170 रुपये से बढ़कर 175 रुपये हो जाएगा, हल्के वाणिज्यिक वाहनों को 280 रुपये जबकि बसों और ट्रकों को 590 रुपये देने होंगे।

लखनऊ से होकर गुजरने वाले हाइवे पर यात्रा करने वाले मोटर चालकों को, जिनमें राज्य की राजधानी को कानपुर, अयोध्या, रायबरेली और बाराबंकी से जोड़ने वाले हाइवे भी शामिल हैं, हल्के वाहनों के लिए प्रति चक्कर 5 से 10 रुपये अतिरिक्त देने होंगे, जबकि भारी वाहनों को 20 से 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।

इसके अतिरिक्त, अब कारों के लिए मासिक पास की कीमत 930 रुपये से बढ़कर 950 रुपये हो जाएगी, जबकि कैब के लिए यह राशि 1225 रुपये से बढ़कर 1255 रुपये हो जाएगी। हल्के मोटर वाहनों और मिनी बसों के लिए एक तरफ का टोल 120 रुपये से बढ़कर 125 रुपये हो जाएगा।

दिल्ली-जयपुर हाईवे पर खेड़की दौला टोल प्लाजा पर निजी कारों और जीपों के लिए टोल वही रहेगा, लेकिन बड़े वाहनों पर प्रति ट्रिप 5 रुपये की बढ़ोतरी होगी। कारों के लिए मासिक पास की कीमत अब 930 रुपये से बढ़कर 950 रुपये हो जाएगी और वाणिज्यिक कारों और जीपों के लिए यह राशि 1225 रुपये से बढ़कर 1255 रुपये हो जाएगी। हल्के मोटर वाहनों और मिनी बसों के लिए सिंगल-ट्रिप टोल 120 रुपये से बढ़कर 125 रुपये हो जाएगा।

भारत के नेशनल हाइवे नेटवर्क पर लगभग 855 प्लाजा हैं, जिनमें से 675 सरकार के द्वारा फंडिंड हैं, जबकि लगभग 180 प्लाजा निजी ऑपरेटरों द्वारा मैनेज किए जाते हैं।

## देश धर्मशाला नहीं, तो जेल भी नहीं है : संजय राउत

**नई दिल्ली। राज्यसभा** में इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स बिल (आप्रवास और विदेशियों विषयक विधेयक)-2025 को गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने बुधवार को सदन के समक्ष विचार के लिए रखा। विधेयक पर बोलते हुए शिवसेना (यूबीटी) के संजय राउत ने कहा कि देश को धर्मशाला बनाना किसी का मकसद नहीं है, लेकिन अगर यह देश धर्मशाला नहीं है तो यह देश जेल भी नहीं है। बीते 10 साल से देश के लोगों को एक तरह से जेल में रखा गया है। अब जो विदेश से लोग आएंगे, वह भी वैध वीजा और पासपोर्ट पर, यह कानून उन्हें भी शायद जेल में रखना चाहता है।

संजय राउत ने कहा कि जिस तरह से इस विधेयक में बहुत से प्रावधान हैं, उससे धीरे-धीरे टूरिस्ट भी भारत में आना बंद करेंगे। हम नहीं चाहते कि कोई भी देश में अवैध तरीके से रहे, चाहे वह बांग्लादेशी हो, रोहिंग्या हो, या फिर अमेरिकन और यूरोपियन। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका में अवैध तरीके से रह रहे भारतीयों को सेना के विमान में हाथों-पैरों में बेड़िया लगाकर वापस भेजा।

# पीपीजीसीएल बारा पावर प्लांट के खिलाफ उठी आवाज

## बारा विधायक ने मूलभूत सुविधाओं की अनदेखी पर जताई नाराजगी

**अखंड भारत संदेश**

**शंकरगढ़।** शंकरगढ़ क्षेत्र में स्थित पीपीजीसीएल द्वारा गोद लिए गए गांवों में बुनियादी सुविधाओं की घोर अनदेखी पर सवाल उठने लगे हैं। विधायक बारा डॉ. वाचस्पति ने पीपीजीसीएल प्रबंधन को आड़े हाथों लेते हुए प्रशासन से इस मामले में तत्काल कार्रवाई की मांग की है। विधायक प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को उपजिलाधिकारी बारा से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा और पूछा कि आखिर क्यों पीपीजीसीएल के गोद लिए पांच ग्राम पंचायतों में कोई विकास कार्य नहीं किया गया। जबकि, सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) फंड के तहत इन गांवों के समुचित विकास की जिम्मेदारी कंपनी पर थी।

ग्रामीणों का कहना है कि गांवों में मूलभूत सुविधाओं का संकट कई वर्षों से व्याप्त है। पीपीजीसीएल से प्रभावित खान सेमरा, बेमरा, बंधवा, कपारी, जोरवट जैसी ग्राम पंचायतों में अभी तक पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, खेलकूद मैदान, आपदा राहत, नाली, वृक्षारोपण जैसी मूलभूत सुविधाएं भी मुहैया नहीं कराई गईं। विधायक ने इसे जनता के साथ अन्याय करार दिया और तत्काल सुधारात्मक कदम उठाने को कहा। साथ ही विधायक डॉ. वाचस्पति ने शंकरगढ़ नगर पंचायत में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था के लिए भी सीएसआर फंड से काम करवाने की सिफारिश की है। स्थानीय लोगों और जनप्रतिनिधियों का आरोप है कि पीपीजीसीएल ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लिया है और ग्रामीणों को उनके हाल पर छोड़ दिया है।

उपजिलाधिकारी बारा को ज्ञापन देते विधायक प्रतिनिधि

विधायक प्रतिनिधि विजय कुमार निषाद उर्फ श्यामू, विधायक मीडिया प्रभारी नीरज केसरवानी ने उपजिलाधिकारी बारा से मिलकर पत्र देते हुए कार्यवाई के लिए कहा। अब देखना होगा कि प्रशासन और कंपनी प्रबंधन इस गंभीर मामले पर क्या कदम उठाते हैं।

## युवती को अपने प्रेम जाल में फंसा कर युवक ने किया दुराचार मुकदमा दर्ज

**मऊआइमा।** मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम कहली निवासनीय एक 22 वर्षीय दलित लड़की का प्रतापगढ़ के थाना रानीगंज के ग्राम पूरे रामसहाय के युवक का पढाई के दौरान दोस्तों के माध्यम से सम्पर्क में आ गई। बताते हैं कि दलित युवती युवक से प्रेम प्रसंग करने लगी। आरोप है कि युवक युवती के साथ दुराचार किया। जिसपर युवती ने मऊआइमा थाने में आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। पुलिस ने आरोपी युवक शेर अली पुत्र शकील अहमद ग्राम पूरे राम सहाय निवासी को मऊआइमा के तेजपुर पेट्रोल पंप के पसा गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

## न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में कन्या पूजन संग नए सत्र का शुभारंभ

नवदुर्गा के प्रतीक रूप में कन्याएं

**शंकरगढ़।** न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल, सिंधी टोला में नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ विधि-विधान से किया गया। इस अवसर पर कन्या पूजन का आयोजन किया गया, जिसमें नवदुर्गा के प्रतीक रूप में कन्याओं का पूजन कर उन्हें आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी गईं। विद्यालय के प्रबंधक पीसी मिश्रा ने देवी स्वरूप कन्याओं का विधिपूर्वक पूजन किया और विद्यार्थियों को संस्कार व शिक्षा के महत्व से अवगत कराया। विद्यालय में प्रवेश करने वाले नए विद्यार्थियों का रोली-टीका लगाकर पारंपरिक ढंग से स्वागत किया गया। इस दौरान एक विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसमें बच्चों को नई ऊर्जा और सकारात्मकता के साथ शिक्षा की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई। विद्यालय में हर्षोल्लास का माहौल देखा गया, और बच्चों में नए सत्र को लेकर उत्साह दिखा। इस शुभ अवसर पर विद्यालय की वाइस प्रिंसिपल शीतल सिंह, इशिका पांडे, नीतू सिंह, सोनम सिंह, सुमन सिंह, संध्या सिंह, दीपिका, पिंकी, साक्षी सिंह, सबीना, रोशनी, रियांशी और शिक्षक सुशांत वर्मा, रवि सिंह, इंद्रजीत मिश्र, सत्येंद्र द्विवेदी, ओपी सिंह, अनुराग तिवारी, अनिल ओझा, जय केसरवानी सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

## बसपा नेता की सड़क हादसे में मौत, दी गई श्रद्धांजलि

**सहसों।** सड़क हादसे में बाइक सवार बसपा के वरिष्ठ नेता की मौत हो गई। घटना से घर में कोहराम मचा हुआ है।? पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।? खोदायपुर गांव निवासी बसपा के वरिष्ठ नेता वयोवृद्ध बाबा राम जतन पाल पुत्र बऊ 75 वर्ष अपने साथ गुलाब गौतम पुत्र स्वर्गीय राम नारायण के साथ बुधवार को सुबह 10:30 बजे बाइक पर सवार होकर किसी काम के लिए शहर जा रहे थे। हड़िया- कोखराज राष्ट्रीय राजमार्ग के सर्विस रोड पर बगई कला गांव के सामने पीछे से बोलेरो गाड़ी ने टक्कर मार दिया। मौके पर दोनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को एंबुलेंस से स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल में भर्ती करया गया। जहां पर इलाज के दौरान राम जतन पाल की मौत हो गई। बाबा राम जतन पाल बहुजन समाज पार्टी में कई वरिष्ठ पदों पर काम कर चुके हैं। गुलाब गौतम का इलाज अभी चल रहा है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया है। उनके निधन पर बसपा के मंडल कोऑर्डिनेटर डॉ जगन्नाथ पाल, अशोक पाल, शिवधारी पाल, सुरेश पाल आदि लोगों ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित किया है।

## कैंब्रिज हाई स्कूल एंड इंटर कॉलेज में 'ऋयसा' पत्रिका के 9वें संस्करण का भव्य विमोचन

**अखंड भारत संदेश**

**शंकरगढ़।** नगर के सिंधीटोला स्थित कैंब्रिज हाई स्कूल एंड इंटर कॉलेज में बुधवार को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ऋयसा पत्रिका के 9वें संस्करण का भव्य विमोचन हुआ। इस अवसर के मुख्य अतिथि हाईकोर्ट के पूर्व अपर अधिवक्ता एवं भाजपा के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी ने पत्रिका का अनावरण किया। मुख्य अतिथि नीरज त्रिपाठी ने कहा कि ऋयसा विद्या और संस्कारों का प्रतीक है। विद्यालय द्वारा प्रकाशित ऋयसा' पत्रिका का नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के प्रथम अक्षरों से लिया गया है। यह पत्रिका विद्यार्थियों को दी जा रही उच्च स्तरीय शिक्षा और संस्कारों को दशार्ती है। कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि ने विद्यालय के शिक्षकों की सराहना करते हुए कहा,इस संस्थान में विद्यार्थियों को जो शिक्षा और संस्कार दिए जा रहे हैं, वे भविष्य में निश्चित रूप से आईएएस और पीसीएस अधिकारी बनकर देश की सेवा करेंगे।विद्यालय की कक्षा 10 की छात्रा अंशिका द्विवेदी ने उत्तर प्रदेश में 9वीं

पत्रिका का विमोचन करते हुए

रैंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि के लिए सभी अतिथियों ने उसे बधाई दी और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती, अश्विनी सिंह पटेल आदि ने विद्यालय की शिक्षण पद्धति और विद्यार्थियों की उत्कृष्ट शैक्षिक प्रगति की भरपूर प्रशंसा की। विद्यालय के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी ने इस मौके पर सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा,इस विद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शिक्षा से वंचित छात्रों को एक बेहतर प्लेटफार्म प्रदान करना था। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष अखिलेश सिंह पटेल, शम्भूनाथ खरे, मसुरियादीन वर्मा, घनश्याम पांडेय, करुणापति त्रिपाठी, रोहित केसरवानी, कुलदीप सिंह, सुजीत केसरवानी, सोमनाथ वर्मा, उमा वर्मा, उग्रसेन द्विवेदी, शिव सेवक द्विवेदी, रत्नाकर त्रिपाठी, अरविंद केसरवानी, दीपक केसरवानी, पंकज गुप्ता, शक्तिमान त्रिपाठी, मुन्ना मिश्रा, रामजतन बंसल शिक्षकों में बालेंद्र पांडे, मणि शंकर दुबे, सौरभ प्रकाश, धर्मराज कुशवाहा, पंकज मिश्रा, मनोज तिवारी, पंकज श्रीवास्तव, सुधीर नारंग, राजेश गोस्वामी, अखिलेश पांडे, दीपक केसरवानी, इमरान अहमद, अनुभव पांडे, रितु, सिम्मी गुप्ता, रेखा सिंह, मीरा श्रीवास्तव, रीना गोस्वामी, पूनम द्विवेदी, मधु सोमवती, उषा, प्रीति, वंदना, स्मिता, निहारिका,अंजू गुप्ता उपस्थित रहे।

## तकनीकी शिक्षा छात्रों में भविष्य को बेहतर बनाने में मदद करती है : आशीष चट्टोपाध्याय

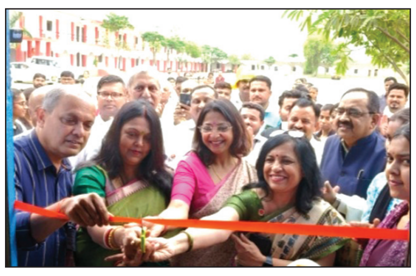

`कोंकि

**अखंड भारत संदेश**

**करछना।** क्षेत्र के बीएमजी इंटर कॉलेज बघेडा. में मेजा ऊर्जा निगम के निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत भारतीय महिला ग्रामोद्योग संस्थान प्रयागराज की ओर से कंप्यूटर प्रशिक्षण का शुभारंभ बुधवार से हुआ । जिसका उद्घाटन मेजा ऊर्जा निगम के सीईओ आशीष कुमार चट्टोपाध्याय, अपराजिता महिला समाज की अध्यक्षा कृष्णा चट्टोपाध्याय व भारतीय महिला ग्रामोद्योग संस्थान प्रयागराज के प्रबंधक एनपी सिंह की ओर से फीता काट कर संयुक्त रूप से किया गया। भारतीय महिला ग्रामोद्योग संस्थान प्रयागराज के प्रबंधक एनपी सिंह ने बताया कि क्षेत्र के गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं के लिए निःशुल्क में कंप्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। और प्रत्येक बैच तीन माह का होगा। जिसमें छात्राओं को कंप्यूटर की बुनियादी एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जाएगी। जिससे तकनीकी रूप से सशक्त होकर अपने भविष्य को बेहतर बना सकेंगी। कार्यक्रम का शुभारंभ छात्राओं की ओर से सरस्वती वंदना के सहित स्वागत गान से हुआ। इस मौके पर मेजा ऊर्जा निगम के जीएम प्रोजेक्ट चंद्रशेखर, जीएमओ एस एम नरेंद्र नाथ सिन्हा, सीएमओ डॉ मनीषा पांडेय, हेड एचआर विवेक चंद्र, डीजीएम एच आर मनोज कुमार वर्मा, सी एस आर एच आर जितेंद्र कस्वला, कॉलेज के व्यवस्थापक धर्मेंद्र सिंह, सत्य प्रकाश शुक्ल, रणविजय सिंह, शिशिन सिंह, सुरेंद्र सिंह, अंकित राय सहित आदि लोग मौजूद रहे।

## ताला तोड़ विद्यालय का सारा सामान उठा ले गए चोर

**सहसों।** थरवई थाना क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालय सिंगरामऊ में मंगलवार की रात अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर अंदर रखा हुआ सारा सामान उठा ले गए। सुबह विद्यालय की प्रधानाध्यापिका गीता मिश्रा व अन्य शिक्षिकाएं पहुंची तो सामान गायब देखकर भौचक रह गई। अंदर लगा हुआ पंखा, बच्चों के खाना बनाने का बर्तन, साउंड स्पीकर, माइक, गेहूं, चावल, दाल व कई अभिलेख गायब मिले। मौके पर 112 नंबर पीआरबी पुलिस सूचना पर पहुंची और जांच पड़ताल कर वापस चली गई। घटना की लिखित तहरीर प्रधानाध्यापिका द्वारा थरवई पुलिस को दिया गया है। बता दें कि इसके तीन दिन पहले प्राथमिक विद्यालय बेलवा व एक दिन पहले जगबबंधनपुर गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय में भी चोरी हो चुकी है। जिससे शिक्षकों एवं ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। शिक्षकों का आरोप है कि चोरी की घटना पर पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं किए जाने से उनका मनोबल बढ़ा हुआ है। वह लगातार स्कूलों को अपना निशाना बना रहे हैं।

## बिना कागजात के नही चलेगें सड़को पर ई-रिक्शा : एसीपी

बिना कागजात पकड़े गये ई-रिक्शा

**मऊआइमा।** पुलिस आयुक्त के निर्देशन में एडिशनल डीसीपी के आदेश पर बुधवार को मऊआइमा क्षेत्र में चल रहे अवैध बिना कागजातों के चालिस ई रिक्शा को एसीपी फूलपुर पंकज लवनिया और इंस्पेक्टर मऊआइमा वीरेंद्र कुमार मिश्रा तथा कस्बा चौकी प्रभारी अनुराग शर्मा ने दबोच कर थाने में खडी करा ली है। एसीपी फूलपुर पंकज लवनिया ने बताया कि नाबालिग, अपराधी प्रवृत्ति के लोग बिना कागजात, रजिस्ट्रेशन के ई रिक्शा चला रहे हैं। ऐसे में दुर्घटना होने पर इनका के पास कोई नम्बर न होने पर क्लेम भी नहीं मिलता है। एसीपी ने बताया अउ कि सभी ई रिक्शों का सत्यापन किया जाएगा। जिनके पास कागज नम्बर और अपराधी प्रवृत्ति का नहीं होगा।सारे कागजात नम्बर सही होने पर ही चलेगें। लोगों का कहना है कि ई रिक्शा के चलते नगर पंचायत क्षेत्र में जाम लगता है। ई रिक्शा जहां मर्जी होता खडी कर देते हैं बीच सड़क पर सवारियों को बैठाते और उतारते हैं। जिस की वजह से आने जाने वाले लोगो को जाम का झाम झेलना पड़ता है।

## विधायक बारा के अथक प्रयास से बारा क्षेत्र की 80 सड़कें व 4 पुलिया मंजूर

**जसरा।** बारा के विधायक डॉ० वाचस्पति के अथक प्रयास से लोक निर्माण विभाग द्वारा 80 सड़क व तीन पुलिया और एक ह्यूम पाइप पुलिया स्वीकृत हुई है। डॉ० वाचस्पति ने बताया कि क्षेत्र में जनता दरबार का आयोजन लगातार किया जा रहा है। उसी में जो भी पत्र आते हैं, उन्हें शासन को दिया गया और बीते महीने हमने इन मुद्दों को विधान सभा में उठाया था। जिसे मुख्यमंत्री जी ने संज्ञान में लिया और कार्य की मंजूरी दी गई। बताते चलें कि विधानसभा बारा के विधायक डॉ० वाचस्पति ने पूर्व में लोक निर्माण विभाग के मंत्री रहे जितिन प्रसाद को और अभी हाल ही में उन्होंने विधान सभा में सदन के माध्यम से मुख्यमंत्री को अवगत कराया था। जिसके फल स्वरूप मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संज्ञान

में लिया और चार पुलिया सहित 81 सड़कों की स्वीकृति प्रदान की गई। विधायक प्रतिनिधि बखरा विजय कुमार उर्फ श्यामू निषाद और मीडिया प्रभारी नीरज केसरवानी ने संयुक्त रूप से बताया कि लालापुर क्षेत्र के इमलिया, कंजासा, भीटा मार्ग की पुलिया, गौहानी बारा मार्ग, कुल्हाड़ियां बरेठिया मार्ग, जिगना राम का पूरा मार्ग, बारी बजाहिया गौहनिया, खान सेमरा बंधवा मार्ग जैसे कई प्रमुख सड़कों की स्वीकृति मिली है।

## कोरांव तहसील में पांच को आयेंगे सांसद इलाहाबाद और विधान परिषद सदस्य

**कोरांव।** तहसील कोरांव के सम्पन्न हुए बार के चुनाव में निर्वाचित अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों के पांच अप्रैल को शपथ समारोह में इलाहाबाद संसद कुंवर उज्जवल रमन सिंह मुख्य अतिथि तथा एमएलसी डॉ मानसिंह यादव विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। और शपथ समारोह को शपथ दिलाने के बाद संबोधित भी करेंगे। उक्त जानकारी निर्वाचित अध्यक्ष राज बहादुर सिंह पटेल एडवोकेट ने दी है। और बार एसोसिएशन कोरांव के निर्वाचन अधिकारी ने लोगों को शामिल होने की अपील अधिवक्ता बंधुओं एवं आम जनों से की है।

## श्रीमद् भागवत कथा में कृष्ण जन्मोत्सव पर खूब बाजी बधाइयां, लोगों की ओर से की गई पुष्प वर्षा

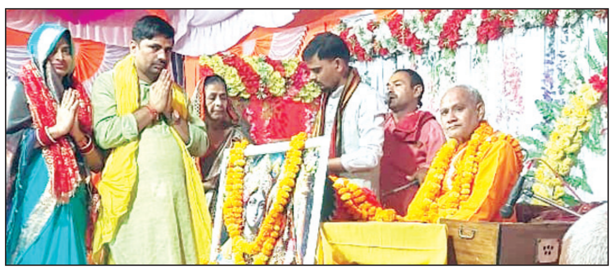

**करछना।** श्रीमद् भागवत कथा में हुए बाल कृष्ण जन्मोत्सव के अवसर पर भागवत मंडप में खूब बधाइयां बजी ।जिसमें लोगों की ओर से पुष्प वर्षा भी की गई। और लोग खुशी के जश्न में मंत्रमुग्ध रह कर नृत्य भी करते रहे। मथुरा में जन्मे कन्हाई ,ब्रज में बाजे बधाई, नंद के घर आनंद भयो, हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की,भए प्रकट कृपाला दीन दयाला सहित आदि छंदों की खूब सुमधुर प्रस्तुतियां हुई। क्षेत्र के डीहा गांव में चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा में बुधवार के दिन कृष्ण जन्मोत्सव की कथा व्यास पीठ पर विराजमान कथावाचक पं लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की ओर से कही गई। कलाकारों की ओर से बालकृष्ण भगवान की जन्मोत्सव की सुंदर व आकर्षक झांकी भी निकाली गई। इस अवसर पर महिलाओं की ओर से सुमांगलिक सोहर गीतों की प्रस्तुतियां भी हुई। मुख्य श्रोता यजमान सुनैना मिश्रा ने भागवत भगवान की आरती की। वही बाल कृष्ण भगवान सहित आचार्य पं सत्य प्रकाश पांडेय ,पं मनीष तिवारी, पं सुधांशु का माल्यार्पण भी किया गया। आयोजक अमित मिश्र व संयोजक सुमित मिश्र की ओर से कथा श्रवण के लिए आए सभी भक्त लोगों के प्रति आभार जताया गया। इस मौके पर त्रिवेणी प्रसाद पांडेय, राजेश मिश्र, विजय प्रताप सिंह, ध्रुव नारायण मिश्र, अनंत बहादुर शर्मा, रमाकांत पांडेय, श्याम शंकर तिवारी, कृष्ण प्रकाश तिवारी, संजय मिश्र, माता अम्बर मिश्र, तीर्थराज मिश्र, मिथिलेश कुमार मिश्र, राहुल मिश्र, हर्षित, श्वेत कमल शुक्ल, कृष्ण कुमार, नवल प्रकाश तिवारी, उपेंद्र तिवारी, उमेश, अखिलेश शुक्ल सहित आदि भक्त लोग मौजूद रहे।

# न्यूज झरोखा

## भव्य होली मिलन समारोह आयोजित

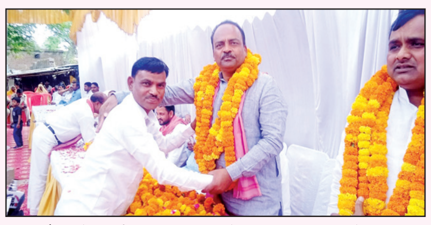

**उतरांव।** सैदाबाद ब्लाक अनर्गत देवनीपुर गांव चौराहे पर बुधवार को भव्य होली मिलन समारोह आयोजित की गयी। होली मिलन समारोह में मुख्य अतिथि लोकसभा भदोही के पूर्व सांसद डॉ. रमेश चन्द बिन्द रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप समाजवाद पार्टी के हंडिया विधायक हकीमलाल बिन्द रहे। होली मिलन कार्यक्रम में बिरहा जगत के कलाकर राजेश लहरी और प्रियंका माधुरी रहे।दोनों बिरहा कलाकर स्वागत गीत और होली गीत गाकर उपस्थित सभी लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। होली मिलन कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओ द्वारा मुख्य अतिथि पूर्व सांसद रमेश चन्द बिन्द और विशिष्ट अतिथि का माला पहनाकर जमकर स्वागत किया।मुख्य अतिथि ने कहा होली मिलन समारोह भाईचारे और प्रेम सौहार्द का त्यौहार है। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। आगे कहा होली ऐतिहासिक धरोहर है। नफरत फैलाने वालों की इसमें कोई जगह नहीं है। उमंग और उत्साह के साथ होली मनाना चाहिए।वही विशिष्ट अतिथि विधायक हंडिया हकीमलाल सम्बोधन में कहा की सभी गणमान्य परिवारजनों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई रंगो का उत्सव आप सभी के जीवन में खुशियाँ लाये। इस मौके पर पूर्व प्रधान चन्द्र भूषण बिन्द,दिलीप कुमार, अशोक कुमार,लालबहादुर यादव, गंगाराम बिन्द, बंशीलाल, छोटेलाल,भोलानाथ आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम आयोजक सुभाष चन्द बिन्द ग्राम प्रधान सुजौला आये हुए सभी लोगो आभार जताया।

## देवी मंदिर एवं पूजा पंडालों में लग रही है भक्तों की भारी भीड़, लग रहे मां के जयकारे

**सहसों।** नव संवत्सर के वासंतिक नवरात्रि में क्षेत्र के देवी मंदिरों एवं पूजा पंडालों में भक्त नर नारियों की भारी भीड़ लग रही है और पूरा क्षेत्र माता के जयकारों से गुंजायमान हो रहा है। दुर्गा पूजा पंडाल सहसों में बजरंगदल दुर्गा पूजा कमेटी द्वारा बाजार वासी भक्त नर नारियों ने आचार्य पंडित विमल कुमार शुक्ल के वैदिक मंत्रोच्चारण से माता की विविध रूपों सहित अन्य आवाहित देवी देवताओं की विधि विधान पूर्वक श्रद्धा भाव से पूजन अर्चन एवं भजन कीर्तन तथा आरती उतार कर मां जगदंबा का जयकारा करते हुए आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। इस बीच पूजा पंडाल में कथा वाचिका श्रेया मिश्रा के अमृतमयी वाणी से श्रद्धालु भक्तों ने माता रानी के व्याख्यान एवं महत्व का वर्णन सुनकर आनंदित हो रहे हैं। इसी प्रकार राम जानकी मंदिर सहसों के प्रांगण में मंगलवार को सायंकाल प्रदीप सिग्नेचर सलोन इंस्टिट्यूट सहसों चौराहा के द्वारा माता रानी के अद्भुत रूपों की सुंदर सुसज्जित एवं आकर्षित झांकी दिखाई गई। इंस्टिट्यूट के सुंदर कलाकारों द्वारा प्रदर्शित की गई सुंदर झांकी को देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। इस मौके पर इंस्टिट्यूट के मैनेजर प्रदीप जायसवाल, प्रज्ञा श्रीवास्तव, विष्णु नेपाली, पुजारी राजधर पांडे, रामबाबू पुष्कर, रमेश कुमार पाल, साधु यादव, राजू यादव एवं राजेश मौर्य सहित भारी संख्या में लोग झांकी की प्रशंसा करते मौजूद रहे।

## एक्सीडेंट में घायल की इलाज के दौरान मौत - चालक पुलिस गिरफ्त में

**मृतक की बेटी की मई माह में बारात आने वाली थी, पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल**

**करछना।** प्रयागराज थाना क्षेत्र के घोरहट का निवासी शेषमणि निषाद को मंगलवार देर शाम गांव का ही रहने वाला अप्पे चालक नशें में गाड़ी चलाते समय शेषमणि को उनके घर के सामने अप्पे गाड़ी से कुचल दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया परिजनों ने आनन-फानन में उसे एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया था जहा पर वुधवार को उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया घटना के बाद मृतक की पत्नी अनारकली ने अप्पे चालक राजकुमार के खिलाफ मामला करछना थाने में दर्ज कराई, मृतक शेषमणि निषाद के पांच बेटियां हैं और एक बेटा है जिनकी अभी अपने बच्चों की शादी भी नहीं किया है मृतक की पत्नी अनारकली ने बताया कि सबसे बड़ी बेटी की शादी तय हो गई थी मई में बारात आने वाली थी को लेकर घर में बेटी की शादी की तैयारी चल रही थी अब कैसे बेटी की शादी होगी की बात सुन कर लोंग सांत्वना देकर ढांढस बंधाया, वहीं गांव के प्रधान लालबहादुर ने मृतक की पत्नी को ढांढस बंधाते हुए हर संभव मदद करने का भरोसा दिलाया।

## पीडीए के चौपाल में भाजपा पर निशाना

**उतरांव।** क्षेत्र के देवनीपुर स्थित एक इंटर कॉलेज में बुधवार कोपी डी ए की चौपाल आयोजित की गई। इस चौपाल के मुख्य अतिथि सपा के डॉ मानसिंह एमएलसी, विधायक रहे। इस मौके पर सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यकों की भाजपा हितैषी नहीं है। इस मौके पर पूर्व ब्लॉक प्रमुख हंडिया डॉक्टर सुरेश मौर्य ने कहा भाजपा हमारे और आपके बीच तोड़फोड़ करके सत्ता हासिल कर लेती है। इसलिए एक जुटता जरूरी है। इस मौके पर डॉक्टर मौर्य ने चौपाल में आई महिलाओं को शाल देकर सम्मानित किया। संचालन सपा नेता रमाकांत विश्वकर्मा ने किया। इस दौरान सपा के गंगा पार जिला अध्यक्ष अनिल यादव, प्रशांत सिंह, रामरती बिंद, सरिता बिंद , मोहम्मद अहमद अंसारी आदि लोगों ने भी अपने विचारों को व्यक्त किया। फोटो और न्यूज। फोटो पहचान। देवनीपुर में चौपाल में मौजूद ग्रामीण एवं सपा कार्यकर्ता।

## वक्फ संशोधन विधेयक को मद्देनजर मऊआइमा कस्बा में किया गया फ्लैग मार्च

**मऊआइमा।** वक्फ संशोधन विधेयक बिल को लेकर मऊआइमा कस्बा में एडिशनल डीसीपी गंगानगर पुष्कर वर्मा एसीपी फूलपुर पंकज लवनिया, इंस्पेक्टर मऊआइमा वीरेंद्र कुमार मिश्रा तथा पीएसी और मऊआइमा पुलिसकर्मी को लेकर फ्लैट मार्च किया।बता दें कि वक्फ संशोधन विधेयक बुधवार को लोकसभा में पेश किया जा रहा है। जिसका आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड,सपा, कांग्रेस आदि ने इस बिल का मुस्लिम विरोधी बता रहे हैं।बता दें कि कतिपय लोगों ने ईद पर काली पट्टी बांध कर इस विधेयक का विरोध जताया था। मऊआइमा नगर पंचायत मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र होने पर किसी अनहोनी के मद्देनजर पुलिस ने फ्लैग मार्च किया है।ताकि कोई घटना होने से आसानी से निपटा जा सके। औ? फ्लैग मार्च कर पू कस्बे में भ्रमण किया गया।

# करेली में झुग्गी-झोपड़ी में लगी आग

अखंड भारत संदेश

**प्रयागराज।** करेली इलाके में माफिया अतीक अहमद के गुर्गे की तरफ से बसायी कॉलोनी के पास स्थिति झुग्गी-झोपड़ी में मंगलवार की रात अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग फैलने लगी। आग का विकराल रूप देखकर मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। लोग आग पर काबू करने का प्रयास करते रहे, लेकिन किसी को सफलता नहीं मिली। लोगों ने दमकल को आग की सूचना दी। मौके पर पहुंची दमकल की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद किसी प्रकार आग पर काबू पाया। जिसके बाद लोगों ने राहत की सांस ली।

## दो घंटे की मशक्कत के बाद आग पर पाया काबू

करेली के झोपड़ पट्टी में लगी आग को काबू करने में दमकल के कर्मचारियों को करीब दो घंटे तक कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। उसके बाद किसी तरह आग पर काबू पाया जा सका। हालांकि इतनी देर में पांच झोपड़ियां जलकर समाप्त हो चुकी थी। स्थानीय लोग भी राहत और बचाव कार्य में जुट गए। वहीं आग के कारणों को लेकर दमकल कर्मियों का कहना है कि झोपड़पट्?टी में रहने वालों ने कटियामारी करके रखी थी। इसके कारण ही अचानक शार्टसर्किट हुआ। जिससे चिंगारी निकली और झोपड़ी में आग लग गई। आग की वजह से झारखंड और फिरोजाबाद के रहने वाले कई परिवारों का लाखों का नुकसान हो गया और पूरी गृहस्थी जलकर खाक हो गई।

## अतीक का करीबी था मैक टाउन बसाने वाला अब्बास

माफिया अतीक अहमद के करीबी रहे अब्बास ने करेली में मैक टाउन के नाम से कालोनी बसायी थी। मंगलवार की रात कालोनी के पास नाले के समीप बसी झोपड़ पट्टी में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आग को देखकर मौके पर अफरा तफरी मच गई। झोपड़ी में रहने वाले लोग भी अपना सामान समेटने में जुट गए। उधर आग को बढ़ता देख स्थानीय लोग उसे बुझाने में लग गए। उसके बाद भी लोग आग पर काबू नहीं कर सके। आखिरकार लोगों ने फायर डिपार्टमेंट को घटना की सूचना दी। सूचना मिलते ही दमकल के लोग15 मिनट में मौके पर पहुंच गए।

# हाईकोर्ट ने कहा : महिला का शरीर उसका मंदिर समझौते से नहीं हिला सकते उसकी नींव

अखंड भारत संदेश

**प्रयागराज।** इलाहाबाद हाईकोर्ट का कहना है कि महिला का शरीर उसका मंदिर है और पवित्रता उसकी नींव। इसे किसी भी कीमत पर हिलाया नहीं जा सकता। दुष्कर्म जैसे अपराध जीवन की गरिमामयी सांसों को दबा देते हैं। इस टिप्पणी के साथ कोर्ट ने धर्मांतरण और दुष्कर्म के आरोपी की समझौते के आधार पर मुकदमा रद्द करने की मांग खारिज कर दी। यह याचिका रामपुर के स्वार थाना क्षेत्र निवासी तौफीक ने दाखिल की थी, जिसे न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान की अदालत ने कई तल्ख टिप्पणियों के साथ खारिज किया है। तौफीक पर आरोप है कि उसके जीजा मोहम्मद अयान ने फेसबुक पर राहुल के नाम से आईडी बनाई और युवती को प्रेमजाल में फंसाया। दुष्कर्म किया और फिर धर्मांतरण का प्रस्ताव नहीं मानने पर मारपीट की। इसमें तौफीक भी बराबर का सहयोगी था। पीड़ित युवती ने सात जून 2021 को राहुल उर्फ मोहम्मद अयान, उसके साले तौफीक अहमद व मोहम्मद रियाज के खिलाफ दुष्कर्म व जबरन धर्मांतरण कराने की एफआईआर दर्ज कराई थी। आरोप लगाया था कि फेसबुक पर राहुल नाम के युवक से चैटिंग शुरू हुई। करीब सालभर बाद शादी के लिए राजी होने पर उसे नवाबनगर, रामपुर ले गया। वहां छह महीने रहने पर पता चला कि राहुल का असली नाम अयान है। यह जानकर पीड़िता ने शादी से इंकार किया तो अयान ने अपने साले तौफीक व रियाज संग मिलकर उसे पीटा। दुष्कर्म किया। चंगुल से भागी पीड़िता ने मुकदमा दर्ज करवाया। फेसबुक के जरिये दूसरी लड़कियों को फंसाने और जबरन धर्म परिवर्तन कराने का आरोप भी लगाया।पुलिस ने मई 2021 में आरोप पत्र दाखिल किया, जिसके खिलाफ तौफिक ने हाईकोर्ट का रुख किया। कोर्ट ने समझौते की दलील को सिरे से खारिज कर दिया। कहा, हाईकोर्ट को समझौते के आधार पर मुकदमा रद्द करने का अधिकार है, लेकिन दुष्कर्म जैसे मामलों में समझौते की बात कल्पना से परे है। मौजूदा मामले में धर्म परिवर्तन आस्था के लिए नहीं, बल्कि विवाह का आधार बनाने या उससे बचने के उद्देश्य से किया गया था। इसे सद्भावनापूर्ण नहीं माना जा सकता। गैरकानूनी धर्मांतरण भी गंभीर अपराध है।

### याची ने कहा-हो गया है समझौता, मर्जी से बदला धर्म

याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि दोनों पक्षकारों के बीच 2023 में समझौता हो गया है। वह मर्जी से धर्म परिवर्तन कर अयान संग रह रही थी। लिहाजा, ट्रायल कोर्ट में चल रही आपराधिक कार्यवाही रद्द की जानी चाहिए।

### सरकार बोली-दुष्कर्म व धर्मांतरण समाज के खिलाफ

राज्य सरकार की ओर से अपर शासकीय अधिवक्ता प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि दुष्कर्म व धर्मांतरण समाज के खिलाफ अपराध है। समझौता केवल निजी प्रकृति के मामलों में ही पोषणीय है।

# मजदूरों ने दिया धरना, परगनाधिकारी बारा ने 24 घण्टे के अंदर मजदूरी भुगतान करने का दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

**बारा।** चार माह से मजदूरी न मिलने से आक्रोशित मजदूरों ने बार क्षेत्र के पीपीजीसीएल गेट पर बुधवार को धरना दिया। सूचना पर एसडीएम बारा मौके पर पहुंचे और शाम को एसडीएम बारा के आश्वासन पर मजदूरों ने धरना समाप्त कर दिया।

प्रयागराज पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड बारा से संबद्ध बाला जी ग्रूप कंपनी में विभिन्न विभागों में ठेके पर काम करता है। बाला जी ग्रूप के संचालक ठेकेदार द्वारा पैंतीस मजदूरों को दिसंबर माह से मजदूरी नहीं दी गई है। मजदूरों का आरोप है कि ठेकेदार मजदूरी देने में आनाकानी कर रहा है।बार बार कहने के बाद भी मजदूरी नहीं दी गई है। चार माह से मजदूरी न मिलने से उनके सामने रोटी की समस्या आ गई है। बुधवार को मजदूरों का धैर्य समाप्त हो गया। आक्रोशित मजदूरों ने कंपनी का गेट बंद कर धरना शुरू कर दिया और संबंधित ठेकेदार के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। इसकी जानकारी एसडीएम बारा को हुई। एसडीएम बारा संदीप तिवारी मौके पर पहुंचे और मजदूरों को मजदूरी दिलाने का आश्वासन दिया। एसडीएम बारा के आश्वासन पर मजदूरों ने धरना समाप्त कर दिया। इस संबंध में एसडीएम बारा ने बताया कि मजदूरों की मांग जायज है।आज गुरुवार सुबह दस बजे तक का समय संबंधित विभाग के ठेकेदार को दिया गया है। यदि निश्चित समय सीमा पर ठेकेदार ने मजदूरी का भुगतान नहीं किया तो प्राथिमिकी दर्ज कराई जाएगी और विधि पूर्वक मजदूरों की मजदूरी का भुगतान होगा।

# कठौली के गेट नंबर 26 सी पर फुट एवं फ्लाई ओवरब्रिज निर्माण के हेतु सर्वे प्रकिया हुई शुरू कार्य शुरू

अखंड भारत संदेश

**मेजा।** कठौली स्थित रेलवे क्रासिंग 26 सी पर आरओबी/ आरयूबी फुट ओवरब्रिज बनाए जाने हेतु प्रयागराज के सांसद कुंवर उज्जवल रमण सिंह द्वारा रेलमंत्री को लिखे गए पत्र पर अविलंब कार्य शुरू कराने हेतु बुधवार को रेल विभाग,पी डब्लू डी विभाग तथा ब्रिज कार्पोरेशन विभाग के अधिकारियों के साथ एसडीएम मेजा और तहसीलदार मेजा की संयुक्त टीम पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बंद पड़े कठौली रेलवे क्रासिंग पर पहुंचे और गेट नंबर 26 सी पर अंडर पास एवं फुट ओवरब्रिज निर्माण के लिए उपयुक्त भूमि चयनित करते हुए निरीक्षण किया। इस दौरान बड़ी संख्या में गांव के ग्रामीणों का जमावड़ा लगा रहा।

उल्लेखनीय है कि कठौली गांव के पूर्व प्रधान हरिशंकर शर्मा के नाम से संदर्भित पत्र में दर्शित किया गया है कि कठौली एवं समहन गांव के लगभग बीस हजार ग्रामीणों के अलावा दस अन्य गांव सभा के ग्रामीणों एवं पढ़ने वाले छात्र छात्राओं के आवागमन हेतु मात्र एक ही रास्ता रेलवे क्रासिंग का है जो इन दिनों पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। ऐसे में लोग रेलवे लाइन पार कर आते जाते हैं जिससे अब तक कई लोग रेल दुर्घटना का शिकार हो गए हैं। उक्त क्रासिंग पर फ्लाई ओवर अथवा फुट ओवरब्रिज बनाए जाने की मांग गांव के ग्रामीणों द्वारा की गई थी। जिसके मद्देनजर सांसद उज्जवल रमण सिंह ने रेलमंत्री को पत्र लिखकर फुट ओवरब्रिज बनाने की मांग किया था। बता दे कि सांसद प्रयागराज की मांग पर रेलमंत्री द्वारा संबंधित विभाग को निर्देशित भी किया गया था किंतु कार्य शुरू न होने पर सांसद उज्जवल रमण सिंह ने पुनः रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को इस आशय से पत्र लिखा है कि पूर्व के आदेश के बाद भी अभी तक संबंधित अधिकारियों द्वारा कार्य शुरू नहीं किया गया है जिससे आवागमन में स्कूली बच्चों तथा ग्रामीणों को काफी परेशानी हो रही है। आवागमन के लिहाज से सांसद ने अविलंब कार्य शुरू किए जाने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करने का अनुरोध किया था जिसके क्रम में सभी विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीम उक्त क्रासिंग पर पहुंच कर आवागमन के लिए फुट ओवरब्रिज एवं फ्लाई ओवर के निर्माण के बाबत निरीक्षण करते हुए भूमि चयनित करने की सर्वे प्रकिया की शुरूआत किया। इस संबंध में टीम के हिस्सा रहे एसडीएम मेजा दशरथ कुमार से वार्ता की गई तो उन्होंने ने बताया कि कठौली रेलवे क्रासिंग के समीप आवागमन हेतु फुट ओवरब्रिज अथवा फ्लाई ओवरब्रिज की प्रकिया प्रॉसेस में है भूमि की सर्वे की जा रही है शीघ्र ही रिपोर्ट भेजी जाएगी। इस मौके पर ब्रिज कार्पोरेशन के अधिकारी रोहित मिश्रा सुशील वर्मा,पी डब्लू डी से अरशद खान,रेलवे विभाग के अधिकारी तथा तहसीलदार मेजा आकांक्षा पांडेय के अलावा बड़ी संख्या में गांव के लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

# डिजिटल साक्षरता से ग्रामीण बालिकाओं को मिलेगा रोजगार बनेंगी आत्मनिर्भर : अशेष चट्टोपाध्याय

- मेजा ऊर्जा निगम द्वारा भारतीय महिला ग्रामोद्योग संस्थान में कंप्यूटर लैब का उद्घाटन एवं प्रथम बैच का हुआ शुभारंभ

**मेजा।** मेजा ऊर्जा निगम प्रा लिमिटेड ने अपने नैगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) कार्यक्रम के तहत कौशल विकास और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय महिला ग्रामोद्योग संस्थान, बघेड़ा, प्रयागराज में एक कंप्यूटर लैब की स्थापना किया है। जिसका बुधवार को मेजा ऊर्जा निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी,अशेष कुमार चट्टोपाध्याय एवं अपराजिता महिला समाज की अध्यक्षा, श्रीमती कृष्णा चट्टोपाध्याय द्वारा उद्घाटन एवं प्रशिक्षण के प्रथम बैच का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आसपास की 200 ग्रामीण बालिकाओं और महिलाओं को निःशुल्क बुनियादी कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर मेजा ऊर्जा निगम के वरिष्ठ अधिकारी, चंद्रशेखर महाप्रबंधक (प्रोजेक्ट), नरेंद्र नाथ सिन्हा, महाप्रबंधक (ओ एंड एम), डॉ. मनीषा पांडे, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, विवेक चंद्रा, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन), मनोज कुमार वर्मा, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं एन. पी. सिंह, अध्यक्ष (बीएमजीएस) उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि मेजा ऊर्जा निगम द्वारा इस कंप्यूटर लैब की स्थापना हेतु 50 कंप्यूटर, 50 कुर्सियाँ और टेबल, 2 व्हाइट बोर्ड, 2 प्रिंटर, पाठ्य सामग्री प्रदान किए गए हैं साथ ही साथ एक वर्ष के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत एक वर्ष में कुल 4 बैच संचालित किए जाएंगे, जिसमें प्रत्येक बैच में 50 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रकार, मेजा तथा करछना क्षेत्र की कुल 200 बालिकाओं एवं महिलाओं को निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इस मौके पर कॉलेज के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, कर्मचारी, छात्राएं, उनके अभिभावक, स्थानीय गणमान्य व्यक्ति एवं मेजा ऊर्जा निगम के अधिकारीगण प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अशेष चट्टोपाध्याय ने कहा कि निगम के इस पहल से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं और बालिकाओं को डिजिटल साक्षरता एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकेंगी और नए रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगी।

# अमृतकाल में बूंद-बूंद अमृत को तरसता रस्तीपुर तिवरान गाँव...

**जंघई।** समाजसेवी एवं शिक्षक सौरभ तिवारी के अनुसार मेरे गांव रस्तीपुर तिवरान में लगभग 25 में परिवार 300 लोग निवास करते हैं जिसे हम बड़े गर्व से ₹तिउरान₹ कहते हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो इस क्षेत्र को रस्तीपुर का पार्लियामेंट कहा जाता है। लेकिन एक और दृष्टिकोण है जिस पर नजर डालनी चाहिए और वो है ₹विकासात्मक दृष्टिकोण₹। अमृतकाल के दौर में यहां के विकास की एक झलक आपको दिखाने की कोशिश कर रहा हूं। इस क्षेत्र को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली एक मात्र सड़क है जिस पर एक चार पहिया वाहन के साथ कोई पैदल भी नहीं चल सकता। इस सड़क पर गाड़ी चलाते समय हनुमान चालीसा का पाठ अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्योंकि आप कब तक सड़क पर रहेंगे ये केवल हनुमान जी ही जानते हैं। यहां बारिश में जब भी कोई बीमार होता है तो उस व्यक्ति को पक्की सड़क तक उठाकर लाना पड़ता है क्योंकि बाहर से एंबुलेंस गाड़ी लेकर आने वाला व्यक्ति अंदर जाने से मना कर देता है। चार महीने बारिश के मौसम में यहां के लोग समंदर से घिरे हुए किसी टापू पर होने का आनंद लेते हैं। क्योंकि ना कोई बाहर निकल सकता है और ना ही कोई अंदर आ सकता है। आपको ये बातें हास्यास्पद लग सकती हैं लेकिन यही सत्य है। यहां के लोग पपीहा की तरह स्वाति नक्षत्र का इंतजार वर्षों से कर रहे हैं कि कब वो दिन आएगा जब यहां भी कोई एक बूंद अमृत बरसाएगा और उनकी प्यास बुझेगी।

## न्यूज झरोखा

### करंट की चपेट में आने से मजदूर की मौत, कोहराम

**झूंसी।** थाना क्षेत्र के अंदावा में एक बिल्डिंग में कौशांबी से काम करने आये मजदूर की करंट लगने से मौत हो गई मजदूर की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है बताया जाता है कि उसकी पत्नी पेट से है। कौशांबी के संदीपन घाट हुसैन मई गांव निवासी सुरेंद्र कुमार 23 पुत्र राम सेवक मजदूरी करता था, झूंसी में सुरेंद्र अपने साला के साथ कमरा किराये पर लेकर रहता था। दोनों अन्दावा स्थित एक निमार्णाधीन बिल्डिंग में कई दिनों से काम कर रहे थे। बुधवार की दोपहर काम के दौरान सुरेंद्र बिल्डिंग में बिजली के खुले तार की चपेट में आ गया। जब तक उस पर लोगों की नजर पड़ी वह बेसुध हो गया था मकान मालिक आनन फानन में उसे लेकर एसआरएन अस्पताल ले कर पहुचा जहां डॉक्टरों में सुरेंद्र को मृत घोषित कर दिया मामले की सूचना पर रोते बिलखते परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। परिजनों ने बताया कि सुरेद्र की पत्नी आरती गर्भवती है शादी के 3 साल हो गए हैं पर बच्चे नही हो रहे थे। पत्नी के गर्भवती होने से पूरे परिवार में खुशियां थी जो अब मातम में बदल गई।

### नैनी जिला जेल में डिप्टी जेलर की ढ़ोल नगाड़े के साथ भव्य विदाई

38 साल की सेवा के बाद के एस दिवाकर की हुई विदाई

**नैनी।** नैनी 38 साल की सेवा के बाद के डिप्टी जेलर की विदाई पर जिला जेल में एक भावुक पल देखने को मिला। डिप्टी जेलर के एस दिवाकर की सेवानिवृत्ति पर भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। वरिष्ठ जेल अधीक्षक अमिता दुबे और जेलर एसपी सिंह ने फूल मालाओं से उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में ढोल-नगाड़ों की थाप पर खुशी का माहौल बना। इस अवसर पर मिठाइयां भी बांटी गईं। के एस दिवाकर ने 11 नवंबर 1987 से कारागार विभाग में अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने 38 वर्षों तक पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपना कर्तव्य निभाया। जिला कारागार प्रयागराज में उन्होंने 5 जुलाई 2023 से विशेष योगदान दिया। वरिष्ठ जेल अधीक्षक अमिता दुबे ने कहा कि जिला जेल नैनी में सभी जेलर, डिप्टी जेलर और अन्य कर्मचारी एक परिवार की तरह हैं। उन्होंने दिवाकर के योगदान को सराहनीय बताया।

### सब्जी मंडी मिजार्पुर हाईवे पर बिहोश होकर गिरी युवती भीड़ वीडियो बनाने में जुटी रही

सोसल वर्कर ने पुलिस की मदद से पहुंचाया अस्पताल

**नैनी।** नैनी सब्जी मंडी के समीप मिजार्पुर मार्ग पर मंगलवार को रात में बिहोश होकर गिरी 17 वर्ष की लड़की। लोगों की जुटी रही भीड़। एक पत्रकार ने नैनी कस्बा चौकी इंचार्ज विपिन कुमार वर्मा को फोन करके बताया चौकी इंचार्ज ने महिला सिपाही को भेज कर तुरंत मदद के लिए महिला सिपाही के साथ पत्रकार ने मंथन अस्पताल में दाखिल करवाने के लिए ले गए जहां अस्पताल का पूरा खर्च उठाने के बाद भी अस्पताल के डॉक्टर ने मरीज को भर्ती करने से मना कर दिया। वहां से मरीज को जहांगीर अस्पताल लाया गया तो वही रवैया वहां के भी कर्मचारियों ने अपनाया। जिसके तुरंत बाद 108 पर सूचना देकर एंबुलेंस की मदद से लड़की को महिला सिपाही के साथ एसआरएन अस्पताल भिजवाया गया। पचदेवरा करछना के रहने वाली लड़की के परिवार वाले सूचना के बाद आधी रात को आए अस्पताल में बुधवार को दोपहर में अपने साथ अपने घर लेते गए। वहीं स्थानीय लोगों ने अस्पताल संचालकों के इस रवैए पर सवाल खड़े किए।

### शांति विद्या निकेतन रस्तीपुर के बच्चों ने निकाली स्कूल चलो यात्रा

**जंघई।** स्कूल चलो अभियान के तहत शांति विद्या निकेतन रस्तीपुर, खखैचा विद्यालय के छात्र, छात्राओं ने बुधवार को शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए रैली निकाली। छात्र-छात्राएं 'सब पढ़े सब बढ़े' का संदेश लिखे बैनर लेकर चले, उन्होंने 'आधी रोटी खाएंगे-स्कूल पढ़ने जाएंगे' और 'मम्मी पापा हमें पढ़ाओ-स्कूल चलकर नाम लिखाओ' जैसे प्रेरक नारे लगाए। रैली में विद्यालय के प्रधानाचार्य विजय नाथ तिवारी और शिक्षक दिनेश कुमार, मानिक चंद आदि लोग शामिल रहे। यह अभियान नए शैक्षणिक सत्र 2025-26 की शुरुआत के मौके पर आयोजित किया गया। रैली के दौरान बच्चों ने पूरे गांव का भ्रमण किया और अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने अभिभावकों से 6 से 14 वर्ष के बच्चों का स्कूल में नामांकन कराने की अपील की उन्होंने कहा कि शिक्षा एक अनमोल धरोहर है उनके अनुसार शिक्षा ही भारत को विश्व में अग्रणी स्थान दिला सकती है। शिक्षा से ही गांव, शहर और राष्ट्र का विकास संभव है विद्यालय परिवार ने सरकार की नीतियों के अनुरूप बच्चों को बेहतर शिक्षा देने का संकल्प लिया है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक बच्चों को शिक्षा से जोड़ना है। सभी बच्चों के जलपान का प्रबंध विद्यालय के पूर्व छात्र बायफ लखनऊ में कार्यरत लालचंद पाल ने किया था, कार्यक्रम में हाजरा और साक्षी का विशेष सहयोग रहा।

# मेजा ऊर्जा निगम भविष्य में बड़ी सफलता की ओर होगी अग्रसर : अशेष चट्टोपाध्याय

- 17वें स्थापना दिवस पर निगम में आयोजित हुआ भव्य उत्सव कार्यक्रम में अवध म्यूजिकल ग्रुप लखनऊ के कलाकारों ने अपनी मधुर गायकी से बिखेरा जलवा दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

अखंड भारत संदेश

**मेजा।** बुधवार को मेजा ऊर्जा निगम ने अपने 17वें स्थापना दिवस के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इस महत्वपूर्ण दिन की शुरूआत अशेष कुमार चट्टोपाध्याय, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मेजा ऊर्जा निगम के प्रेरक और उत्साहवर्धक संबोधन से हुई, जिसके बाद उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ केक काटकर सभी कर्मचारियों को बधाई दी। अपने संबोधन में श्री चट्टोपाध्याय ने मेजा ऊर्जा निगम की अब तक की यात्रा की सराहना करते हुए भविष्य में और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए सभी को प्रेरित किया। उन्होंने इस दिशा में कर्मचारियों के निरंतर प्रयासों की सराहना की। इसके साथ ही श्री चट्टोपाध्याय ने सुरक्षा, पर्यावरण, सुरक्षित कार्यस्थल और फ्लू गैस डिसल्फराइजेशन संचालन जैसी प्रमुख बातों पर भी जोर दिया। निगम स्थापना दिवस पर एक सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक मौके को और भी खास बनाते हुए अवध म्यूजिकल ग्रुप लखनऊ के कलाकारों गुंजन राय, अकांक्षा, कीर्ति मिश्रा, प्रदीप सक्सेना के मधुर गीतों द्वारा शमा बांध कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस मौके पर एनएन सिन्हा, महाप्रबंधक (संचालन एवं अनुरक्षण), अनिल बवेजा, महाप्रबंधक (इंजीनियरिंग), चंद्र शेखर, महाप्रबंधक (परियोजना निर्माण), अमित रौतेला मुख्य वित्तीय अधिकारी, विवेक चंद्र, विभागाध्यक्ष (मानव संसाधन), श्रीमती मनीषा पांडे (मुख्य चिकित्सा अधिकारी), कार्यपालक संघ के प्रतिनिधि, कर्मचारी यूनियन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष तथा कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी कर्मचारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

# हीटवेव से बचाव के लिये विभाग कार्ययोजना का शत-प्रतिशत अनुपालन करें : डीएम

अखंड भारत संदेश

बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते जिलाधिकारी

**प्रतापगढ़।** जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने कैम्प कार्यालय के सभागार में जनपद में लू-प्रकोप (हीटवेव) से उत्पन्न समस्याओं तथा समाधान, राहत व बचाव के लिये अधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने समस्त विभागों से हीटवेव से बचाव की कार्ययोजना के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की और स्वास्थ्य विभाग को निर्देशित किया गया मरीजों के लिये अस्पतालां में हीटवेव के दृष्टिगत कोल्ड रूम स्थापित किया जाये, हीटवेव से सम्बन्धित समस्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर दवाओं की उपलब्धता रहे। सभी अस्पतालों में ओआरएस और तरल पदार्थ के पर्याप्त स्टाक एवं शुद्ध पेयजल की उपलब्धता तथा इसके अतिरिक्त हीटवेव से सम्बन्धित अन्य व्यवस्थाओं पर कार्यवाही की जाये। पंचायती राजध्ग्राम्य विकास विभाग को निर्देशित किया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थलों, चैराहो व ग्रामों में पानी की टंकीध्टैंकरों आदि की व्यवस्था, समस्त ग्राम पंचायतों के पंचायत सचिवध्पंचायत सहायको को लू प्रकोप से बचाव एवं राहत हेतु क्या करें-क्या न करें का व्यापक प्रचार प्रसार कर ग्रामवासियों को प्रशिक्षित किया जाये, विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों व स्थलों पर जहां पर लोगों का ठहराव होता है उसका चिन्हांकन कर प्याउ की व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये। पशुपालन विभाग को निर्देश दिये गये कि मवेशियों के लिये पानी पीने की उचित व्यवस्था, पशुओं हेतु आश्रय स्थलोंध्समुचित वेटनरी मेडिसिन एवं पीने हेतु पेयजल की समुचित व्यवस्था रहे। गर्मी के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिये गौपालों को सक्रिय किया जाये। नगरीय निकायों द्वारा शहरों, कस्बो में हीटवेव से ज्यादा प्रभावित क्षेत्रों को चिन्हित कर पेयजल की व्यवस्था, सड़कों पर आवश्यकतानुसार पानी का छिड़काव, मन्दिरों एवं धार्मिक स्थलों पर शुद्ध पेयजल की उपलब्धता रहे, खुले पार्को में छाया की समुचित व्यवस्था, पेड़-पौधों पर पानी का छिड़काव आवश्यकतानुसार किया जाये। नगरीय क्षेत्रों, सब्जी मण्डी, चैराहों, सार्वजनिक स्थलों पर शीतल जल की व्यवस्था रहेगी। विद्युत विभाग को निर्देशित किया गया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति रोस्टर के अनुसार दी जाये, यदि कहीं पर विद्युत सम्बन्धी कोई फाल्ट होता है तो ससमय ठीक कराया जाये जिससे लोगों को गर्मी से बचाया जा सके। विद्युत तारों की जांच कर उसे ठीक करा लें जिससे विद्युत से होने वाली घटनाओं से बचा जा सके। शिक्षा विभाग द्वारा गर्मी को ध्यान में रखते हुये समयावधि में परिवर्तन किया जाये, शैक्षणिक संस्थानों में शुद्ध पेयजल की समुचित व्यवस्था की जाये। परिवहन विभाग द्वारा समस्त बस स्टैण्डों पर पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी ठंडा रहे और छाया की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। वन विभाग द्वारा लोक स्थानों पर हरियाली सुनिश्चित कराने, वन अग्नि से बचाव हेतु निरन्तर पर्यवेक्षण व जंगली जानवरों एवं पक्षियों द्वारा शुद्ध पेयजल की समुचित व्यवस्था करायी जाये। अग्निशमन विभाग द्वारा लू के दृष्टिगत मुख्यालय एवं तहसीलों में स्थापित उप केन्द्रों को आवश्यक संसाधनों सहित 24 घंटे क्रियाशील रखा जाये तथा अग्नि से बचाव हेतु नागरिकों को जागरूक करें। हीटवेव और अत्यधिक गर्मी के दृष्टिगत अग्निकांड की घटना न होने पाये इसके लिये पूर्व तैयारी हेतु समस्त चिकित्सालयों, स्कूलो और सरकारी विभाग व बड़े काम्प्लेक्स का फायर आडिट का कार्य पूर्ण कर लिया जाये। जिलाधिकारी ने अन्त में सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि कार्ययोजना के अनुसार जो भी कार्य एवं दायित्व विभागों को सौपे गये है उसका शत प्रतिशत अनुपालन करें, लापरवाही कदापि न बरते। जनपद में हीटवेव से बचाव के लिये विभागों द्वारा पोस्टर, बैनर, पम्पलेट्स आदि के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाये। सभी कार्यालयों में ठंडे पानी पीने के लिये आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करा लें। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, उपजिलाधिकारी सदर शैलेन्द्र कुमार वर्मा, परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव, जिला आपदा विशेषज्ञ अनुपम शेखर तिवारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित लोग

## कानून में निर्बल व कमजोर व्यक्तियों के लिए स्थायी निषेधाज्ञा अमोघ अस्त्र : प्रदीप चित्रांशी

**● अधिवक्ता परिषद द्वारा आयोजित हुआ स्वध्याय मंडल कार्यक्रम**

**प्रतापगढ़।** अधिवक्ता परिषद अवध प्रतापगढ़ ईकाई द्वारा स्थायी निषेधाज्ञा विषय पर स्वाध्याय मण्डल का कार्यक्रम अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद की राष्ट्रीय परिषद की सदस्य किरण बाला सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद सिविल के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रदीप चित्रांसी ने स्थायी निषेधाज्ञा पर विस्तृत रूप विभिन्न तकनीकी बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सिविल वाद के प्रकार में स्थायी निषेधाज्ञा का वाद एक महत्वपूर्ण प्रकार है। हमारे देश में स्थायी निषेधाज्ञा का वाद बहुल्यता से कमजोर एवं निर्बल व्यक्ति अपनी सम्पत्ति व भूमि को अतिचारी तथा ताकतवर व्यक्तियों से सुरक्षित करने हेतु संस्थित करते हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई शक्तिशाली व्यक्ति अवैध ढंग से किसी व्यक्ति के भूमि व सम्पत्ति को अपनी शक्ति के आधार पर कब्जा करने का प्रयास करता है तो वैध स्वत्व धारी को कानून में स्थायी निषेधाज्ञा का वाद दायर करने का उपचार प्राप्त है। स्थायी निषेधाज्ञा उसी व्यक्ति के पक्ष में माननीय अदालत डिक्री करती जो माननीय न्यायालय में साक्ष्यों के उपरांत वाद ग्रस्त भूमि अथवा सम्पत्ति का वैध स्वत्वधारी व वैध कब्जाधारी पाया जाता है। स्वाध्याय मण्डल कार्यक्रम का संचालन परिषद के महामंत्री शिवेश कुमार शुक्ल एडवोकेट ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राजीव कुमार पांडेय,ममता सरोज, सुनील यादव, वासिनी विश्वकर्मा, सुनील, रवि द्विवेदी, विजय ओझा, शिवम तिवारी, अशोक श्रीवास्तव, भानु प्रकाश त्रिपाठी, अरविंद कुमार श्रीवास्तव, आशीष सहित आदि अधिवक्तागण मौजूद रहे। अंत में परिषद के महामंत्री शिवेश कुमार शुक्ल ने सभी के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

## न्यूज झरोखा

### कर्तव्य निभाएं, गृहस्थी में डूबकर प्रभु को न भुलाएं : आचार्य शांडिल्य

**प्रतापगढ़।** प्रभु के सिवा कहीं दिल न लगाना, नहीं तो पड़ेगा तुम्हें आंसू बहाना...। इस तरह के भजनों के माध्यम से भी आचार्य सुभाष शांडिल्य ने श्रद्धालुओं को प्रभु के नाम का महत्व समझाया। सांगीपुर क्षेत्र के जूही शुकुलपुर में चल रही श्रीमद्भागवत कथा में बुधवार को उन्होंने कहा कि ऋषि कर्दम जैसे महाज्ञानी जब गृहस्थी के चक्कर में फंस गए तो हम तो मामूली मानव हैं। उन्होनें कहा कि हमें इस गृहस्थी में डूब नहीं जाना चाहिए। अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें, लेकिन प्रभु को भी याद करते रहें। आचार्य सुभाष ने कहा कि हमारे वैदिक और यज्ञ परंपरा समृद्ध है। इसे छोड़ना नहीं चाहिए। कथा के माध्यम से उन्होंने बताया कि अपने सनातन संस्कृति और अपने गांव देश की स्वस्थ परंपराओं को भी समृद्ध करना हमारी जिम्मेदारी है। आचार्य जी ने कहा कि इसलिए भगवान का भजन करते हुए उनके सहारे रहना चाहिए। मुख्य आयोजक सतीशचंद्र शुक्ल फौजी और सुरेश कुमारी ने सभी का स्वागत किया। कथा में श्रद्धालुओं के जयघोष व सुमधुर भजनों से वातावरण हरेकृष्ण हरे राधा से गूंज उठा दिखा। इस मौके पर अखिलेश मिश्र, पवन प्रखर, डॉ. अमिताभ शुक्ल, अरविंद मिश्र, कैलाशपति मिश्र, डॉ. प्रशान्त शुक्ल, अजीत मिश्र, रामबोध शुक्ल, गौतम मिश्र आदि रहे।

### शॉर्ट सर्किट से गेहूं की फसल में लगी आग

**पट्टी।** शॉर्ट सर्किट होने के चलते गेहूं की खड़ी फसल में आग लग गई। आग की चपेट में आने से करीब पांच विश्वा खड़ी फसल जलकर राख हो गई। कोतवाली क्षेत्र के रामपुर खागल गांव के रहने वाले बिंदेश्वरी प्रसाद पाण्डेय के खेत के ऊपर से हाई टेंशन बिजली का तार गुजरा हुआ है। बुधवार को सुबह तार में हुई शॉर्ट सर्किट से निकली चिंगारी से गेहूं की खड़ी फसल में आग लग गई। हल्ला-गुहार पर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत से आग पर काबू पाया। जबतक आग पर काबू पाया गया तब तक करीब पांच विश्वा खड़ी गेंहू की फसल जलकर राख हो गई। सूचना पर पहुंचे हल्का लेखपाल आनंद बिंद ने क्षति का आकलन कर रिपोर्ट भेज दी है।

### ट्रक जीप की टक्कर में चालक घायल

**बेलखरनाथ धाम।** ट्रक और जीप की टक्कर में जीप चालक घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया।कधंई थाना क्षेत्र के भैसौनी गांव निवासी इंद्रपाल यादव (52) जीप लेकर पट्टी की तरफ जा रहा था। जैसे ही वीरमऊ पुलिस बूथ के समीप पहुंचा कि सामने से आ रही ट्रक ने टक्कर मार दी। जिसमें जीप चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया वहीं चालक मौके से भाग निकला।घायल जीप चालक का प्राइवेट चिकित्सक से इलाज कराने के बाद घर चला गया। घटना बुधवार तीन बजे की है।

### मारपीट कीघटनाओं में पुलिस ने दर्ज किया

**पट्टी।** पूर्व में हुई मार-पीट के दो अलग-अलग मामले में पट्टी पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। कोतवाली क्षेत्र के पहाड़ मुरार पट्टी गांव निवासी साहेब लाल ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि 18 मार्च की सुबह विपक्षी पुरानी रंजिश को लेकर लाठी डंडा धारदार हथियार लेकर घर में घुस गये और उसे व उसकी मां शांति देवी मार-पीट कर घायल कर दिया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी मिठाई लाल, चंदन वर्मा, सचिन वर्मा, चार अज्ञात के विरुद्ध मार-पीट समेत विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। वही मार-पीट की दूसरी घटना पट्टी कोतवाली क्षेत्र के ही सलाहपुर गांव से संबंधित है गांव की है। उमेश जायसवाल ने पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि बीते पांच फरवरी को देवेंद्र प्रताप सिंह, व विजय चैरसिया, उसके आम रास्ते पर पक्की दीवार बनाकर रास्ता बंद कर दिया। पीड़ित ने जब विरोध किया तो उसे जम-कर मारा पीटा गया। इतना ही नहीं उसे पर एक फर्जी मुकदमा भी दर्ज कर दिया गया।एसपी के आदेश पर पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

## 18 अप्रैल तक आवेदन पत्रों को जमा करें : जिलाधिकारी

**प्रतापगढ़।** जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने पंचायत सहायक, एकाउन्टेण्ट कम डाटा इन्ट्री आपरेटर के चयन के सम्बन्ध में समय सारिणी जारी कर दिया है। उन्होने बताया है कि 03 अप्रैल तक ग्राम पंचायतां द्वारा आवेदन पत्र आमंत्रित करने की सूचना ग्राम पंचायत के सूचना पट्ट एवं मुनादी द्वारा करायी जायेगी। 04 से 18 अप्रैल तक जिला पंचायत राज अधिकारी कार्यालय, विकास खण्ड कार्यालय एवं ग्राम पंचायत कार्यालय में आवेदन पत्र जमा किया जायेगा। 19 से 23 अप्रैल तक जिला पंचायत राज अधिकारी कार्यालय, विकास खण्ड कार्यालय में प्राप्त आवेदन पत्रों को सम्बन्धित ग्राम पंचायत को उपलब्ध कराया जायेगा। 24 से 30 अप्रैल तक ग्राम पंचायत में प्राप्त आवेदन पत्रों की श्रेष्ठता सूची (मेरिट लिस्ट) तैयार की जायेगी एवं ग्राम पंचायत की प्रशासनिक समिति के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत की जायेगी एवं समिति द्वारा अनुमोदित श्रेष्ठता सूची को जिला स्तरीय समिति के विचारार्थ समिति के सदस्य सचिव (जिला पंचायत राज अधिकारी) को उपलब्ध करायी जायेगी। 01 से 07 मई तक जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा परीक्षण संस्तुति तथा 08 से 15 मई तक ग्राम पंचायत द्वारा नियुक्ति पत्र निर्गत किया जायेगा।

## राष्ट्रीय स्वयंसेवको ने हर्षोल्लास के साथ मनाया वर्ष प्रतिपदा उत्सव

### संघ के माध्यम से समाज में राष्ट्रवाद का स्वयंसेवक निरंतर कर रहे कार्य : रमेश

**प्रतापगढ़।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से जनपद के शिवगढ़ खण्ड में वर्ष प्रतिपदा उत्सव मनाया गया। संघ के स्वयंसेवकों ने संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार को आद्य सरसंघचालक प्रणाम किया तथा उनके चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद विभाग संघचालक रमेश ने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भारतीय काल गणना का प्रथम दिन अर्थात नववर्ष का प्रारंभ दिवस होता है। हमारी यह मान्यता है कि इसी दिन सृष्टि की रचना, रामचंद्र का राज्याभिषेक, विक्रमादित्य द्वारा शकों का पूर्ण विजय प्राप्त कर विक्रम संवत का प्रारंभ, दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना आदि कई महत्वपूर्ण कार्य हुए थे। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवकों के लिए आज का दिन अति महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि संघ के संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था। उन्होंने कहा कि डा.हेडगेवार का सपना था कि भारत परम वैभव को प्राप्त करें। इसके लिए हम 100 वर्षों से निरंतर संघ के माध्यम से समाज में राष्ट्रवाद का कार्य कर रहे हैं। भारत विश्व गुरु के रूप में जाना जाता था और आगे भी जाना जाएगा। इसके लिए हम कटिबद्ध हैं। कार्यक्रम में खंड संघचालक क्षमा शंकर, खंड कार्यवाह नीरज, सहखंड कार्यवाह चंद्रभूषण, खंड शारीरिक शिक्षण प्रमुख रवि, खंड बौद्धिक शिक्षण प्रमुख राजू, पूर्व विधायक धीरज ओझा, ब्लॉक प्रमुख सत्यम ओझा, भाजपा नेता आत्म प्रकाश, शिवा पांडेय, जिला ग्राम विकास संयोजक विनोद, नगर पंचायत अध्यक्ष बद्री गुप्ता, अधिवक्ता परिषद के अजय ओझा, खंड व्यवस्था प्रमुख संदीप,मनीष, शिवा, मनीष, विवेक आदि उपस्थित रहे।

## जिलाधिकारी ने स्पोर्ट्स स्टेडियम का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

स्पोर्ट्स स्टेडियम का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

**प्रतापगढ़।** जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम का निरीक्षण किया और निरीक्षण के दौरान कार्यदायी संस्था यूपीपीसीएल द्वारा बाउण्ड्रीवाल का निर्माण कार्य किया जा रहा था जिस पर यूपीपीसीएल के एई गणेश प्रसाद को निर्देशित किया कि 15 मई तक बाउण्ड्री वाल का कार्य पूर्ण किया जाये और गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें, यदि कमेटी द्वारा जांच रिपोर्ट में बाउण्ड्री वाल की स्थिति ठीक नही होगी तो सम्बन्धित के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज करायी जायेगी। जिलाधिकारी ने स्पोर्ट्स स्टेडियम में दर्शक दीर्घा का निरीक्षण किया गया जो जर्जर स्थिति में पाया गया जिस पर जिलाधिकारी ने आरईडी एवं पीडब्लूडी के अधिशासी अभियन्ता को निर्देशित किया कि दर्शक दीर्घा का ध्वस्तीकरण कर पुनः नया स्टीमेट बनाकर आवश्यक कार्यवाही की जाये। निरीक्षण के दौरान कार्यालय में खिड़कियों की जालियॉ टूटी पायी गयी जिस पर नयी जाली लगाये जाने व कार्यालय की रंगाई-पुताई का कार्य कराने हेतु निर्देशित किया गया। बैडमिन्टन हाल का भी निरीक्षण किया गया जिसकी हालत ठीक नही पायी गयी जिस पर जिलाधिकारी ने यूपीपीसीएल के एई गणेश प्रसाद को निर्देशित किया कि जो भी छत पड़ी हुई है उसे नये सिरे से मरम्मत व रंगाई पुताई एवं प्रकाश की व्यवस्था करायी जाये और जो फर्श की तरह लकड़ी लगी थी उसे हटाकर नयी लकड़ी लगाये जाने के निर्देश दिये गये। इसी प्रकार टेबुल टेनिस और कुश्ती हाल में पायी गयी कमियों के दृष्टिगत व्यवस्थाओं को ठीक कराने के निर्देश दिये गये। एई को निर्देशित किया गया कि टेबुल टेनिस, कुश्ती हाल, बैडमिन्टन हाल व कार्यालय के मरम्मत कार्यो को 15 अप्रैल से प्रारम्भ कर दिया जाये और 30 जून तक कार्य को पूर्ण कर लिया जाये। उन्होने कहा कि जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम हेतु जो भी समिति गठित की गयी है वह प्रत्येक 15 दिवस में स्टेडियम की रिपोर्ट उपलब्ध कराये। इस दौरान जिलाधिकारी ने स्टेडियम के बगल कृषि विभाग की खाली जमीन को देखा और एसडीएम सदर से कृषि विभाग की जमीन को नजरी नक्शा के साथ प्रपोजल बनाकर प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया जिससे स्टेडियम के विस्तार के लिये आवश्यक कार्यवाही की जा सके। स्टेडियम में बने जिम का भी निरीक्षण किया गया जिसमें एसी नही लगी थी जिस पर रायफल क्लब से एसी लगाये जाने के निर्देश दिये गये। उन्होने आरईडी के अधिशासी अभियन्ता सुजीत राय को निर्देशित किया कि स्पोर्ट्स स्टेडियम में 08 रूम एवं 04 बैरक बनाये जाये। उन्होने कहा कि बाउण्ड्री वाल का निर्माण कार्य पूर्ण हो जाने के उपरान्त बाउण्ड्री के किनारे अशोक के वृक्ष लगाये जाये। इस दौरान क्रीड़ाधिकारी पूनम लता राज उपस्थित रही।

## शुरू हुआ सदस्यता अभियान, बढ़ी चुनावी सरगर्मी

**लालगंज।** संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव को लेकर बुधवार से सदस्यता अभियान की शुरूआत हुई। सदस्यता अभियान की शुरूआत को लेकर चुनाव समिति के कार्यालय के समक्ष एकत्रित हुए अधिवक्ताओ ने चुनावी गहमागहमी का माहौल देखा गया। पन्द्रह सदस्यीय चुनाव समिति के द्वारा अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता शिवाकांत उपाध्याय व अधिवक्ता कमलेश तिवारी ने आवेदन पत्र प्राप्त किये। समिति द्वारा वर्ष 2023 के नवीन सदस्यता के साथ छूटे आवेदनों को भी शामिल किये जाने की कवायद शुरू हुई है। एल्डर कमेटी के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने बताया कि सदस्यता अभियान पूर्ण होने के बाद चुनाव समिति सूची का सत्यापन करेगी। वही सदस्यता अभियान की शुरूआत में संभावित उम्मीदवारो को भी तहसील एवं दीवानी परिसर में अपनी दावेदारी को लेकर रणनीतिक चर्चा में देखा गया।

## सपा सांसद के बयान पर भड़की करणी सेना राष्ट्रपति को संबोधित दिया ज्ञापन

**लालगंज।** महाराणा सांगा को लेकर राज्यसभा सांसद एवं सपा महासचिव रामजी लाल सुमन की बयानबाजी को लेकर बुधवार को यहां राजपूत करणी सेना ने तहसील गेट पर विरोध प्रदर्शन किया। महाराणा सांगा के खिलाफ बयानबाजी को लेकर करणी सेना ने सपा सांसद के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन भी प्रभारी तहसीलदार पंकज कुमार को सौंपा। करणी सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद सिंह व संयुक्त अधिवक्ता संघ के पूर्व उपाध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह बघेल की अगुवाई में सौपे गये ज्ञापन में राज्यसभा सदस्य रामजी लाल सुमन के बयान को राष्ट्र विरोधी कृत्य करार देते हुए उनके खिलाफ दण्डात्मक कार्रवाई की मांग उठायी गयी है। वही ज्ञापन में सुमन की राज्यसभा सदस्यता भी समाप्त किये जाने पर जोर दिया गया है। आक्रोशित श्री राजपूत करणी सेना के कार्यकताओं ने तहसील गेट पर विरोध प्रदर्शन भी किया। प्रदर्शन में तहसील के अधिवक्ताओं को भी शामिल देखा गया। प्रदर्शनकारियों ने महाराणा सांगा के जयघोष के साथ सपा राज्यसभा सदस्य के खिलाफ नारेबाजी भी की। प्रभारी तहसीलदार पंकज कुमार ने ज्ञापन को डीएम को भेजवाये जाने का आश्वासन दिया। इस मौके पर प्रमोद कुमार सिंह, लाल विनोद प्रताप सिंह, लाल स्नेहांश प्रताप सिंह, कन्हैयाबक्श सिंह, उमेश सिंह, संदीप सिंह, राघवेन्द्र सिंह, कृष्णतोष मिश्र, शैलेन्द्र शुक्ल, अंकित सिंह, अजय शुक्ल गुडडू, राजेश तिवारी, संजय सिंह आदि रहे।

## युवती को भगा ले जाने पर दर्ज हुआ मुकदमा

**पट्टी।** युवती को बहला फुसलाकर पड़ोसी भगा ले गया। पिता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी युवक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के दाउदपुर गांव निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि बीते 28 मार्च को वह और उसकी पत्नी खेत में काम करने गए थे। घर पर उनकी बेटी अकेली थी। इस दौरान पड़ोसी युवक जिससे उसका पहले से ही मेल मिलाप था, लेकर फरार हो गया। वापस लौटने पर पता चला की बेटी घर पर नहीं है। खोजबीन के दौरान यह जानकारी हुई कि आरोपी युवक के साथ दाउदपुर चैराहे से ढकवा की तरफ जाते हुए लोगों ने दोनों को देखा है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर आरोपी युवक के विरुद्ध अपहरण का मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई शुरू कर दी है।

## वार्षिकोत्सव में मेधावियों का चमका हुनर, हुए पुरस्कृत

**प्रतापगढ़।** रामपुर बावली स्थित कम्पोजिट विद्यालय में वार्षिकोत्सव में मेधावियों का विज्ञान खोज प्रतियोगिता में हुनर चमका दिखा। अतिथियों ने सफल मेधावियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित कम्पोजिट विद्यालय में हुई प्रतियोगिता में कक्षा आठ के छात्र शमीम व छात्रा आशिया को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मौजूद विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान मो0 जर्रार तथा प्रधान सविता जायसवाल व एआरपी राजीव कौशल ने सफल छात्र व छात्रा को साइकिल व प्रशस्ति प्रदान कर हौसला आफजाई की। प्रधानाध्यापक आनन्द सिंह ने शैक्षिक प्रगति आख्या तथा डॉ. देवेश त्रिपाठी ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का संयोजन पंकज त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर नागेश जायसवाल, आद्या प्रसाद मिश्र, खुर्शीद आलम, प्रतिभा त्रिपाठी, रेनू शुक्ला, शीला त्रिपाठी, पूनम त्रिपाठी, दीपक सिंह, बिलकीस बानो, अश्विनी कुमार, मंजुला रजक, आदि रहे।

## रास्ते के विवाद में वृद्ध महिला सहित चार को पीटा

**पट्टी।** रास्ते के विवाद में विपक्षियों ने तीन महिलाओं समेत चार को पीट कर घायल कर दिया। मामले की शिकायत पुलिस से की गई है। कोतवाली क्षेत्र के जलालपुर किठौली गांव की रहने वाली दुलारी देवी ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोपित किया है कि उसके घर आवाजाही के आम रास्ते को लेकर पड़ोसियों से विवाद चल रहा है। इसी बात से खुन्नस खाए विपक्षी एकराय होकर उसके घर पर चढ़ आए और उसकी पिटाई करने लगे। शोर-शराबे पर पहुंची बहू माधुरी, शिवकुमारी व बेटे रमेश को भी विपक्षी लाठी-डंडा व ईट से पीट कर घायल कर दिए। घायल ने मामले की नामजद तहरीर कोतवाली पुलिस को देकर कार्रवाई की मांग की है। शिकायत पर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

## डिप्टी सीएमओ ने सीएचसी पट्टी का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

निरीक्षण के दौरान मरीजों का हाल जानते डिप्टी सीएमओ

**पट्टी।** सीएचसी पट्टी निरीक्षण के लिए डिप्टी सीएमओ बुधवार को पट्टी पहुंचे। जहां पर उन्होंने पूरे सीएचसी का निरीक्षण किया लेकिन अरसे से बीमार पड़े स्वास्थ्य एटीएम उन्हें नजर ही नहीं आया। बुधवार को दिन में करीब 12 बजे डिप्टी सीएमओ डॉ एएनराय सीएचसी पट्टी पहुंचे। जहां पर उन्होंने चिकित्सक कक्ष, लैब, एक्स-रे मशीन, ऑक्सीजन प्लांट का निरीक्षण किया। इसके साथ ही अस्पताल में भर्ती मरीजों से मुलाकात कर उनका हाल-चाल जाना। दवा वितरण कक्ष के पहले ही स्थापित स्वास्थ्य एटीएम पर उनकी नजर नहीं पड़ी जो बरसों से बंद पड़ी है। पट्टी में स्वास्थ्य एटीएम इसलिए लगाया गया था कि अस्पताल में आने वाले मरीजों को एक ही बार में कई जांच हो जाए पर सरकार की मनसा पर स्वास्थ्य एटीएम के संचालन की जानकारी रखने वाले की नियुक्ति न होने से पानी फिर रहा है। इस संबंध में जब डिप्टी सीएमओ से बात की गई तो उन्होंने कहा इसकी फाइल अभी चेक करता हूं जल्द ही इसे संचालित कर दिया जाएगा। निरीक्षण के दौरान सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर अखिलेश जायसवाल मौजूद रहे।

## आग लगने से गृहस्थी का सामान जला

**पट्टी।** नगर पंचायत ढकवा के इब्राहिमपुर वार्ड नंबर एक में सुरेश निषाद पुत्र महावीर निषाद व पिंटू निषाद पुत्र नान्हू निषाद के घर पर आग लग गई। जिसमें काफी नुकसान हो गया। बहू प्रियंका निषाद और उर्मिला निषाद ने बताया हम लोग अंदर थे। पता नहीं कैसे आग लग गई।जब बच्चों ने बताया तब हम लोगों को जानकारी हुई। आसपास के लोगों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया। जिसमें लगभग लाखों का सामान जलकर खाक हो गया। आग से गेहूं, दो साइकिल, दो तख्ता, मेज, कुछ कपड़ा और खाने पीने का सामान सबकुछ जलकर खाक हो गया। सूचना पर बुधवार की शाम 4 बजे मौके पर आर आई बाल कृष्ण शुक्ला व महेश प्रसाद लेखपाल ने जाकर नुकसान का जायजा लिया है।वहीं दूसरी तरफ आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र स्थित राजकीय पशु चिकित्सालय के पुराने भवन के भीतर भी अज्ञात कारणों से आग लग गई। मौके पर पहुंचे फायर कर्मियों ने आग पर काबू पा लिया।

# राम वन गमन मार्ग निर्माण कार्य को जून तक पूर्ण कराने के डीएम ने दिये निर्देश

## जिलाधिकारी ने की राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-02 को चार से छः लेन चौड़ीकरण व राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-731ए राम वन गमन मार्ग परियोजना के अधिकारियों के साथ निर्माण की समीक्षा बैठक

**कौशाम्बी।** जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी की अध्यक्षता में कार्यालय कक्ष में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-02 को चार से छः लेन (चकेरी-इलाहाबाद खण्ड) चौड़ीकरण परियोजना व राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-731ए राम वन गमन मार्ग परियोजना के अधिकारियों के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण की समीक्षा बैठक गई। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा चार से छः लेन (चकेरी-इलाहाबाद खण्ड) चौड़ीकरण परियोजनान्तर्गत मौजा-कसिया स्थित मंदिर को स्थानान्तरित कराने के सम्बन्ध में मंदिर पुजारी व स्थानीय लोगों के साथ संवाद स्थापित कर सर्विस रोड व ड्रेनेज कार्य को पूर्ण कराने के संबंध में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को निर्देशित किया गया। उन्होंने सैनी अण्डर पास के नीचे टैक्सी स्टैण्ड की व्यवहार्यता व संभावनाओं पर अध्ययन के लिए एन.एच.ए.आई के अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके साथ ही उन्होंने कोखराज टोल प्लाजा पर दुर्घटना की सम्भावनाओं को देखते हुए सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-731ए राम वन गमन मार्ग परियोजना की समीक्षा के दौरान चल रहें निर्माण कार्य के प्रगति की सराहना की तथा पैकेज-3 व पैकेज-4 के अन्तर्गत निर्माण कार्य को बारिश से पहले माह-जून तक अवश्य पूर्ण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि बारिश के दौरान सड़क के निर्माण कार्य में बाधा उत्पन्न होगी एवं सड़क के खराब होने की भी सम्भावना बनी रहेंगी, जिससे सड़क के निर्माण कार्य को निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष ससमय पूर्ण करा लिया जाय इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार, सक्षम प्राधिकारी भूमि अध्याप्ति (एन.एच.ए.आई.) एस.पी.वर्मा, परियोजना प्रबन्धक (तक०) मो० जैद, भा.रा.रा.प्रा.. कानपुर सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

### सैकड़ों वर्ष पुरानी मंदिर के पुनर्निर्माण में व्यवधान डाल रहे हैं नेता के रिश्तेदार

**कड़ा कौशाम्बी।** सिराथू तहसील क्षेत्र के लेहदरी गांव स्थित सैकड़ों वर्ष पुराने माता काली के मंदिर के जीर्णोद्धार पर नेता के रिश्तेदार व्यवधान डाल रहे हैं मंदिर की जमीन पर भी कब्जा करने की नियत नेता के रिश्तेदारों में बनाई है जिससे मां काली के भक्तों में आक्रोश व्याप्त है नेता के दखल के चलते अधिकारी भी मंदिर निर्माण पर भक्तों का साथ नहीं दे रहे हैं बल्कि मंदिर निर्माण में व्यवधान डालने वालों का साथ अधिकारी दे रहे हैं। बताया जाता है कि यह मंदिर सैकड़ों साल पुराना है और इलाके के भक्तों की आस्था का केंद्र है औघड़ कैलाश नाथ गुरु योगी सुखदेव नाथ ने बताया कि यह मंदिर नाथ संप्रदाय का है और महागुरु गोरखनाथ के आदेश पर मंदिर पर मूर्ति रखी जा रही है चकबंदी के दौरान अधिकारियों ने भी मौके पर मंदिर मौजूद होने की पुष्टि की लेकिन राजेश मौर्य आदि मंदिर की जमीन पर कब्जा कर रहे हैं एक मंजिल मंदिर बन चुका है लेकिन दूसरे मंजिल के निर्माण में बाधा डाला जा रहा है मंदिर का निर्माण ना होने पर माता काली के ऊपर भक्तों ने तिरपाल डाल दिया था लेकिन उसे भी दबंगों ने फाड़ दिया जिससे माता काली खुले आसमान के नीचे मौजूद है बताया जाता है कि मंदिर निर्माण करने वाले लोगों के साथ दबंगों ने मारपीट भी की है लेकिन मारपीट के मामले में भी नेताओं के दबाव के चलते भक्त जनों की कही सुनवाई नहीं हो रही है।

## न्यूज झरोखा

### मुख्य विकास अधिकारी ने की व्यापार बन्धु समिति की बैठक

**कौशाम्बी।** मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में जनपद स्तरीय व्यापार बन्धु समिति की बैठक की गई। मुख्य विकास अधिकारी ने व्यापारियों की समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दियें बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने सभी अधिकारियों से कहा कि व्यापार बन्धु एवं उद्योग बन्धु की बैठक को गम्भीरता से लिया जाय तथा व्यापारियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किया जाय। उन्होंने उपायुक्त उद्योग को निर्देशित किया कि व्यापारियों की समस्याओं को सम्बन्धित अधिकारियों से समन्वय कर निस्तारित कराया जाय तथा क्षेत्र भ्रमण कर भी व्यापारियों की समस्याओं का निस्तारण कराया जाय। पिछली बैठक में पूरब पश्चिम शरीरा में बने शवदाहग्रह में बाउड्रीवाल एवं इंटरलाकिंग कराने की मांग की गई थी, जिस पर बताया गया कि 40 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है एवं शासन को भेज दिया गया है। देवीगंज में 200 केवीए का नया ट्रान्सफार्मर लगाये जाने की मांग की गई थी, जिस पर अधिशासी अभियंता विद्युत द्वारा बताया गया कि प्रस्ताव तैयार कर बिजनेश प्लान में भेजा जा चुका है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी आरएस यादव, जिला विकास अधिकारी सुखराज बन्धु एवं उपायुक्त उद्योग सहित अन्य अधिकारी तथा व्यापारी रमेश अग्रहरि अरविन्द केसरवानी नीरज बनारसी प्रवेश केसरवानी एवं शिवम केसरी सहित अन्य व्यापारी उपस्थित रहें।

# हत्यारे के बयान पर पुलिस बंद कर रही है मृतक विकास की पत्रावली

## घर से बुला ले गए और चलती बाइक पर लोहे के रॉड से प्रहार कर मौत के घाट उतारने के मामले को पुलिस साबित कर रही है दुर्घटना

**कौशाम्बी।** प्रयागराज जनपद के एयरपोर्ट थाना क्षेत्र के बिसौना गांव के विकास पुत्र अत्ती लाल पासी की हत्या करने की योजना के चलते 4 मार्च को घर से बुलाकर उसका पड़ोसी अश्वनी पुत्र मन्नालाल बाइक से ले गया था और रास्ते में दारु पीने के बाद दो साथी और मिल गए और उस पर लोहे के रॉड से हमला कर मरणासन्न कर दिया इलाज में मौत हो गयी लेकिन अब इस मामले में थाना और चौकी पुलिस हत्यारे के हाथ बिक चुकी है और पार्टी बंदी पर उतारू है। बताया जाता है कि विकास जिस बाइक में बैठा था उसके पीछे दूसरी बाइक सवारों ने विकास पर लोहे के रॉड से चलती बाइक पर हमला शुरू कर दिया उसके गले में लोहे के रॉड से कई प्रहार किया गया है जिससे विकास के गले की नसों और हडिडयों में गंभीर चोट लग गई है बचाव में उसने अपना हाथ गले में लगाया जिससे उसके दोनों हाथ की उंगलियों में भी गंभीर चोट लग गई है विकास मौके पर मरणासन्न हो गया है आवाज बन्द हो गई हत्यारे ने दुर्घटना का रूप देने के लिए उसे वहीं फेंक करके उसकी मां रोमा देवी को फोन करके बताया कि विकास दुर्घटना में घायल हो गया है जबकि साथ में रहे अश्वनी को कोई चोट नहीं है बाइक में दुर्घटना के कोई निशान नहीं है दुर्घटना में सड़क में गिरने पर खरोच और सड़क पर घिसटने के कोई निशान नही है और कपड़े फटने की भी कोई निशान नहीं है घटनास्थल पर किसी ने दुर्घटना देखा भी नहीं है अस्पताल ले जाने के बाद विकास कुछ बयां नहीं कर सका और दर्द से कराहता रहा इलाज के दौरान इशारे से बार-बार वह हमला करने की बात बताने की कोशिश करता रहा इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई है विकास की मौत के बाद पीएम रिपोर्ट भी उसके शरीर में आठ अलग-अलग स्थान पर गंभीर चोट की पुष्टि कर रहा है पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी दुर्घटना जैसे कोई चोट के निशान नहीं है लेकिन घटना को 24 दिन बीत जाने के बाद अभी तक पुलिस ने विकास की हत्या करने वाले अश्वनी और उसके साथियों को गिरफ्तार करके जेल नहीं भेजा है हालांकि जांच के नाम पर अश्विनी को थाना पुलिस ने अपने हिरासत में लिया था और उससे पूछताछ किया जिसमें अश्वनी ने हत्या का गुनाह कबूल भी किया है लेकिन इसी बीच एक किसान नेता थाने में प्रकट हो गया और पुलिस से सौदेबाजी शुरू हो गई बताया जाता है कि नोटों की गड्डी मिलने के बाद अब हत्या करने वाले अश्वनी को अब पुलिस बेकसूर बता रही है नोट की गड्डी मिलने के बाद पुलिस पाटीबंदी पर उतर आई है और हत्या के इस मामले में लीपा पोती करने में लगी है मामले की शिकायत उत्तर प्रदेश मुख्य मुख्यमंत्री और डीजीपी से भी मृतक बिकास की मां रोमा देवी ने किया है बताया जाता है कि हत्या की घटना के पूर्व मृतक विकास के नैनी के एक रिश्तेदार की महिला ने धमकी दिया था कि तुम्हारी जवानी माटी में मिला दूंगी और इस महिला के रणनीति के बाद अश्विनी कुमार ने अपने रिश्तेदारों को साथ लेकर योजनाबद्ध तरीके से सोची समझी रणनीति के तहत विकास की हत्या की है सूत्रों की माने तो विकास की हत्या करने के लिए अश्विनी और उसके मामा ने हत्या की सुपारी ली थी और ठेके पर विकास की हत्या की गई है हत्या करने वाले लोगों द्वारा दुर्घटना स्थल असरावल अड्डा बताया जाता है जबकि 4 मार्च को असरावल अड्डा में कोई दुर्घटना ही नहीं हुई है जिससे विकास की हत्या करने वाले लोगों के झूठे बयान का खुलासा होता है लेकिन थाना पुलिस विकास की हत्या करने वाले हत्यारे अश्वनी और उसके रिश्तेदारों के बयान पर इस पूरे मुकदमे में लीपा पोती कर दुर्घटना साबित करने पर उतारू है जिससे पुलिस की मंशा पर सवाल खड़े है योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था पर प्रयागराज कमिश्नर पुलिस सवाल खड़ी कर रही है आखिर विकास की मौत के बाद उसके परिवार को न्याय कैसे मिलेगा कानून का राज कैसे स्थापित होगा हत्यारो को दंड कैसे मिलेगा प्रयागराज पुलिस पर यह तमाम बड़े सवाल खड़े हैं।

# खाद्य एवं रसद विभाग की आपूर्ति व विपणन शाखा की एडीएम ने की समीक्षा बैठक

**कौशाम्बी** अपर जिलाधिकारी वि0रा0 अरूण कुमार गोंड द्वारा उदयन सभागार में खाद्य एवं रसद विभाग की आपूर्ति व विपणन शाखा की समीक्षा की गयी। न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के अन्तर्गत दिनांक 17 मार्च 2025 से प्रारम्भ गेहूँ खरीद की समीक्षा में पाया गया कि 41 केन्द्रों के सापेक्ष 12 केन्द्रों पर अभी तक 648.00 कुन्तल गेहूँ की खरीद 17 किसानों से की गयी है। अपर जिलाधिकारी ने बैठक में उपस्थित सभी क्रय एजेन्सी प्रभारियों को सभी केन्द्रों पर खरीद प्रारम्भ करने के कड़े निर्देश दिये गए। उन्हांने सभी क्षेत्रीय विपणन अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अपनी तहसील के केन्द्र प्रभारियों से सम्पर्क में रहे और यदि पंजीकरण सत्यापन के अभाव में खरीद मे समस्या आ रही है, तो तत्काल सत्यापन करायें। उन्होंने मंडी सचिव को निर्देशित किया कि जनपद की सभी सीमाओं पर सतर्क दृष्टि रखी जाय और कही भी गेहूँ के अवैध संचरण की शिकायत मिलें, तो वहॉ दोषी के विरूद्ध मंडी अधिनियम के अन्तर्गत कार्यवाही की जाय। अपर जिलाधिकारी ने जिलापूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि बिचौलियों की सक्रियता पाये जाने तथा कृषकों से न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम खरीद में लिप्त व्यक्तियों के विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। निलम्बित व रिक्त उचित दर दुकानों की समीक्षा के दौरान जिलापूर्ति अधिकारी द्वारा बताया गया कि जनपद में 06 उचित दर दुकानें निरस्त है। जिस पर अपर जिलाधिकारी ने पूर्ति निरीक्षकों को निर्देशित करते हुए कहा कि प्रस्ताव प्राप्त हो चुकी उचित दर दुकानों की नियुक्ति अगली बैठक के पूर्व करा ली जाए तथा सम्बन्धित उपजिलाधिकारियों खण्ड विकास अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर अवशेष रिक्त उचित दर दुकानों की नियुक्ति इस माह के अन्त तक पूर्ण करायें ताकि कार्ड धारकों को समस्याओं का सामना न करना पडे. । मॉडल शाप की समीक्षा के दौरान जिलापूर्ति अधिकारी द्वारा बताया गया कि जनपद में 75 मॉडल शाप उचित दर दुकानों का लक्ष्य प्राप्त हुआ है। जिसके सापेक्ष अभी तक 72 मॉडल शाप उचित दर दुकानों का निर्माण पूर्ण हो चुका है तथा अवशेष 03 मॉडल शाप उचित दर दुकानों का निर्माण कार्य प्रारम्भ है। 65 मॉडल शाप पर उचित दर दुकानों का संचालन हो रहा है। जिन दुकानों के निर्माण में समस्या आ रही हो सम्बन्धित क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी से समन्वय बनाते हुए समस्याओं का निराकरण करायें एवं अवषेष मॉडल शापों का निर्माण कार्य पूर्ण कराकर उनमें उचित दर दुकानें स्थापित करायें। अपर जिलाधिकारी द्वारा एस0एस0डी0जी0 के आवेदनों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त की गई, जिस पर जिलापूर्ति अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में 4183 आवेदन नये राशन कार्ड के लिए एवं 10189 आवेदन राशन कार्ड संशोधन के लिए 30 दिवस के उपरान्त लम्बित पाये गये है। उन्होंने जिलापूर्ति अधिकारी, पूर्ति निरीक्षकों व क्षेत्रीय खाद्य अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह समय सीमा के बाहर लम्बित आवेदनों पर निर्णय लेते हुए अग्रेतर कार्यवाही कराना सुनिश्चित करें तथा भविष्य में इस तरह की स्थिति से बचें।

## मुख्य विकास अधिकारी ने की जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक

**कौशाम्बी** सीडीओ अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक की गई। अपर जिलाधिकारी ने उद्यमियों की समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दियें बैठक में उपायुक्त उद्योग ने बताया कि निवेश मित्र पोर्टल पर विगत एक माह में कुल 1760 प्रकरण प्राप्त हुए है, जिसमें से 10 प्रकरण विभिन्न विभागों के स्तर पर लम्बित है, जिसमें से श्रम विभाग के-01, कृषि विभाग के-05 एवं उ0प्र0 पावर कार्पोरेशन लि0 के-04 प्रकरण सम्मिलित हैं, जिस पर अपर जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को पोर्टल पर लम्बित प्रकरण प्राथमिकता के आधार पर समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। मुख्य विकास अधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को विभिन्न योजनाओ के अन्तर्गत प्राप्त ऋण आवेदनां को बैंको से समन्वय कर निस्तारित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने उद्योग विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि अभियान चलाकर जिन उद्यमियों का लोन हो गया है, उनसे बात करते हुए एक सप्ताह के अन्दर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि शासन की मुख्यमंत्री योजना लोगों को रोजगार देने का कार्य कर रहीं है, अधिक से अधिक लोगों को लोन देकर रोजगार प्रदान करें। उन्होंने सीएम युवा योजना, पीएम सूर्यघर योजना एवं अपार आईडी योजना के अन्तर्गत लोगों को लाभान्वित कराये जाने तथा अपने-अपने वार्डों का भ्रमण कर सभी प्रकार की समस्याओं का निस्तारण कराने के निर्देश समस्त अधिशासी अधिकारियों को दियें।

## महाविद्यालय में पकड़ा गया गांजा सवालों के घेरे में है पुलिस

**कौशांबी।** महेवाघाट थाना क्षेत्र में स्थित एक महाविद्यालय से कई कुंटल गांजा पकड़ा गया है इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। यह मामला उस समय सुर्खियों में आया जब पुलिस ने महाविद्यालय परिसर से भारी मात्रा में गांजा बरामद किया, लेकिन इसके बाद विवादों के घेरे में आ गया। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, इस मामले में कुछ बड़े राजनीतिक व्यक्तियों का भी हाथ होने की बात सामने आई है इसके कुछ वर्ष पहले भी शाहपुर गांव में पुलिस ने कई कुंटल गांजा बरामद किया था जिसमें मुकदमा लिखकर जेल भेजा था लेकिन शिक्षा माफिया से गाँजा माफिया बने लोगों पर मुकदमा दर्ज करके गिरफ्तारी नहीं हुई है जिससे पुलिस पर भी सवाल खड़े हैं स्थानीय निवासियों का आरोप है कि पुलिस मामले की गंभीरता को दरकिनार कर रही है और राजनीतिक दबाव के चलते इसे महज लेनदेन का मामला बना दिया गया है।इस घटना ने लोगों के बीच पुलिस की कार्यप्रणाली और राजनीतिक हस्तक्षेप पर सवाल उठाए हैं। आम नागरिकों का कहना है कि इस मामले में सच्चाई को उजागर करने की आवश्यकता है, ताकि ऐसे अवैध धंधों में लिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सके। क्या प्रशासन इस मामले पर सख्त कदम उठाएगा, या ऐसे अपराध को भी दबा दिया जाएगा? यही अब सबसे बड़ा प्रश्न है।

## गुरुवार की भोर मंझनपुर पावर हाउस की बाधित रहेगी सप्लाई

**कौशाम्बी।** मंझनपुर पावर हाउस की सप्लाई गुरुवार को भोर में बाधित रहेगीं। अवर अभियंता चंद्रिका मौर्य ने बताया कि रामवन गमन मार्ग निर्माण के चलते 33 हजार विद्युत सप्लाई की तार व पोल की शिफ्टिंग का कार्य होना है। इससे सुबह 6 बजे से 9 बजे तक मंझनपुर पावर हाउस की सप्लाई ठप रहेगी।

## पेंशनर पारिवारिक पेंशनरों की मृत्यु हो जाने की दशा में उनके वारिसों द्वारा कोषागार में ससमय दी जाय सूचना

**कौशाम्बी।** मुख्य कोषाधिकारी रवीन्द्र प्रताप सिंह द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया गया कि पेंशनर/पारिवारिक पेंशनरों की मृत्यु हो जाने की दशा में उनके वारिसों द्वारा ससमय कोषागार में सूचना न दिये जाने के कारण जीवित प्रमाण पत्र वैध रहने की दशा में पेंशन का अधिक भुगतान हो जाता है। मृत्यु की सूचना अथवा तहसीलदार की जांच आख्या प्राप्त होने पर संबंधित बैंक को अधिक भुगतान की धनराशि प्रेषित किये जाने के लिए पंजीकृत पात्र एवं ई-मेल प्रेषित किया जाता है। कोषागार के पत्र के क्रम में कतिपय बैंकों द्वारा संबंधित पेंशनर के खाते में धनराशि उपलब्ध रहने के बावजूद भी अधिक भुगतान की धनराशि प्रेषित नही किया जाता है, जिसके कारण कोषागार को बार-बार अनुस्मारक पत्र प्रेषित करना पडता है। कतिपय बैंकों द्वारा चेक बनाकर रख लिया जाता है और समय अवधि व्यतीत होने जाने के बाद चेक प्रेषित किया जाता है, ये अत्यन्त खेद का विषय है। पेंशनर पारिवारिक पेंशनरों से अधिक भुगतान की वसूली की समीक्षा उ0प्र0 शासन द्वारा लगातार कडाई से किया जा रहा है। इस संबंध में उ0प्र0 शासन द्वारा शासनादेश दिनांक 02-07-2024 के माध्यम से अधिक भुगतान की वसूली किये जाने के लिए संबंधित को राजस्व बकाये की भांति वसूली किये जाने के अधिकार दिये गये हैं। उन्हांने बैंकों से अनुरोध किया है कि पेंशनर/ पारिवारिक पेंशनर की मृत्यु की सूचना यदि बैंक में प्राप्त होती है तो कोषागार को अवगत कराने तथा मृत पेशनर/पारिवारिक पेंशनरों के खाते से अधिक भुगतान की धनराशि ब्याज सहित कोषागार से पत्र प्राप्त होते ही अविलम्ब प्रेषित किये जाने के लिए जनपद के समस्त बैंको को सूचित करें।

## फरियादी के बच्चें को स्कूल ड्रेस जूता-मोजा कॉपी किताब पेन्सिल देकर डीएम ने बढ़ाया उसका हौसला

**कौशाम्बी** जिलाधिकारी कार्यालय में जन सुनवाई के दौरान प्रार्थिनी-गायत्री देवी पत्नी दिलीप कुमार निवासी ग्राम-चतुरीपुर, थाना सैनी द्वारा प्रार्थना पत्र देकर गॉव के कुछ दबंगो द्वारा उनका बाहर निकलने का रास्ता बंद कर मारपीट करने एवं जान से मारने की धमकी देने सम्बन्धित शिकायत की गयी। उनके द्वारा बताया गया कि वे अपने बच्चों के साथ घर पर अकेले रहती है एवं पति बाहर रहकर मजदूरी करते है। जिस पर जिलाधिकारी ने सम्बन्धित उप जिलाधिकारी/थाना प्रभारी को तत्काल कार्यवाही करने के निर्देश दियें। प्रार्थिनी के साथ उनका 7 वर्ष का छोटा बच्चा भी आया था, जिस पर जिलाधिकारी ने बच्चे से पूॅछा कि स्कूल क्यों नहीं गये, स्कूल जरूर जाया करों, बच्चे ने बताया कि मैं स्कूल जाता हूॅं। जिलाधिकारी ने बच्चे से कुछ सवाल पूॅछा, जिस पर बच्चें ने कागज पर उसे हल करके बताया, जिस पर जिलाधिकारी काफी प्रशन्न हुए, बच्चे को तुरन्त स्कूल ड्रेस, जूता-मोजा, कॉपी किताब, पेन्सिल रबड़ देकर उसका हौसला बढ़ाया एवं उसके उज्ज्वल भविष्य की कॉमना की।

## होली मिलन समारोह एवं रिजल्ट वितरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

**हर्रायपुर कौशाम्बी** एन डी कॉन्वेंट स्कूल एंड स्वर्गीय श्री समाधि महाराज बाबा सूरजपाल दास इंटर कॉलेज नसीरपुर, मूरतगंज के प्रांगण में होली मिलन समारोह एवं रिजल्ट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य डॉक्टर मानसिंह यादव ने कार्यक्रम का शुभारंभ शिक्षा की देवी माता सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के साथ किया मुख्य अतिथि ने क्लास के टॉपर्स और स्कूल टॉपर्स बच्चों को लड्डू खिलाकर मेडल पहना कर और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। स्कूल टॉपर्स में कक्षा 6 के छात्र प्रियांशु कुमार ने 97.01 प्रतिशत अंक पाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। रिंकी कुमारी कक्षा 8 की छात्रा ने 94 प्रतिशत अंक पाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 7 की छात्रा वर्षा यादव ने 93 प्रतिशत अंक पाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के प्रबंधक मिथिलेश सिंह यादव की ओर से प्रथम स्थान पाने वाले छात्र की पूरे वर्ष की फीस माफ कर दी गई ,द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा की फीस आधी कर दी गई तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा की 30 प्रतिशत फीस माफ कर दी गई ।विद्यालय परिवार विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है। विद्यालय के प्रधानाचार्य महेश कुमार ने स्कूल टॉप करने वाले, कक्षा में टॉप करने वाले तथा समस्त छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दीं और इसी तरह निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित किया सभी बच्चों को मेडल व ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उप प्रधानाचार्य रामनरेश यादव सुनील सिंह अभिषेक साहू अरुण यादव कुलदीप साहू राधा रानी सरोज अग्रवाल ज्योति सैनी आकांक्षा पाल मनीषा विश्वकर्मा नंदिता पाल आकांक्षा यादव आरती श्रीवास्तव महरोज फात्मा, रजवंती मुन्नी देवी कल्लो देवी आदि लोग मौजूद रहे।

# केपीएस भरवारी में नए म्यूजिक लैब का भव्य उद्घाटन

**भरवारी कौशांबी** प्रेसीडेंसी स्कूल एंड कॉलेज भरवारी में नए सत्र के प्रथम दिन एक अत्याधुनिक म्यूजिक लैब का उद्घाटन किया गया। इस म्यूजिक लैब का उद्घाटन चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता द्वारा विधिवत रूप से किया गया।यह नया म्यूजिक लैब आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित है, जहाँ बच्चों को न केवल पारंपरिक भारतीय संगीत, बल्कि मॉडर्न म्यूजिक की भी शिक्षा दी जाएगी। यहाँ सिंथेसाइजर, ड्रम सेट, गिटार, तबला, हारमोनियम, बांसुरी तथा अन्य वाद्य यंत्रों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। छात्रों को इस लैब में क्लासिकल, सेमी-क्लासिकल, वेस्टर्न म्यूजिक के साथ-साथ वोकल ट्रेनिंग भी दी जाएगी। इस पहल का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की संगीत प्रतिभा को निखारना और उन्हें मंच प्रदान करना है।संगीत केवल एक कला नहीं, बल्कि यह मानसिक एवं बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण साधन भी है। यह बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। विद्यालय प्रशासन का मानना है कि संगीत की शिक्षा से बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्ति में भी सुधार होगा,जिससे वे मानसिक रूप से और अधिक मजबूत बनेंगे। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन निवर्तमान विधायक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ उनकी रुचियों और प्रतिभाओं को निखारने के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना है। संगीत शिक्षा उनके व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाएगी और उन्हें एक नई दिशा प्रदान करेगी।विद्यालय की डायरेक्टर श्रीमती सीमा पवार ने अपने संदेश में कहा कि संगीत एक ऐसी विधा है जो न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह आत्मा की शुद्धि और मानसिक शांति का भी जरिया है। इस म्यूजिक लैब के माध्यम से हम विद्यार्थियों को न केवल संगीत सिखाएँगे, बल्कि उनके भीतर आत्म-अनुशासन, धैर्य और एकाग्रता जैसे गुणों का विकास भी करेंगे। विद्यालय प्रशासन ने यह आश्वासन दिया कि भविष्य में भी इस प्रकार की अत्याधुनिक सुविधाएँ विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाएँगी, जिससे वे हर क्षेत्र में निपुण बन सकें। यह म्यूजिक लैब न केवल विद्यालय बल्कि पूरे क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित होगी इस नए म्यूजिक लैब की स्थापना से विद्यार्थियों में अत्यधिक उत्साह देखा गया, और सभी ने इस अनूठी पहल की सराहना की।इस दौरान म्यूजिक टीचर दिव्यांशु सोनी, दीपक खरवार, शशांक श्रीवास्तव, वीर प्रताप सिंह , विकास पांडेय, संस्कृति त्रिपाठी आदि शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

## प्राथमिक विद्यालय नौढिया में रिजल्ट वितरण व विदाई समारोह आयोजित

**कोखराज कौशाम्बी** सिराथू तहसील क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय नौढिया में बुधवार को स्कूल चलो अभियान के तहत नए छात्रों को प्रवेश दिया गया और वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के दौरान विदाई समारोह पेरेंट्स मीटिंग एवं रिजल्ट वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया कार्यक्रम की शुरूआत कुमारी रानी और खुशी ने सरस्वती वंदना से किया इस मौके पर विद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किया गया उसके बाद विद्यालय के शिक्षकों ने छात्रों को रिजल्ट वितरण किया और प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा पूरी कर चुके छात्रों की सम्मान जनक पूर्वक विदाई की गई विदाई समारोह एवम पेरेंट्स मीटिंग कार्यक्रम मे रणविजय सिंह (पार्षद) संगम लाल पांडेय एसएमसी अध्यक्ष वीरेंद्र त्रिपाठी कोटेदार शैलेन्द्र कुमार श्रीमती नूतन शाक्य प्रधानाचार्या श्रीमती कल्पना वर्मा श्रीमती प्रीति तिवारी अजय कुशवाहा ओम कृष्ण पांडेय सहित अभिभावक क्षेत्र के गणमान्य लोग समारोह में उपस्थित रहे।

## सम्पादकीय

# बांग्लादेश को खो रहा भारत

**अदूरदर्शिता,** अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों की कच्ची समझ, बड़े व ताकतवर देशों के पिछलग्गू बनने तथा देश के बदले वैयक्तिक छवि को तरजीह देने वाली वैदेशिक नीति के चलते भारत का एक और पड़ोसी उसके प्रभाव से निकलता हुआ साफ दिख रहा है- बांग्लादेश। भारत के ज्यादातर पड़ोसी देशों के साथ भारत के अब वैसे मधुर सम्बन्ध नहीं रह गये हैं जो एक दशक पूर्व तक हुआ करते थे। जो मुल्क सांस्कृतिक सम्बन्धों के चलते रिश्तों में उतार-चढ़ाव के बावजूद भारत से जुड़े हुए थे, आज वे भी या तो दूर हो रहे हैं अथवा भारत के सबसे बड़े दुश्मन मुल्क चीन के प्रभाव में जा रहे हैं।

चीन बहुत रणनीतिक तरीके से भारत की घेराबन्दी कर रहा है। बांग्लादेश का मामला आश्चर्य के साथ दुखद भी है क्योंकि इसका निर्माण ही भारत की मदद से हुआ था- 1971 में। आज भी वहां से आये लाखों शरणार्थी भारत के नागरिक बनकर सुरक्षित व समृद्ध जीवन जी रहे हैं। भारत सरकार को अपनी कूटनीति पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। मोदी की व्यक्तिगत पसंदगी, आकांक्षाओं तथा छवि चमकाने का जरिया बनाने की बजाय उसे देश हित में ढाला जाना चाहिये ताकि दक्षिण एशिया में भारत का वह सम्मान तथा प्रतिष्ठा बनी रहे जो उसने 2014 में आई भारतीय जनता पार्टी की बनी केन्द्र सरकार के पहले के 60 वर्षों में अर्जित की थी।

शुरूआत यहां से करें कि पहली बार जब नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने थे तो उन्होंने सभी पड़ोसी मुल्कों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित कर सभी को चौंका दिया था। उनके इस कदम का स्वागत किया गया था और माना गया था कि वे पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं। उनके आमंत्रण को स्वीकार करते हुए दक्षेस (सार्क) देशों के सभी राष्ट्रप्रमुख आये थे। इस प्रतिसाद को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करने तथा उसका समझदारीपूर्ण लाभ उठाने के बदले भाजपा के आईटी सेल द्वारा यह प्रचारित किया गया कि पहली बार भारत की ताकत को विदेशी स्तर पर स्वीकारा जा रहा है और इसका कारण मोदी हैं। तत्पश्चात भारत लगातार अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति से हटता चला गया जिसमें व्यक्ति से बड़ा देश को मानने, सामूहिकता तथा छोटे-बड़े सभी देशों की सम्प्रभुता के सम्मान का भाव था। साथ ही, मोदी ने अपनी ऊर्जा बड़े देशों के पीछे भागने में लगायी। सर्वाधिक देशों का दौरा करने वाले वे पहले पीएम तो बने लेकिन ज्यादातर में उनकी उपस्थिति फोटो सेशन में प्रमुख जगह पर खड़े होने की रही। उनके समर्थक इसी बात में खुश होते रहे कि उनके मोदीजी को तस्वीर लेते समय महत्वपूर्ण स्थान पर खड़ा किया गया है।

कूटनीतिक सम्बन्धों को मोदी ने संकीर्ण नजरिये से देखा- एक तो खुद को विश्वगुरु साबित करना और दूसरे, अपने मित्र कारोबारियों को व्यवसाय दिलाना। श्रीलंका की संसद में उनके द्वारा गौतम अदानी को दिलाये गये बिजली संयंत्र के ठेके तथा फ्रांस में राफेल लड़ाकू जहाजों के सौदे में अनिल अंबानी को शामिल करने से उनके साथ देश की छवि खराब हुई।

# शक्ति पूजा का पर्व है नवरात्रि

**रमेश सर्राफ धमोरा**

**नवरात्रि** देवी दुर्गा के नौ अवतारों या स्वरूपों की पूजा करने का प्रसिद्ध त्योहार है। जिसे शक्ति या देवी के रूप में भी जाना जाता है। यह त्योहार एक बार वसंत ऋतु के दौरान चैत्र नवरात्रि और शरद ऋतु के दौरान शरद नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। शरद नवरात्रि अश्विन के महीने के दौरान मनाई जाती है जो आमतौर पर सितंबर या अक्टूबर में आती है। वहीं चैत्र नवरात्रि हिन्दू कैलेंडर के चैत्र महीने के दौरान मनाई जाती है। चैत्र नवरात्रि आमतोर पर मार्च या अप्रैल महीने में मनाई जाती है। नवरात्रि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है नौ रातें। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान शक्ति- देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवां दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है।

नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ़, अश्विन, पौष प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों महालक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के नौ स्वरुपों की पूजा होती है जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। दुर्गा का मतलब जीवन के दुख को हटानेवाली होता है। नवरात्रि एक महत्वपूर्ण प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। नवरात्रि का त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत को दर्शाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि साल में दो बार मनाया जाता है। हिंदी महीनो के मुताबिक पहला नवरात्रि चैत्र महीने में मनाया जाता है और दूसरी बार अश्विन महीने में मनाया जाता है। नवरात्रि नौ दिनों तक निरंतर चलता है जिसमे देवी माँ के अलग अलग स्वरूपों की लोग भक्ति और निष्ठा के साथ पूजा करते है। भारत में नवरात्रि अलग अलग राज्यों में विभिन्न तरीको और विधियों के संग मनाई जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता हैं।

नवरात्रि पर्व के नौ दिनों के दौरान आदिशक्ति जगदम्बा के नौ विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है। ये नौ दिन वर्ष के सर्वाधिक पवित्र दिवस माने गए हैं। इन नो दिनों का भारतीय धर्म एवं दर्शन में ऐतिहासिक महत्व है और इन्हीं दिनों में बहुत सी दिव्य घटनाओं के घटने की जानकारी हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों में मिलती है। माता के इन नौ रूपों को नवदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है जो इस प्रकार हैं - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघन्टा, कूष्माण्डा, स्कन्द माता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिध्दिदात्री।

नवरात्रि से हमें अधर्म पर धर्म और बुराई पर अच्छाई के जीत की सीख मिलती हैं। यह हमें बताती है की इंसान अपने अंदर की मूलभूत अच्छाइयों से नकारात्मकता पर विजय प्राप्ती और स्वयं के अलौकिक स्वरूप से साक्षात्कार कैसे कर सकता है। भारतीय जन-जीवन में धर्म की महत्ता अपरम्पार है। यह भारत की गंगा-जमुना तहजीब का ही नतीजा है कि सब धर्मों को मानने वाले लोग अपने-अपने धर्म को मानते हुए इस देश में भाईचारे की भावना के साथ सदियों से एक साथ रहते चले आ रहे हैं। यही कारण है की पूरे विश्व में भारत की धर्म व संस्कृति सर्वोतम मानी गयी है। विभिन्न धर्मों के साथ जुड़े कई पर्व भी है जिसे भारत के कोने कोने में श्रध्दा, भक्ति और धूमधाम से मनाया जाता है। उन्ही में से एक है नवरात्रि।

नवरात्रि के पहले दिन बालिकाओं की पूजा की जाती है। दूसरे दिन युवती की पूजा की जाती है। तीसरे दिन जो महिला परिपक्वता के चरण में पहुंच गयी है, उसकि पूजा की जाती है। नवरात्रि के चैथे, पांचवें और छठे दिन लक्ष्मी- समृद्धि और शांति की देवी की पूजा करने के लिए समर्पित है। आठवे दिन पर एक यज्ञ किया जाता है। नौवा दिन नवरात्रि समारोह का अंतिम दिन है। यह महानवमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन उन नौ जवान लड़कियों की पूजा होती है जो अभी तक यौवन की अवस्था तक नहीं पहुंची है। इन नौ लड़कियों को देवी दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है। लड़कियों का सम्मान तथा स्वागत करने के लिए उनके पैर धोए जाते हैं। पूजा के अंत में लड़कियों को उपहार के रूप में नए कपड़े, वस्तुयें, फल प्रदान किए जाते हैं।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशरू अलग-अलग पूजा की जाती है। मां दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है।

इस पर्व से जुड़ी एक कथा अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसको वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा। महिषासुर ने अपने साम्राज्य का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए।

महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा था तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की।

ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गईं थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततरू महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं। नवदुर्गा और दस महाविद्याओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दशमहाविद्या अनंत सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

वसन्त की शुरूआत और शरद ऋतु की शुरूआत, जलवायु और सूरज के प्रभावों का महत्वपूर्ण संगम माना जाता है। इन दो समय मां दुर्गा की पूजा के लिए पवित्र अवसर माने जाते है। त्योहार की तिथियां चन्द्र कैलेंडर के अनुसार निर्धारित होती हैं। यह पूजा वैदिक युग से पहले प्रागैतिहासिक काल से है। नवरात्रि के पहले तीन दिन देवी दुर्गा की पूजा करने के लिए समर्पित किए गए हैं। यह पूजा उनकी ऊर्जा और शक्ति की की जाती है। प्रत्येक दिन दुर्गा के एक अलग रूप को समर्पित है।

नवरात्रि के दौरान उपवास करने से शरीर से विषाक्त पदार्थ निकल जाते हैं, जिससे शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है। नवरात्रि के दौरान ध्यान, योग और भक्ति करने से मन को शांति मिलती है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है। नवरात्रि व्रत का मूल उद्देश्य है इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय। वस्तुतः नवरात्र अंतःशुद्धि का महापर्व है। आज वातावरण में चारों तरफ विचारों का प्रदूषण है। ऐसी स्थिति में नवरात्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

# आसान नहीं है डगर तीसरे टर्म की

**– राजेंद्र शर्मा**

**संभवतः** इसी बीच हासिल हुई प्रभावी जीतों से बढ़े हुए आत्मविश्वास के चलते, संघ-भाजपा राज ने आरएसएस के शताब्दी वर्ष में उसके पक्के एजेंडे को आगे बढ़ाने के जरिए अपनी वफादारी दिखाने के लिए, इस विधेयक को ठंडे बस्ते से बाहर निकाल लिया है। अब इस विधेयक को दोबारा लोकसभा में आगे बढ़ाए जाने का प्रस्ताव है। लेकिन, इसी बीच सामने आए घटनाक्रम ने, इस विधेयक के भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

बेशक, लोकसभा चुनाव में लगे धक्के से, जिसमें चार सौ पार के नारों से भाजपा, साधारण बहुमत से काफी नीचे, सिर्फ दो सौ चालीस सीटों पर आ टिकी थी, उसके बाद हुए विधानसभाई चुनावों में जीत जुगाड़ने के जरिए, भाजपा कम से कम मानसिक रूप से काफी हद तक उबरने में कामयाब रही है। लोकसभा चुनाव के बाद से हुए प्रमुख विधानसभाई चुनावों में दिल्ली से पहले तक भाजपा, वैसे तो हरियाणा तथा महाराष्ट्र की दो विधानसभाओं में ही जीत हासिल करने में कामयाब हुई थी, जबकि झारखंड तथा जम्मू-कश्मीर में, अपनी सारी कोशिशों के बावजूद उसे हार का मुंह देखना पड़ा था। इसके बावजूद, इन दो जीतों के सहारे ही भाजपा ने, जिसे अपने मनमुताबिक आख्यान गढ़ने तथा मीडिया पर अपने नियंत्रण के जरिए उसे चलाने में खास महारत हासिल है, सफलता के साथ यह माहौल बना दिया था कि लोकसभा चुनाव तो एक विचलन था और आमतौर पर जनता फिर से भाजपा के पीछे गोलबंद हो चुकी है। इसी पृष्ठभूमि में दिल्ली के विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद से, यह छवि और भी मजबूत हुई है कि मोदी के नेतृत्व में संघ-भाजपा जोड़ी ही चुनावी अजेयता फिर से लौट आई है और यहां से आगे मोदी राज की जीत ही जीत है। सिर्फ चुनावी जीत ही नहीं, आम तौर पर राजनीतिक जीत भी।

उनके इसी भरोसे की अभिव्यक्ति, मोदी राज के तेजी से ऐसे कदमों के रास्ते पर बढ़ने में होती है, जो सबसे बढ़कर आरएसएस के बहुसंख्यकों के अपने पक्ष में सुदृढ़ीकरण और बढ़ते हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण के एजेंडे की ओर ले जाते हैं। बेशक, यह किन्हीं खास कदमों का या आरएसएस द्वारा उठायी गयी खास मांगों तक ही सीमित सवाल नहीं है। मोदी राज के तीसरे कार्यकाल के करीब ग्यारह महीनों में खासतौर पर भाजपायी राज्य सरकारों के सहारे, हर साधारण से साधारण मुद्दे का सांप्रदायिक गोलबंदी के हथियार में तब्दील किया जाना, इस देश ने देखा है। इसमें पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संभल को, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के लिए एक और अयोध्या में तब्दील किया जाना भी शामिल है। इसमें महाकुंभ का ही नहीं, होली-ईद आदि सब का खुल्लमखुल्ला सांप्रदायीकरण भी शामिल है और भाजपा-शासित राज्यों में खासतौर पर मुस्लिम अल्पसंख्यकों के खिलाफ खुल्लमखुल्ला भेदभाव भी। जाहिर है कि आरएसएस के पुराने एजेंडे के अनुरूप, समान नागरिक संहिता का उत्तराखंड से शुरू कर, आगे बढ़ाया जाना भी इसमें शामिल है। इसी के हिस्से के तौर पर, संघ-भाजपा ने वक्फ संशोधन विधेयक का खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक हथियार गढ़ा और आगे कर दिया। बहरहाल, तभी इस मुद्दे पर वर्तमान मोदी सरकार के समर्थन की सीमाएं सामने आ गईं। जहां लोकसभा में इस विधेयक के पेश किए जाने के बाद, उसे न सिर्फ धर्मनिरपेक्ष विपक्षी पार्टियों के मुखर विरोध का सामना करना पड़ा, वहीं खुद सत्ताधारी एनडीए में शामिल तेलुगू देशम तथा जनता दल-यूनाइटेड जैसी पार्टियों के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष विरोध का भी सामना करना पड़ा; ये पार्टियां संघ-भाजपा के सांप्रदायिक एजेंडे का ज्यों का त्यों अनुमोदन करने में असुविधा महसूस कर रही थीं। इसी का नतीजा था कि एक दुर्लभ पैंतरा अपनाते हुए, मोदी राज को इस विधेयक का संयुक्त संसदीय समिति को सौंपा जाना स्वीकार करना पड़ा, ताकि इस पर विभिन्न पक्षों की और विस्तार से राय ली जा सके। यह एक प्रकार से इस विधेयक के ठंडे बस्ते में डाले जाने का ही पैंतरा था और उसे आम तौर पर उसी रूप में देखा जा रहा था।

लेकिन, संभवतः इसी बीच हासिल हुई प्रभावी जीतों से बढ़े हुए आत्मविश्वास के चलते, संघ-भाजपा राज ने आरएसएस के शताब्दी वर्ष में उसके पक्के एजेंडे को आगे बढ़ाने के जरिए अपनी वफादारी दिखाने के लिए, इस विधेयक को ठंडे बस्ते से बाहर निकाल लिया है। अब इस विधेयक को दोबारा लोकसभा में आगे बढ़ाए जाने का प्रस्ताव है। लेकिन, इसी बीच सामने आए घटनाक्रम ने, इस विधेयक के भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। वक्फ संशोधन विधेयक के पुनर्जीवित किए जाने की सुगबुगाहट होने के बाद से, धर्मनिरपेक्ष विपक्षी पा?टयों ने और भी दृढ़ता तथा स्पष्टता के साथ इसके खिलाफ आवाज तो उठायी ही है, इसके खिलाफ खुद मुस्लिम समुदाय भी एक स्वर से विरोध करने के लिए उठ खड़ा हुआ है। यहां तक कि इस बार रमजान-ईद के मौके पर, करोड़ों मुसलमानों ने काली पट्टियां बांधकर, इसके खिलाफ शांतिपूर्ण किंतु विराट सार्वजनिक प्रदर्शन किए हैं। इस सब का नतीजा यह हुआ कि एनडीए में भाजपा के, खुद को धर्मनिरपेक्ष दिखाने वाले सहयोगियों को संघ-भाजपा को परोक्ष रूप से यह संदेश देना पड़ा है कि इस मामले में उनके समर्थन को जेब में मानकर नहीं चला जाना चाहिए। जहां बिहार में, एक प्रमुख मुस्लिम मंच ने, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की इफ्तार पार्टी के बहिष्कार की घोषणा कर, उस राज्य में नीतीश कुमार पर दबाव बढ़ा दिया, जहां अगले छः महीने के अंदर-अंदर चुनाव होने जा रहे हैं। इस दबाव से निपटने के लिए नीतीश कुमार ने किस तरह, संबंधित मुस्लिम मंच के खिलाफ दमनकारी कार्रवाई और मुसलमानों के प्रति अपनी वफादारी के आम प्रदर्शन के दुहरे हथियार आजमाए हैं, इसकी चर्चा हम किसी और मौके पर करेंगे। यहां इतना कहना ही काफी है कि इस पूरे घटनाक्रम ने नीतीश कुमार को मुसलमानों के बीच अपनी छवि को, संघ-भाजपा से अलगाने के प्रति सचेत कर दिया है। उधर चंद्रबाबू नायडू ने विजयवाड़ा में आयोजित एक इफ्तारी के मंच का उपयोग, मुसलमानों को इसका भरोसा दिलाने के लिए किया कि, उनकी सरकार मुसलमानों के हितों की रक्षा करने की अपनी वचनबद्धता पर कायम है और रहेगी। वक्फ विधेयक विवाद की पृष्ठभूमि में उन्होंने खासतौर पर जोर देकर कहा कि मुसलमानों की जमीनों, परिसंपत्तियों पर किसी को भी बुरी नजर डालने इजाजत नहीं दी जाएगी। नायडू ने इसकी गारंटी भी दी। इसी दौरान राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी ने भी मेरठ तथा संभल आदि में ईद के मौके पर नवाज पर लगायी गयी पाबंदियों पर विरोध जताते हुए, इसका संबंध राज्य या शासन के ज्यादा से ज्यादा ऑर्वेलियनीय बनते जाने के साथ जोड़ा और कहा कि यह उन्हें हर्गिज मंजूर नहीं है। उधर बिहार में लोक जनशक्ति पार्टी के नेता चिराग पासवान ने सांप्रदायिक निहितार्थ वाले मुद्दों के उठाए जाने पर विरोध जताया और ऐसे मुद्दे उठाने के लिए अपने सहयोगियों तक को नहीं बख्शा।

इस तमाम हलचल से, जिसके केंद्र में मुस्लिम अल्पसंख्यकों को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर छोड़ दिए जाने की मोदी राज की मुहिम का विरोध या नकार है, सिर्फ वक्फ संशोधन विधेयक के भविष्य को लेकर ही नहीं, खुद मोदी राज को लेकर भी वास्तविक सवाल खड़े हो गए हैं। बेशक, यह कहने का अर्थ यह कतई नहीं है कि इस मुद्दे को लेकर चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार, वर्तमान मोदी सरकार को हिला देने वाले हैं। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। लेकिन, इतना जरूर है कि नायडू-नीतीश आदि की ओर से मोदी राज को इसकी चेतावनी मिल सकती है कि वह आरएसएस के प्रति अपनी वफादारी के प्रदर्शन में, उन्हें जबर्दस्ती नहीं घसीट सकता है। यह आरएसएस का शताब्दी वर्ष है। इसी सिलसिले में प्रधानमंत्री मोदी ने खुद नागपुर जाकर, आरएसएस के मुख्यालय में मत्था ही नहीं टेका है, सार्वजनिक रूप से आरएसएस की महानता का बखान भी किया है।

यह आरएसएस के विभाजनकारी सांप्रदायिक चरित्र को परंपरा तथा संस्कृति की चादर से ढांपने की ही कोशिश थी, जिसके बाद उसे शासन-तंत्र में और गहराई तक रोपा जाएगा। मोदी निजाम इसी रास्ते पर बढ़ता चाहता है और उसका अब तक का रिकार्ड यही दिखाता है कि वह इसी रास्ते पर चलने जा रहा है। लेकिन, उसके चंद्रबाबू नायडू तथा नीतीश कुमार जैसे क्षेत्रीय तथा खुद को धर्मनिरपेक्ष बताने वाले सहयोगियों को, उसके साथ बंधे-बंधे अपना इस रास्ते पर घसीटा जाना मंजूर नहीं है। संघ-भाजपा की स्वाभाविक सांप्रदायिक प्रेरणा और उनके राज के अल्पमत का ही राज होने की सच्चाई के बीच का अंतर्विरोध, आसानी से हल या शांत होने वाला नहीं है।

यह अंतर्विरोध मोदी राज की नैया डावांडोल नहीं भी करे, तब भी उसे हिलाता तो रहेगा ही और यह तीसरे कार्यकाल में मोदी की राह मुश्किल बनाने जा रहा है।

# भाजपा में मोदी का विकल्प नहीं

**– अरविन्द मोहन**

**दूसरे** खेमे के नेता भाजपा और मुल्क को संभालकर आगे ले जा सकते हों इसमें उनके मुठ्ठी भर दीवाने समर्थकों को छोड़कर किसी को भरोसा नहीं है। औरंगजेब के मकबरे के सवाल पर फड़नवीस और संभल के सवाल पर योगी सरकार के व्यवहार से यह साबित हुआ है कि ये नेता चाहे जितना फड़फड़ाएं, मोदी जी का विकल्प नहीं बन सकते।

नए संवत्सर की शुरूआत पर गुड़ीपड़वा के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय में संघ प्रमुख मोहन भागवत और प्रधानमंत्री की भेंट का इंतजार बहुत लोगों को था लेकिन जो आधिकारिक बातें निकालकर आईं उनसे ऐसा कोई संकेत नहीं मिला कि भाजपा के अध्यक्ष पद के उम्मीदवार समेत की बड़े मसलों पर इन दो शीर्षस्थ लोगों के बीच कोई निर्णयात्मक बात हुई। इस बीच अगर शिव सेना के संजय राऊत प्रधानमंत्री के उत्तराधिकारी वाली बहस न छेड़ते तो बातचीत का मसला न्यूज के हिसाब से फीका होकर एक किनारे लग गया होता। संजय राऊत से महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री देवेन्द्र फड़नवीस बहस में उतरे और यह कहा कि न तो भाजपा को कोई उत्तराधिकारी चाहिए और न इस मसले पर कोई चर्चा हुई। उन्होंने इस बात का भी खंडन किया कि मोदी का उत्तराधिकारी महाराष्ट्र से होगा। उनके अनुसार 75 वर्ष पर सक्रिय राजनीति से अलग होने का फैसला प्रधानमंत्री पर लागू नहीं होता और अगले चुनाव में भी नरेंद्र मोदी ही अगुआई करेंगे। संजय राऊत 75 वर्ष वाले मसले को उठाने के साथ फड़नवीस बनाम नितिन गडकरी जैसे सवालों को भी छेड़ रहे थे जो महाराष्ट्र और संघ परिवार की राजनीति के लिए काफी महत्व का है। लेकिन गौर से देखेंगे तो मोदी के उत्तराधिकार और भाजपा के अगले अध्यक्ष का सवाल पूरे मुल्क की राजनीति के हिसाब से काफी बड़ा है।

अब ऐसा भी नहीं है कि संघ प्रमुख और प्रधानमंत्री माइक/कैमरा लगाकर सारी चर्चा करते और हम आप सभी उनकी बातचीत और भाव भंगिमा को सीधे देख सुनकर जान जाते। ऐसा होता नहीं है। पर जिस तरह मोदी जी ने भाजपा के अपने से पुराने नेताओं की जमात को 75 पार के नाम पर सिरे से दरकिनार कर दिया उससे यह उत्सुकता तो होनी ही है कि उनका 75 पूरा होने पर क्या होता है। लेकिन इससे भी ज्यादा साफ मसला भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा द्वारा लोक सभा चुनाव के पहले यह कहना था कि अब भाजपा को संघ की जरूरत नहीं है। वह खुद से सक्षम बन चुकी है। संयोग से उसके बाद उनका कार्यकाल भी खत्म होना था और चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन खराब भी रहा। सो जब नई सरकार में उनको मंत्री बना दिया गया तो उन्होंने इस्तीफा दिया और नया अध्यक्ष चुने जाने तक कामचलाऊ अध्यक्ष के रूप में काम किए जा रहे है।

अब साल नजदीक आ रहा है और भाजपा नया अध्यक्ष नहीं चुन पाई है। जो बातें छन-छन कर सामने आती रहीं उनके अनुसार इसमें संघ द्वारा अपनी पसंद का आदमी लाना बड़ी वजह है जिससे साबित हों कि भाजपा अभी भी संघ से अलग नहीं है। दूसरी और व्यावहारिक बात भाजपा के कमजोर होने से संघ का हौसला बढ़ना है। और तब से यह काफी प्रचारित हुआ है कि राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में भाजपा ने संघ के सहारे ही हारती बाजी को पलटा है। इस लेखक की तरह काफी सारे लोग होंगे जिनकी दिलचस्पी भाजपा और संघ के संबंधों में किसके ऊपर और किसके नीचे होने में नहीं है। और यह गलतफहमी भी नहीं रखनी चाहिए कि कभी संघ और भाजपा जुदा होने या एक दूसरे का नुकसान करने जैसी स्थिति में आएंगे। पर हमारी दिलचस्पी नरेंद्र मोदी के उत्तराधिकारी में जरूर है और इसका उनके 75 साल का होने से भी कोई मतलब नहीं है। आडवाणी जी, मुरलीमनोहर जोशी, कलराज मिश्र से लेकर रविशंकर प्रसाद तक को जब उनकी सम्पूर्ण सक्रियता और काम करने की इच्छा के बाद भी दरकिनार कर दिया गया तो शायद ही किसी को अच्छा लगा। उनकी भरपाई मोदी जी ने कुछ पूर्व नौकरशाहों और दूसरे क्षेत्र के लोगों को साथ लेकर पूरी की। तीन-तीन चुनाव जितवाने वाले, अपनी सक्रियता और सारी स्थितियों पर पूरा कंट्रोल रखने वाले मोदी जी सिर्फ उम्र की सीमा के चलते किनारे हो जाएं तो यह भी अच्छा नहीं होगा। लेकिन उनके उत्तराधिकार का सवाल उससे ज्यादा बड़ा है। और दस ग्यारह साल के अपने शासन काल में उन्होंने स्थिति खुद भी ज्यादा मुश्किल बना ली है। आज राजनाथ सिंह और नितिन गडकरी को छोड़कर बाकी कोई नाम नहीं बचा है और अगर वे विकल्प बन सकते हैं तो मोदी में ही क्या हर्ज है।

मोदीजी के विकल्प का सवाल पूरे संघ परिवार या मोदी समर्थक जमात की मौजूदा स्थिति से भी जुदा है और इस लेखक ने जानबूझ कर अमित शाह का नाम दो बड़े लोगों के साथ नहीं जोड़ा क्योंकि उनका नाम आते ही उनके समर्थकों से ज्यादा विरोधी सक्रिय होंगे। वे कभी सारे लोगों या अधिकांश लोगों की पसंद नहीं बन सकते भले आज संगठन और सरकार में वे मोदी के बाद सबसे ताकतवर नेता हैं।

लेकिन ऐसा मोदी जी के समर्थन और रणनीति के चलते है। असल में यह पूरा जमात आज दो धड़ों में बंटता दिखता है और शाह जी सिर्फ एक धडे को मान्य लगते हैं। वे कमोबेश मोदी जी की छाया बनाकर रह गए हैं, अपना आधार बनाना भूल गए हैं या उनका वैसा आधार नहीं रहा है. दूसरी ओर हिन्दुत्व की ज्यादा उग्र नई भाषा बोलने के उस्ताद योगी आदित्यनाथ और फड़नवीस ही नहीं भाजपा के ज्यादातर मुख्यमंत्री अपने-अपने आधार के साथ उसमें वृद्धि करते जा रहे हैं।

अगर गोपनीय नाम वाले सोशल मीडिया समूहों की चर्चा को जरा भी भरोसेमंद मानें तो राजनाथ, गडकरी, शाह, नड्डा, शिवराज समेत सारे नरमपंथी हिंदुत्ववादी आज 'रायताज' खेमे में आ गए हैं।

# चकबंदी कार्यों की समीक्षा बैठक : उत्कृष्ट प्रदर्शन पर सम्मान, लापरवाहों पर सख्ती

● लापरवाह अधिकारियों पर गिरी गाज ● चकबंदी प्रक्रिया में तेजी के निर्देश

अखंड भारत संदेश

सहायक चकबंदी अधिकारी को सम्मानित करते डीएम

**चित्रकूट।** जिला कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में चकबंदी कार्यों की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में चकबंदी की गति तेज करने, प्रशासनिक जवाबदेही व किसानों को अधिकतम लाभ पहुंचाने पर जोर दिया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया, वहीं लापरवाह अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए।

चकबंदी कार्यों में बेहतरीन योगदान देने वाले सहायक चकबंदी अधिकारी सुभाष चंद्र श्रीवास्तव, राजीव कुमार, चकबंदी कर्ता छत्रपाल, ओम प्रकाश शर्मा, सुनील कुमार तथा चकबंदी लेखपाल निलेश कुमारी, अमित राणा, देवेंद्र कुमार साहू, नीरज कुमार एवं नागेंद्र कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। डीएम ने निर्देश दिए कि अधिकारी गांवों में जाकर लंबित चकबंदी वादों का त्वरित निस्तारण करें ताकि किसानों को अधिकतम लाभ मिल सके। लेखपालों को सर्वे, तरमीम एवं पड़ताल के कार्यों में तेजी लाने का आदेश दिया गया। साथ ही, वर्ष 2025-26 के लक्ष्यों को समयबद्ध ढंग से पूरा करने पर जोर दिया गया। बैठक में चकबंदी अधिकारी शरद चंद्र यादव व शैलेन्द्र द्विवेदी की अनुपस्थिति दर्ज की गई, जिस पर डीएम ने बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी मनोहर लाल वर्धन को निर्देश दिए कि दोनों को कारण बताओ नोटिस जारी किया जाए। बैठक में उपसंचालक चकबंदी/अपर जिलाधिकारी न्यायिक चित्रकूट राजेश प्रसाद सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

## मानचित्र समाधान दिवस का आयोजन

सचिव चित्रकूट विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण/अपर जिलाधिकारी न्यायिक राजेश प्रसाद ने बताया कि प्राधिकरण क्षेत्रांतर्गत स्वीकृत मानचित्रों के त्वरित निस्तारण को माह के प्रथम गुरुवार को अपराह्न 01 बजे से 05 बजे तक प्राधिकरण कार्यालय में मानचित्र समाधान दिवस होगा। अप्रैल 2025 में दिनांक 03, 17 एवं 24 को समाधान दिवस में सभी संबंधित भवन मानचित्र प्रस्तुतकर्ता, संबंधित विभाग एवं सभी अनुज्ञा प्राप्त मानचित्रकार/आर्किटेक्ट रहेंगे। जिससे सम्बंधित मानचित्र की आपत्तियों का तत्काल निराकरण कर भवन मानचित्र स्वीकृति की प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी।

## निर्माण श्रमिकों के हित में जनजागरूकता अभियान

**चित्रकूट।** सहायक श्रमायुक्त आरके गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश भवन एवं सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के निर्देश पर निर्माण श्रमिकों के पंजीयन, नवीनीकरण एवं योजनाओं के लाभ को जनजागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में जनपद के सभी लेबर अड्डा, ब्लॉक, तहसील, नगर पालिका व नगर पंचायत स्तर पर 01 अप्रैल से 30 अप्रैल तक कैम्प लगेंगे। इस अभियान में विकासखण्ड कर्वी, पहाड़ी, रामनगर, मानिकपुर और मऊ के विभिन्न स्थानों पर निर्धारित तिथियों पर पंजीयन और नवीनीकरण के लिए विशेष कैम्प लगाए जाएंगे। जैसे- कर्वी में 2, 8 और 15 अप्रैल, पहाड़ी में 3, 11 और 17 अप्रैल, रामनगर में 5, 13 और 21 अप्रैल, मानिकपुर में 7, 15 और 23 अप्रैल और मऊ में 9, 17 और 25 मई को कैम्प आयोजित होंगे। इसके अलावा, लेबर अड्डा ट्रैफिक चौराहा, सीतापुर, मानिकपुर बस स्टैंड और सहायक श्रमायुक्त कार्यालय कर्वी में भी कैम्प आयोजित होंगे।

## न्यूज झरोखा

### टाईड एवं अनटाइड फंड से नगरपालिका/नगरपँचायत कराये विकास कार्य : जिलाधिकारी

**बाँदा।** जिलाधिकारी जे० रीभा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में नगर निकाय के अन्तर्गत टाइड एवं अनटाइड फण्ड से नगर पालिका एवं नगर पंचायतों में कराये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभिन्न नगर निकायों में कराये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में अध्यक्ष नगर पालिका एवं नगर पंचायत तथा अधिशाषी अधिकारियों के साथ किये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देशित किया कि शासन के निर्देशानुसार टाइड एवं अनटाइड फण्ड से कार्यों को कराये जाने का प्रस्ताव शीघ्र संशोधित कर प्रस्तुत किये जायें। बैठक में नगर पालिका बाँदा में दो पार्कों का निर्माण कराये जाने एवं वाटर कूलर लगाये जाने तथा अन्य कार्यों को कराये जाने के सम्बन्ध में विचार विमर्श किया गया। उन्होंने एमआरएफ सेन्टर के कूड़ा निस्तारण किये जाने का प्रस्ताव भी प्रस्तुत करने के निर्देश दिया। बैठक में मटौंध नगर पंचायत में एम०आर०एफ० सेन्टर की बाउन्ड्रीवाल, कान्हा गौशाला का इण्टरलाकिंग कार्य तथा वाटर टैंकर आदि क्रय किये जाने, नरैनी में 02 पाइपलाइन विस्तार, पानी टैंकर, कूड़ादान एवं सालिड वेस्ट मैनेजमेन्ट हेतु कार्यों को कराये जाने के प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया गया। बिसण्डा में ट्रैक्टर ट्राली क्रय हेतु, कुओं का विकास, जेसीबी आदि के क्रय किये जाने के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए सम्बन्धित नगरपालिका एवं नगर पंचायतों की संशोधित प्रस्ताव शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। बैठक में अपर जिलाधिकारी वि०/रा० राजेश कुमार सहित नगर निकाय के अध्यक्ष एवं समस्त अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका एवं नगर पंचायत उपस्थित रहे।

### आपात स्थिति से निपटने के लिए पुलिस द्वारा किया गया दंगा नियंत्रण ड्रिल अभ्यास

**बाँदा।** बलबा, दंगा तथा अन्य आपात स्थितियों से प्रभावी रुप से निपटने के लिए पुलिस लाइन में किया गया दंगा नियंत्रण ड्रिल का अभ्यास । एंटीराइट गन, आंसू गैस, चिल्ली बम, रबर बुलेट, प्लास्टिक पैलेट आदि हथियारों का प्रयोग कर स्थितियों से निपटने का किया गया अभ्यास । पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल के कुशल निर्देशन में जनपद में शांति एवं कानून व्यवस्था को बनाए रखने व किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पुलिस लाइन में संपूर्ण अस्त्र-शस्त्रों के साथ बलवा ड्रिल का अभ्यास किया गया जिसमें पुलिसकर्मियों द्वारा दंगा नियंत्रण अभ्यास के साथ-साथ किसी भी आपात स्थिति को नियंत्रित करने का अभ्यास किया गया । जिसमें शस्त्रों का वास्तविक प्रयोग किया गया । पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल द्वारा पुलिस कर्मियों को सदैव सभी दंगा निरोधी उपकरणों से सुसज्जित रहने व स्थिति पर सतर्क दृष्टि बनाये रखने के साथ-साथ दंगा नियंत्रण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई । बलवा नियंत्रण हेतु प्रयोग किए जाने वाले सभी शस्त्रों जैसे एंटीराइट गन, प्लास्टिक पैलेट, रबर बुलेट, आंसू गैस के गोले, चिल्ली बम आदि हथियारों का प्रयोग कराते हुए सभी पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षित किया गया । पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी को निर्देशित किया गया कि सभी थाने अपने दंगा नियंत्रण संबंधी सभी उपकरण सदैव तैयार रखें तथा किसी भी आपात स्थिति की सूचना पर त्वरित रिस्पांस दें । अभ्यास के दौरान जनपद के सभी क्षेत्राधिकारी. प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन, सभी प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष तथा अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे ।

### एटीएम मशीन से छेड़छाड़ व फ्राड करने वाले अन्तर्जनपदीय तीन आरोपी आये पुलिस की गिरफ्त मे

अभियुक्तों के पास से 28500 मास्टर चाबी प्लास्टिक शटर बरामद

**बाँदा।** एटीएम में कैश ट्रैपिंग की घटनाओं को अंजाम देने वाले अन्तर्जनपदीय गिरोह के 03 अभियुक्तों को थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने तथा साइबर अपराधियों पर की जा रही कार्यवाही के क्रम में एटीएम में कैश ट्रैपिंग करने वाले हिमांशु पटेल पुत्र रामप्रकाश उम्र 22 निवासी बाबू पुर थाना चाँदपुर जनपद फतेहपुर आकाश पटेल पुत्र शिवदास उम्र 21 निवासी शुकलनपुर थाना जाफरगंज फतेहपुर विवेक सिंह पटेल पुत्र स्व. रामगोपाल निवासी शुकलनपुर बरवा थाना जाफरगंज फतेहपुर को 28500/-नकदी व एट मास्टर चाबी प्लास्टिक शटर के साथ थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया । गौरतलब हो कि गिरफ्तार अभियुक्तों द्वारा आईडीबीआई एटीएम में मशीन से छेड़छाड़ कर फ्रॉड करने का मामला संज्ञान में आया था जिस पर पुलिस द्वारा कार्यवाही की गई।

## खेलों के विकास के नायक विजय कुमार को भावभीनी विदाई

कबड्डी खिलाड़ियों के साथ विजय कुमार

अखंड भारत संदेश

**चित्रकूट।** आकांक्षी जनपद चित्रकूट में खेलों को नई पहचान दिलाने वाले क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी विजय कुमार को खिलाड़ियों व अधिकारियों ने सम्मानपूर्वक विदाई दी। खिलाड़ियों ने कबड्डी खेलकर उनके योगदान को सराहा, वहीं डीएम ने उन्हें पगड़ी पहनाकर और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। विजय कुमार ने खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं दिलाने और उन्हें प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। उनकी प्रेरणा से वॉलीबॉल टीम ने विजय हासिल की, जबकि सपना देवी ने जैवलिन थ्रो में प्रथम स्थान प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया। इस वर्ष चित्रकूट से 46 टीमों ने प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जो उनकी सफलता को दशार्ता है। विदाई समारोह में जिला समाज कल्याण अधिकारी, युवा कल्याण अधिकारी, खेल प्रशिक्षकों, खिलाड़ियों और स्टाफ ने विजय कुमार को स्मृति चिन्ह व फूल-मालाओं से सम्मानित किया। विजय कुमार ने भावुक होते हुए कहा कि चित्रकूट जब भी उन्हें खेलों के विकास के लिए बुलाएगा, वे सदैव तत्पर रहेंगे।

## इमली के पेड़ में लगी आग, यातायात में हुई भारी रुकावट

**चित्रकूट।** मानिकपुर-कर्वी मुख्य मार्ग पर अचानक एक गंभीर घटना ने यातायात को पूरी तरह से प्रभावित कर दिया। खरौध गांव के पास सड़क किनारे खड़ा एक विशाल इमली का पेड़ आग लगने के कारण जलकर सड़क पर गिर गया, जिससे मार्ग पर यातायात बाधित हो गया और वाहन घंटों फंसे रहे। घटना के बाद, सड़क पर भारी यातायात जाम लग गया। दोनों दिशा में एक दर्जन से ज्यादा वाहन फंसे हुए थे। यात्री घंटों इंतजार करने को मजबूर हो गए। मार्ग पर कोई वैकल्पिक रास्ता न होने के कारण वाहन चालकों को ग्रामीण इलाके में रास्ता ढूंढने में भी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस घटना के कारण यात्रियों में हलचल व चिंता का माहौल बन गया। घटना की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। इसके बाद, लोगों की मदद से पेड़ को काटकर सड़क से हटाया गया। साथ ही, फायर ब्रिगेडह्न को भी सूचित किया गया था, ताकि आग को पूरी तरह से बुझाया जा सके। फिलहाल, यातायात बहाल कर दिया गया हैं।

## भाजपा ने तैयार की आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा

● कार्यकर्ताओं को मिली जिम्मेदारी

● 852 बूथों पर मनेगा स्थापना दिवस

अखंड भारत संदेश

बैठक में कार्यक्रम को लेकर चर्चा करते भाजपाई

**चित्रकूट।** भारतीय जनता पार्टी के संगठन पर्व के पर भाजपा चित्रकूट की बैठक जिलाध्यक्ष महेंद्र कोटार्य की अध्यक्षता में भाजपा कार्यालय में हुई। बैठक में कानपुर-बुंदेलखंड क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष एवं जिला प्रभारी अनिल यादव मुख्य अतिथि मौजूद रहे। जिसमे पार्टी संगठन को और अधिक सशक्त बनाने तथा आगामी कार्यक्रमों की रणनीति पर चर्चा हुई।

बैठक की शुरूआत में कार्यक्रम संयोजक आनंद पटेल ने सरकार के आठ वर्षों की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए बताया कि इस अवधि में सरकार ने विकास कार्यों व जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से प्रदेश को एक नई दिशा दी है। जिला प्रभारी अनिल यादव ने बैठक को संबोधित करते हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। बताया कि 6 अप्रैल को भाजपा स्थापना दिवस के मौके पर पार्टी कार्यालय में भव्य कार्यक्रम होगा। 7 अप्रैल को जिले के सभी 852 बूथों पर स्थापना दिवस समारोह होगा। 8 व 9 अप्रैल को विधानसभा वार सक्रिय सदस्य सम्मेलन होगा, जबकि 7 से 12 अप्रैल तक गांव चलो अभियान में लाभार्थियों से संपर्क किया जाएगा। साथ ही, युवा मोर्चा बाइक रैली निकालेगी व महिला मोर्चा महिला संपर्क अभियान का संचालन करेगा।

बैठक में जिलाध्यक्ष महेंद्र कोटार्य ने कहा कि पार्टी के होने वाले कार्यक्रमों की सफलता को संयोजकों व सह-संयोजकों की नियुक्ति कर दी गई है। मंडल स्तर पर कार्यों का विभाजन पूरा हो चुका है और सभी कार्यकताओं को अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा और ऊर्जा के साथ निभाने का निर्देश दिया गया है। बैठक में पूर्व जिलाध्यक्ष दिनेश तिवारी, चंद्रप्रकाश खरे, राजेश जायसवाल, आनंद पटेल, राजीव त्रिपाठी, आलोक पांडेय, अश्विनी अवस्थी अन्य मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त, हरिओम करवरिया, ब्रजेश पांडे, अंजू बर्मा, विपुल प्रताप सिंह, मनोज तिवारी, प्रेमलाल वाल्मीकि, विकास मिश्र समेत बड़ी संख्या में कार्यकताओं ने बैठक में भाग लिया। भाजपा मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी ने जानकारी दी कि आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए पार्टी कार्यकर्ता पूरी निष्ठा और जोश के साथ कार्य करेंगे।

## वक्फ विधेयक पर पुलिस की कड़ी नजर कानून व्यवस्था में सुदृढ़ता का संकल्प

● थानाध्यक्षों को सतर्कता के आदेश

● सोशल मीडिया पर पैनी नजर, हाई-एलर्ट

अखंड भारत संदेश

मौके पर चर्चा करते एसपी

**चित्रकूट।** वक्फ संशोधन विधेयक के लोकसभा में पेश होने के मद्देनजर पुलिस प्रशासन ने कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने को एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया। एसपी ने समस्त क्षेत्राधिकारी, थाना और चौकी प्रभारियों के साथ बैठक में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

इस बैठक का मुख्य उद्देश्य विधेयक के लोकसभा में पेश होने के बाद किसी भी प्रकार की असमंजस, अफवाह या सार्वजनिक हलचल से निपटना था। एसपी ने सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि आगामी दिनों में कानून व्यवस्था को प्रभावी तरीके से बनाए रखने के लिए सतर्क और चौकस रहना आवश्यक होगा। साथ ही, उन्होंने प्रत्येक थाना और चौकी को सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि कोई भी अप्रिय घटना या सार्वजनिक असहमति न हो, और क्षेत्रीय पुलिस के द्वारा स्थिति पर कड़ी नजर रखी जाए। पुलिस को हर स्तर पर संवेदनशीलता और पारदर्शिता बनाए रखने की सलाह दी गई, ताकि आम जनता में सुरक्षा की भावना बनी रहे। वक्फ संशोधन विधेयक की संवेदनशीलता को समझते हुए पुलिस ने अपनी रणनीतियों को और मजबूत किया है, जिससे किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना को रोका जा सके। पुलिस अधीक्षक ने अधिकारियों से यह भी कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों पर हो रही चचाओं को भी ट्रैक करें और समय रहते जरूरी कदम उठाएं।

## प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा के नाम पर कारोबार, अभिभावक बेबस

● सीएम का स्कूल चलो अभियान बैकफुट पर

● अनुज यादव ने डीएम को लिखा पत्र

**चित्रकूट।** जैसे ही मार्च में परीक्षाएं समाप्त हुईं, वैसे ही जिले में प्राइवेट स्कूलों का एक नया सीजन शुरू हो गया। नए क्लास में एडमिशन का सीजन। लेकिन इस सीजन में शिक्षा के नाम पर प्राइवेट स्कूलों ने बच्चों से लूट और कमाई का नया तरीका अपना लिया है, जिसे देखकर हर कोई मजबूर है।

जिले के कई प्राइवेट स्कूलों ने पुस्तकों, शीट्स व ड्रेस के नाम पर अभिभावकों का खुला शोषण शुरू कर दिया है। बच्चों के माता-पिता को इन स्कूलों के प्रबंधन द्वारा ऐसे सामान खरीदने को मजबूर किया जा रहा है, जिनकी कीमत वास्तविक कीमत से कहीं अधिक है। स्कूल प्रशासन ने बच्चों को यह दबाव डालकर कहा है कि विशेष दुकानों से ही सामग्री खरीदें, व उन दुकानों को स्कूल प्रशासन से हाई कमीशन मिलता है। जबकि सच यह है कि इन दुकानों पर जो सामग्री बिक रही है, वह औने-पौने दामों पर बेची जा रही है, और यदि कोई अभिभावक इन दुकानों से सामान लेने से मना कर देता है, तो स्कूल में बच्चों का नाम काटने की धमकी दी जाती है, और उन्हें बेइज्जत किया जाता है। यह न केवल बच्चों व उनके माता-पिता के साथ अन्याय है, बल्कि शिक्षा के पवित्र उद्देश्य का अपमान है। जहां सीएम स्कूल चलो अभियान चलाकर बच्चों को स्कूल जाने को जागरूक कर रहे हैं वहीं शिक्षा के नाम पर ऐसी लूट-पाट बडे सवाल खडे कर रही है। इन घिनौनी हरकतों के खिलाफ अनुज यादव पूर्व जिलाध्यक्ष व समाजवादी पार्टी के राज्य कार्यकारिणी सदस्य ने डीएम को पत्र देकर उचित कार्रवाई की मांग की है। अनुज यादव का कहना है कि यह शिक्षा के नाम पर एक बड़ा भ्रष्टाचार है और ऐसे स्कूलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए।

## बरगढ़-मझियारी स्टेशन के पास मिला ग्रामीण का शव

**चित्रकूट।** मुंबई-हावड़ा रेलमार्ग पर बुधवार की सुबह एक अज्ञात ग्रामीण का शव बरगढ़-मझियारी रेलवे स्टेशन के बीच पटरी पर पाया गया। परिजनों का कहना है कि मृतक मुन्नालाल कोल (50) रेल पटरी पार करते समय ट्रेन की चपेट में आ गए। वहीं, कुछ प्रत्यक्षदर्शी इस घटना को आत्महत्या का रूप देते हुए कह रहे हैं कि मुन्नालाल ने ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दी। मृतक की पत्नी राजकली ने बताया कि वह कई सालों से ओबरी स्थित मायके में अपने पति के साथ रहती थीं। बुधवार की सुबह मामूली विवाद के बाद मुन्नालाल बिना कुछ बताए घर से बाहर निकल गए थे, और बाद में यह घटना सामने आई। पुलिस थाना प्रभारी पंकज तिवारी ने कहा कि घटना की जानकारी पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया। शव बरगढ़-मझियारी स्टेशन के मध्य गेट संख्या 411 डाउन रेलवे ट्रैक के पास पड़ा हुआ था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

## चित्रकूट गौरव दिवस पर 11 लाख दीपों से सजेगा शहर

बैठक में जानकारी देते एसडीएम पूजा साहू

अखंड भारत संदेश

**चित्रकूट।** नगर पालिका सभासद अरुण कुमार त्रिपाठी व नगर पालिका ईओ लाल जी यादव के नेतृत्व में रामनवमी पर चित्रकूट गौरव दिवस मनाने को एसडीएम पूजा साहू की अध्यक्षता में परिक्रमा मार्ग कामदगिरि नगर पर एक बैठक हुई। बैठक में यह फैसला लिया गया कि चित्रकूट में रामनवमी के पावन अवसर पर लगभग 11 लाख दीपक जलाए जाएंगे। नगर पालिका परिषद ने 51,000 दीपक जलाने का लक्ष्य स्वयं निर्धारित किया है, जबकि अन्य प्रतिष्ठानों द्वारा करीब 6.30 लाख दीपक जलाए जाने का प्रावधान किया गया है। इस विशेष अभियान में समस्त नागरिकों से अनुरोध किया गया है कि 6 तारीख को अपने घरों के सामने 11 दीपक अवश्य जलाएं। इस आयोजन में व्यवसायियों, होटल एसोसिएशन, रेस्टोरेंट, ऑटो एजेंसियों, प्रिंट मीडिया व दुकानदारों से भी अपील की गई है कि वे इस विशेष अभियान में भाग लेकर कम से कम 1100 से 1500 दीपक जलाएं।

## जिलाधिकारी ने विद्मालयो का किया औचक निरीक्षण

**बाँदा।** जिलाधिकारी जे0रीभा ने पं०दीनदयाल उपाध्याय राजकीय माडल इ०का० पचनेही, राजकीय बालिका इ०का० तिन्दवारी एवं राजकीय हाईस्कूल अमलीकौर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान प्रोजेक्ट अलंकार योजनान्तर्गत बन रहे मल्टीपरपज हाल, शौचालय तथा समग्र शिक्षा योजनान्तर्गत बन रहे कम्प्यूटर लैब एवं इण्टरकालेज अमलीकौर के भवन का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा निर्माण में प्रयुक्त की जा रही सामग्री का परीक्षण करते हुये निर्माण की गुणवत्ता मानक के अनुसार रखने तथा निर्धारित समयान्तर्गत कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिये गये। विद्यालयों में साफ-सफाई रखने, अधिक से अधिक नामांकन करने, निर्धारित समय से पठन-पाठन करने तथा शैक्षणिक गुणवत्ता बनाये रखने के निर्देश प्रदान किये गये। निरीक्षण के दौरान जिला विद्यालय निरीक्षक दिनेश कुमार, सम्बन्धित कार्यदायी संस्था के अवर अभियन्ता उपस्थित रहे।

## दबंग सचिव के गुर्गों ने गरीब मजदूर को लात-घूंसों से पीटा, वीडियो वायरल

● प्रशासन पर उठे सवाल

● पद के मद में चूर सचिव

**मऊ (चित्रकूट)।** मऊ विकासखंड कार्यालय में एक ऐसी हैरान कर देने वाली घटना सामने आई है, जिसने प्रशासन की कार्यशैली व अधिकारियों की संवेदनहीनता को पूरी तरह से उजागर कर दिया है। यहां के दबंग सचिव के गुर्गों ने एक गरीब मजदूर को बेरहमी से लात-घूंसों से पीटकर बुरी तरह जख्मी कर दिया। यह दर्दनाक दृश्य अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है, जिससे सरकारी कार्यप्रणाली के खिलाफ गुस्से की लहर दौड़ गई है।

बताया कि घटना मऊ विकास खंड कार्यालय के पास की है, जहां एक मजदूर को कुछ दिन पहले ग्राम पंचायत अधिकारी, के आवास पर विंडो और जाली लगाने का काम दिया गया था। बताया कि काम के बदले उसे 20 हजार रुपये की उधारी मिली थी, लेकिन इसी रकम को लेकर सचिव और मजदूर के बीच फोन पर गाली-गलौच हुई। इसके बाद, सचिव ने जाहिर अली को पैसे लेने के लिए बुलाया और कहा कि वह उसे 5 हजार रुपये दे देगा।

जब जाहिर अली 5 हजार रुपये लेने मऊ विकास खंड कार्यालय के पास पहुंचा, तो आरोप लगया कि सचिव के कुछ गुंडे मौके पर पहुंचे और बिना किसी वजह के उसे बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि आधा दर्जन लोग जाहिर अली को जमीन पर गिरा कर बेरहमी से लात-घूंसों से मार रहे हैं। यह सिर्फ एक मजदूर की मारपीट का मामला नहीं है, बल्कि यह दशार्ता है कि कैसे सत्ता और ताकत का दुरुपयोग किया जा रहा है, जबकि सरकार को जनता की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं इस संबंध में सीओ मऊ से बात की गई तो उन्होने बताया कि कोई 100 रूपए का लेन देन का विवाद है, कोई शिकायत नही मिली। शिकायत मिलने पर जांच कर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

## हत्या के आरोपी को दस हजार जुर्माने के साथ हुई उम्रकैद

**बाँदा।** निष्पक्ष विवेचना, प्रभावी अभियोजन एवं पैरवी के फलस्वरुप थाना मरका क्षेत्र में वर्ष-2011 में व्यक्ति को जान से मारने वाले अभियुक्त को दिलाई गई आजीवन कारावास व 10 हजार रुपये जुमार्नें की सजा ।वर्ष-2011 में थाना मरका क्षेत्रान्तर्गत ग्राम साड़ा में व्यक्ति को जान से मारने वाले अभियुक्त को आजीवन कारावास व जुमार्ने की सजा हुयी गौरतलब हो कि दिनांक 17/18.02.2011 को थाना मरका क्षेत्र के ग्राम साड़ा में पप्पू उर्फ उदयवीर सिंह द्वारा थाना पैलानी क्षेत्र के ग्राम अलोना के रहने वाले प्रेम सिंह उर्फ बबलू पुत्र जागेश्वर सिंह की लाठी डण्डे से मारकर हत्या कर दी थी जिसके सम्बन्ध में दिनांक 21.02.2011 को मृतक के भाई मान सिंह द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर थाना मरका में मु0अ0सं0 16/11 धारा 302/306 भादवि पंजीकृत किया गया था जिसकी विवेचना निरी0 राकेश कुमार मिश्रा द्वारा सम्पादित की गयी । विवेचक द्वारा प्रभावी विवेचना करते हुए अभियुक्त को गिरफ्तार करते हुए आरोप पत्र मा0 न्यायालय प्रेषित किया गया था।

## श्री रघुवीर मंदिर में रामकथा का अमृत प्रवाह, शिव-पार्वती विवाह प्रसंग सुन भाव-विभोर हुए श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

कथा में आशीर्वाद देते गुरू

**चित्रकूट।** परमहंस संत रणछोड़ दास महाराज के करकमलों से प्रतिष्ठित श्री रघुवीर मंदिर ट्रस्ट बड़ी गुफा में चल रही नौ दिवसीय रामकथा में श्रद्धालु भक्ति रस में सराबोर हो रहे हैं। बरेली से पधारे स्वामी रामकिंकर महाराज के कृपा पात्र उमाशंकर व्यास अपनी मधुर वाणी से कथा का संगीतमय प्रवाह कर रहे हैं। कथा के तीसरे दिन श्रद्धालुओं ने शिव-पार्वती विवाह प्रसंग का रसपान किया और भक्ति में डूब गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ सद्गुरु सेवा संस्थान के अध्यक्ष विषद भाई मफतलाल की धर्मपत्नी श्रीमती रूपल ने रामकथा पोथी और महाराज जी के पूजन-अर्चन से हुआ। तत्पश्चात, उमाशंकर व्यास ने शिव-पार्वती विवाह की कथा सुनाते हुए बताया कि जब भगवान शंकर दूल्हा बने, तो उनके सिर पर जटाओं का मुकुट, कानों में सर्पों के कुंडल और गले में नागों की माला थी। बैल पर सवार यह बारात जब राजा हिमाचल के द्वार पहुंची तो माता मैना घबराकर अंदर चली गईं और नारद मुनि को कोसने लगीं। लेकिन नारद जी, सप्तऋषियों और राजा हिमाचल ने उन्हें समझाया कि शिव ही अनुपम वर हैं। अंततः विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ। कथा सुनकर भक्तगण भाव-विभोर हो गए और जयकारों से माहौल भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर चित्रकूट के साधु-संतों, गुरु भाइयों-बहनों, आम श्रद्धालुओं और सद्गुरु परिवार के सदस्यों की भारी उपस्थिति रही।

# ट्रंप की 'टैरिफ घोषणा' का दुनिया को इंतजार : 'बड़ी बातें' जिन्हें जानना जरूरी

**वाशिंगटन। अमेरिकी** राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 2 अप्रैल को व्यापक टैरिफ लागू करने की तैयारी कर रहे हैं, जिसे व्हाइट हाउस ने 'मुक्ति दिवस' नाम दिया है। हालांकि अभी कई बात साफ नहीं है कि टैरिफ कैसा होगा और कब लागू होगा?

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ट्रंप कह चुके हैं कि टैरिफ रेसिप्रोकल/पारस्परिक होंगे। इसका मतलब है कि देशों पर वही शुल्क लगाया जाएगा जो वे अमेरिका पर लगाते हैं।

यह स्पष्ट नहीं है कि टैरिफ का प्रभाव किस देश पर पड़ेगा, या क्या वे सभी के लिए समान होंगे? लेकिन, एक बात स्पष्ट है कि अमेरिका में प्रवेश करने वाली कारों पर 25% का नया आयात कर 3 अप्रैल से लागू हो जाएगा, और अगले कुछ महीनों में कार के पुर्जों पर भी यही टैक्स लगेगा।

कुछ टैरिफ पहले ही लागू किए जा चुके हैं। मार्च में अमेरिका में प्रवेश करने वाले सभी स्टील और एल्युमीनियम पर फ्लैट ड्यूटी को बढ़ाकर 25 फीसदी कर दिया गया।

ट्रंप ने पहले ही चीन से आयातित सभी वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ाकर 20% कर दिया। कनाडा और मैक्सिको से आने वाली कुछ वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ा दिया।.

कनाडा ने टैरिफ पर जवाबी कार्रवाई करते हुए अमेरिकी स्टील और एल्युमीनियम पर 25% शुल्क लगाया, जबकि चीन ने भी कुछ अमेरिकी कृषि उत्पादों पर 10-15% टैक्स लगाया।

ट्रंप का तर्क है कि टैरिफ से अमेरिकी मैन्युफैक्चरर को मदद मिलेगी क्योंकि इससे उपभोक्ता अमेरिकी निर्मित सामान खरीदने के लिए प्रोत्साहित होंगे। हालांकि विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि इससे कीमतें बढ़ सकती हैं और व्यापार युद्ध शुरू हो सकता है। यूरोपीय संघ (ईयू) का कहना है कि वह जवाबी कार्रवाई के लिए तैयार है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक व्हाइट हाउस ने कहा कि ट्रंप अंतिम समय में बातचीत के लिए तैयार हैं, 'कुछ' देशों ने घोषणा की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति को फोन किया।

टैरिफ विदेश से आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर है, और यह आमतौर पर उत्पाद के मूल्य का एक प्रतिशत होता है। विदेशी सामान खरीदने वाली कंपनियों को कर का भुगतान करना पड़ता है।

## अमेरिका दो अप्रैल को टिकटॉक प्रस्ताव पर विचार करेगा

**वाशिंगटनः अमेरिका** दो अप्रैल को संभावित टिकटॉक सौदे के अंतिम प्रस्ताव पर विचार करेगा।

सीबीएस न्यूज ब्रॉडकास्टर ने मंगलवार को सूत्रों का हवाला देते हुए यह रिपोर्ट दी।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प , उपराष्ट्रपति जेडी वेंस, वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार माइकल वाल्ट्ज और राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड सहित प्रमुख प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ओवल ऑफिस में मुलाकात करेंगे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका इस सौदे पर अपनी योजनाओं को अंतिम रूप दे रहा है जिसमें ब्लैकस्टोन और ओरेकल के साथ-साथ ब्लू-चिप प्राइवेट इक्विटी फर्म, वेंचर कैपिटल कंपनियां और प्रमुख प्रौद्योगिकी क्षेत्र के निवेशक जैसे अन्य निवेशक शामिल हो सकते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार अमेरिकी कांग्रेस ने पिछले साल एक विधेयक पारित किया था जिसमें टिकटॉक की मूल कंपनी बाइटडांस को 19 जनवरी तक अपना हिस्सा बेचने की समय सीमा तय की गई थी और उसी दिन ऐप्पल और गूगल

ने टिकटॉक को डाउनलोड करने से रोक दिया था। हालांकि श्री ट्रम्प ने इस अवधि को पांच अप्रैल तक बढ़ा दिया है। उन्होंने चीनी कंपनी को अमेरिका में काम करने से प्रतिबंधित करने की धमकी भी दी है अगर वह उनकी शर्तों को पूरा करने में विफल रहता है।

सर्वोच्च अदालत ने 17 जनवरी को राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर अमेरिका में चीनी स्वामित्व वाले वीडियो-शेयरिंग ऐप पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून को सर्वसम्मति से बरकरार रखा।

## इजरायल ने अमेरिकी आयात पर सभी शुल्क रद्द किए

**तेल अवीव। इजरायल** सरकार ने अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर सभी सीमा शुल्क रद्द कर दिए हैं। इजरायल के प्रधानमंत्री कार्यालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

कार्यालय ने एक बयान में कहा, 'प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, वित्त मंत्री बेजेल स्मोट्रिच और अर्थव्यवस्था एवं उद्योग मंत्री नीर बरकत के निर्देश पर इजरायल ने अमेरिका, इजरायल के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार से आने वाले उत्पादों पर अब तक लगाए गए सभी सीमा शुल्क रद्द कर दिए हैं।'

बयान में कहा गया कि अमेरिका और इजरायल के बीच 1985 के मुक्त व्यापार समझौते के तहत अमेरिका से आयातित 99 प्रतिशत वस्तुओं को सीमा शुल्क से

छूट दी गई थी। सरकार का मौजूदा फैसला बहुत सीमित संख्या में उत्पादों, ज्यादातर आयातित खाद्य और कृषि उत्पादों से संबंधित होगा।

कार्यालय ने कहा, 'सीमा शुल्क में कमी से वास्तव में अमेरिका-इजरायल व्यापार समझौते का विस्तार होगा और द्विपक्षीय रणनीतिक संबंध मजबूत होंगे।

इस कटौती से अमेरिका से खाद्य और कृषि उत्पादों के आयात में संभावित विस्तार के साथ जीवन यापन की लागत में संभावित कमी के रूप में इजरायली उपभोक्ताओं को आश्वासन भी मिलेगा जिसे शून्य सीमा शुल्क दर से लाभ होगा।'

अमेरिका इजरायल का सबसे करीबी सहयोगी और उसका सबसे महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार है। इजरायल ने 2024 में अमेरिका को 17.3 अरब डॉलर मूल्य के सामान और 16.7 अरब डॉलर मूल्य की सेवाओं का निर्यात किया।

## पीएलए का संयुक्त सैन्याभ्यास कथित थाईवानी स्वतंत्रता की उत्तेजना की सजा है : चु फंगल्येन

**बीजिंग। चीनी** राज्य परिषद के थाईवान मामले कार्यालय की प्रवक्ता चु फंगल्येन ने मंगलवार को बताया कि थाईवान द्वीप के पास चीनी जन मुक्ति सेना के पूर्वी कमान का संयुक्त अभ्यास लाई तेछिंग प्रशासन की तथाकथित थाईवानी स्वतंत्रता उत्तेजना के प्रति एक दृढ़ सजा है, कथित थाईवानी स्वतंत्रता विभाजित शक्ति द्वारा जानबूझकर थाईवानी जलडमरूमध्य की शांति बर्बाद करने की गंभीर चेतावनी है और राष्ट्रीय प्रभुसत्ता तथा प्रादेशिक

अखंडता की जरूरी कार्रवाई है।

प्रवक्ता ने बताया कि तथाकथित थाईवानी स्वतंत्रता का मतलब युद्ध है। हमारा थाईवान सवाल को सुलझाने और राष्ट्रीय पुनःएकीकरण का संकल्प पत्थर जैसा ठोस है। हम किसी भी शक्ति को थाईवान को चीन से अलग करने की अनुमति कतई नहीं देंगे और किसी भी तरह की कथित थाईवानी स्वतंत्रता गतिविधि को कोई जगह नहीं देंगे।

प्रवक्ता ने बल दिया कि हमारी जवाबी कार्रवाई विभाजन गतिविधि को निशाना बनाती है, न कि व्यापक थाईवानी बंधुओं को।

बता दें कि 1 अप्रैल से चीनी जन मुक्ति सेना के पूर्वी कमान ने थाईवान द्वीप के पास संयुक्त सैन्याभ्यास शुरू किया।

## पीएम मोदी के थाईलैंड यात्रा के मायने यहां समझिए

**थाईलैंड**

**विदेश** मंत्रालय ने कहा कि बैंकॉक शिखर सम्मेलन में, बिम्सटेक नेता सदस्य देशों के बीच सहयोग में अधिक गति लाने के तरीकों और साधनों पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। इस वर्ष के शिखर सम्मेलन का विषय "सक्रिय, लचीला और खुला बिम्सटेक (प्रो-बिम्सटेक) है। बैंकॉक विजन 2030 से सहयोग के लिए एक स्पष्ट दिशा और लक्ष्य निर्धारित करने और इस क्षेत्र को शांति, स्थिरता और आर्थिक स्थिरता के क्षेत्र के रूप में बढ़ावा देने की उम्मीद है। यह विजन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए अनुकूलन पर सहयोग बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3-4 अप्रैल को बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए थाईलैंड की दो दिवसीय यात्रा पर होंगे। बिम्सटेक के आगामी सत्र के दौरान, क्षेत्रीय समूह बैंकॉक विजन 2030 को अपनाने और समुद्री सहयोग को मजबूत करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने की संभावना है।

## यमन के होदेइदाह शहर पर हुए अमेरिकी हवाई हमलों में तीन की मौत

**सना। हूती** मीडिया और निवासियों ने बताया कि यमन के पश्चिमी प्रांत होदेइदाह शहर पर अमेरिकी हवाई हमलों में कम से कम तीन लोग मारे गए।

स्थानीय लोगों ने बताया कि मंगलवार रात को हुए हमलों में मध्य होदेइदाह के मंसूरिया जिले में एक "जल परियोजना और उसकी इमारत" को निशाना बनाया गया।

जिले के निवासियों ने सिन्हुआ को बताया कि मलबे में दबे जीवित लोगों की तलाश जारी है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने हूती मीडिया के हवाले से बताया कि अमेरिकी सेना ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों हज्जाह और सादा में कई स्थानों पर हवाई हमले किए।

इससे पहले दिन में, हूती मीडिया ने उत्तरी यमन में कई स्थानों पर अमेरिकी हवाई हमलों की सूचना दी, जिसमें राजधानी सना के पश्चिम में बानी मातर जिले में माउंट नबी शुअयब और सादा शामिल हैं। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

ईरान समर्थित हूती, जो उत्तरी यमन के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखते हैं, 2014 से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार से लड़ रहे हैं।

अमेरिकी सेना ने 15 मार्च से उत्तरी यमन में हूती के कब्जे वाले क्षेत्रों पर हवाई हमले फिर से शुरू कर दिए हैं, ताकि इस समूह को अमेरिकी नौसेना और क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग मार्गों पर हमला करने से रोका जा सके।

पिछले सप्ताह, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि हूती विद्रोहियों के खिलाफ अमेरिकी हवाई हमले लंबे समय तक जारी रहेंगे।

इससे पहले मंगलवार को हूती समूह ने बताया कि अमेरिकी सेना ने पिछले कई घंटों में यमन के उत्तरी सना और सादा प्रांतों में उसके ठिकानों पर 22 हवाई हमले किए हैं।

हूती द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी द्वारा प्रसारित एक संक्षिप्त बयान के अनुसार, भोर में पांच हवाई हमले सना के दक्षिण-पूर्व में सानहान जिले के जरबन क्षेत्र को निशाना बनाकर किए गए, जबकि दो अन्य हमले राजधानी के पश्चिम में बानी मातर जिले में किए गए।

बयान में आगे बताया गया कि समूह के गढ़ सादा पर रात भर में 15 अमेरिकी हवाई हमले किए गए, लेकिन टारगेट किए गए क्षेत्रों का खुलासा नहीं किया गया।

## ब्लैक सी में रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाना पूरी दुनिया के लिए इतना अहम क्यों है?

**रूस**

**ब्लैक** सी में रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध रोकने के लिए अमेरिका लगातार प्रयास कर रहा है. रूस और यूक्रेन के बीच खाद्य पदार्थ निर्यात के लिए तो ये एक अहम रास्ता है ही, साथ ही पूरी दुनिया के लिए काफी महत्वपूर्ण है.

पिछले कुछ हफ्तों में अमेरिका ने रूस और यूक्रेन के साथ अलग-अलग बातचीत की ताकि ब्लैक सी में लड़ाई रोकी जा सके क्योंकि यह इलाका अनाज और अन्य खाद्य पदार्थों के व्यापार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अमेरिका का यह प्रयास दोनों देशों के बीच युद्ध खत्म करने की बड़ी योजना का हिस्सा है. इसके बाद व्हाइट हाउस ने बताया कि दोनों देशों ने युद्ध विराम पर सहमति जताई है और अब जहाजों को वहां से गुजरने की अनुमति दी जा सकती है. यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि यह युद्ध विराम तुरंत लागू हो जाएगा. लेकिन रूसी सरकार का कहना है कि यह तब लागू होगा जब कुछ शर्तें मान ली जाएंगी, जैसे कि अंतरराष्ट्रीय खाद्य व्यापार से जुड़ी रूसी कंपनियों और बैंकों पर से प्रतिबंध हटाने की शर्तें. ऐसा ही समझौता 2022-2023 के बीच हुआ था, जिसे तुर्की और संयुक्त राष्ट्र ने करवाया था. इससे यूक्रेन का अनाज बिना किसी रुकावट के निर्यात हो सकता था. लेकिन रूस ने इस समझौते को तोड़ दिया था क्योंकि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का कहना था कि पश्चिमी देशों ने उनकी कुछ शर्तें नहीं मानी, जिसमें रूसी कृषि बैंक को स्विफ्ट से फिर से जोड़ना भी शामिल था।

## आईएईए हमारे परमाणु स्थलों पर मंडरा रहे खतरों पर रुख करे स्पष्ट : ईरानी विदेश मंत्री

**तेहरान। ईरान** के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची ने संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था आईएईए (अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी) से अपने देश की 'शांतिपूर्ण परमाणु फैसिलिटी' पर मंडरा रहे खतरे को लेकर रुख स्पष्ट करने को कहा।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची ने यह बयान मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के महानिदेशक राफेल ग्रॉसी से फोन पर बातचीत के दौरान दिया।

उन्होंने यह टिप्पणी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रविवार को दी गई उस धमकी के संदर्भ में की, जिसमें ट्रंप ने कहा था कि अगर ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम पर वाशिंगटन के साथ समझौता नहीं करता, तो वह ईरान के परमाणु स्थलों पर बमबारी कर देंगे। अराघची ने एजेंसी के साथ ईरान की बातचीत और सहयोग की नीति के बारे में बताया और कहा कि जब तक ईरान के खिलाफ खतरे बने रहते हैं, उनका देश अपने परमाणु कार्यक्रम की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाएगा। उन्होंने ग्रॉसी को ईरान के शांतिपूर्ण परमाणु कार्यक्रम और कूटनीतिक चर्चा से जुड़ी ताजा घटनाओं के बारे में भी जानकारी दी। आईएईए प्रमुख ने कहा कि वह मौजूदा समस्याओं को हल करने के लिए एक अच्छे माहौल को बनाने के लिए दूसरे पक्षों से चर्चा करेंगे। ग्रॉसी ने ईरान यात्रा करने की इच्छा जताई, जिस पर ईरानी विदेश मंत्री ने

सहमति जताई। ट्रंप ने रविवार को एनबीसी न्यूज को दिए इंटरव्यू में कहा कि अगर ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत करने से इनकार करता है, तो वह उस पर " जबरदस्त सैन्य हमले" करेंगे। उन्होंने कहा, "अगर वे समझौता नहीं करते, तो ऐसी बमबारी होगी जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा होगा।" उन्होंने यह भी दावा किया कि अमेरिकी और ईरानी अधिकारी "बातचीत" कर रहे हैं, लेकिन इस बारे में कोई और जानकारी नहीं दी।

यह टिप्पणी उस पत्र के बाद आई है, जिसके बारे में ट्रंप ने कहा था कि उन्होंने मार्च के शुरू में संयुक्त अरब अमीरात के जरिए ईरानी नेताओं को एक पत्र भेजा था, जिसमें तेहरान की परमाणु गतिविधियों पर सीधे बातचीत का प्रस्ताव दिया गया था। इसके जवाब में तेहरान ने सीधे बातचीत के प्रस्ताव को ठुकरा दिया, लेकिन अप्रत्यक्ष बातचीत की संभावना को खुला रखा।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज 1/6C माधव कुंज कटरा प्रयागराज से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.: 9565333000
Email:- akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

## चीन में तेजी से आगे बढ़ रहा है दिमाग में चिप डालने का प्रोजेक्ट

**चीन**

**चीन** में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मानक लागू होंगेचीन ने उपग्रह संचार प्रौद्योगिकी परीक्षण-16 का सफल प्रक्षेपण किया

एक चीनी रिसर्च संस्थान और एक टेक कंपनी ने तीन मरीजों के दिमाग में एक ब्रेन चिप सफलतापूर्वक डाल दी है. साल के अंत तक 13 मरीजों में चिप डालने का लक्ष्य पूरा हो गया तो वो इलॉन मस्क की कंपनी न्यूरालिंक से आगे निकल जाएंगे.

बीजिंग में स्थित चाइनीज इंस्टीट्यूट फॉर ब्रेन रिसर्च (सीआईबीआर) और न्यूसाइबर न्यूरोटेक की इस चिप का नाम है बेनाओ नंबर वन. सीआईबीआर के निदेशक और न्यूसाइबर के मुख्य वैज्ञानिक लुओ मिनमिन ने बताया कि पिछले एक महीने में तीन मरीजों में यह चिप लगा दी गई है.

साल के अंत तक 10 और मरीजों में चिप लगाने का लक्ष्य है. सरकारी कंपनी न्यूसाइबर की महत्वाकांक्षा इससे भी बड़ा ह्यूमन ट्रायल करने की है. एक टेक सम्मेलन के इतर पत्रकारों से बात करते हुए मिनमिन ने कहा, "अगले साल नियामक स्वीकृति मिलने के बाद हम औपचारिक क्लीनिकल ट्रायल करेंगे जिसमें करीब 50 मरीज शामिल होंगे."

अमेरिकी कंपनियों से लोहा

मिनमिन ने फंडिंग या ट्रायल कब तक चलेगा, इसके बारे में जानकारी नहीं दी. लेकिन ह्यूमन ट्रायल्स की गति बढ़ा देने की वजह से मुमकिन है कि बेनाओ नंबर वन पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा मरीजों वाला ब्रेन चिप बन जाएगा. यह दुनिया की अग्रणी ब्रेन चिप कंपनियों से लोहा लेने

की चीन की दृढ़ता को रेखांकित करता है. इस समय इस क्षेत्र में दुनिया की सबसे अग्रणी कंपनी है अमेरिका की सिन्क्रॉन, जिसके निवेशकों में जेफ बेजोस और बिल गेट्स जैसे अरबपति शामिल हैं. सिन्क्रॉन 10 मरीजों में ब्रेन चिप डाल चुकी है, जिनमें से छह अमेरिका में हैं और चार ऑस्ट्रेलिया में.

ब्रेन इम्प्लांट का कमाल का असर

मस्क की न्यूरालिंक के पास इस समय तीन मरीज हैं. न्यूरालिंक ऐसे वायरलेस ब्रेन चिप पर काम कर रही है जिसे सिग्नल की गुणवत्ता को अधिकतम करने के लिए दिमाग के अंदर डाल दिया जाता है. जबकि उसकी प्रतिद्वंद्वी कंपनियां सेमि-इनवेसिव चिप पर काम कर रही हैं जिसे दिमाग की सतह पर रखा जाता है.

इसे ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआई) सिस्टम्स कहा जाता है. इससे सिग्नल की गुणवत्ता तो थोड़ी कम रहती है लेकिन इसमें दिमाग के टिश्यू को नुकसान पहुंचने और सर्जरी के बाद होने वाली अन्य परेशानियों का खतरा कम रहता है.

कैसे मदद कर रहा है चिप

मार्च में चीन की सरकारी मीडिया द्वारा जारी किए गए वीडियो में किसी तरह के लकवे से ग्रसित मरीजों को बेनाओ नंबर वन की मदद से एक रोबोटिक हाथ का नियंत्रण करते हुए दिखाया गया. इस हाथ से उन्होंने एक कप में पानी भरा और यहां तक कि अपने विचारों को एक कंप्यूटर स्क्रीन पर ट्रांसमिट भी किया.

मिनमिन ने यह भी बताया, "जब से बेनाओ नंबर वन के सफल ह्यूमन ट्रायल की खबर बाहर आई है, हमें मदद की अनगिनत अपीलें मिली हैं." उन्होंने बताया कि न्यूरालिंक की चिप से मिलता-जुलता बेनाओ नंबर टू का एक वायरलेस रूप विकसित किया जा रहा है और उन्हें उम्मीद है कि अगले 12 से 18 महीनों में उसका पहला ह्यूमन ट्रायल कर लिया जाएगा.

क्या है न्यूरालिंक का प्रोजेक्ट

सिन्क्रॉन ने हाल ही में चिप बनाने वाली कंपनी एनवीडिया के साथ एक साझेदारी की घोषणा की, जिसके तहत सिन्क्रॉन के बीसीआई सिस्टमों के साथ एनवीडिया के एआई प्लेटफॉर्म को जोड़ दिया जाएगा।